आपकी बात, निर्भीकता के साथ

प्रातःनागपुरी

आरएनआई पंजीयन सं. JHABIL/2023/86791

वर्ष : 01, अंक : 224 | रांची, शनिवार, 27 जुलाई 2024 (श्रावण कृष्ण 07, संवत 2081), पृष्ठ : 12, मूल्य : 3 रुपये | email: jharkhandwanitaudyog@gmail.com

संक्षिप्त खबरें

झारखंड विधानसभा की कार्यवाही सोमवार सुबह 11 बजे तक के लिए स्थगित

रांची। झारखंड विधानसभा में सदन की कार्यवाही स्थगित कर दी गयी है। अब अगली कार्यवाही सोमवार सुबह 11 बजे से चलेगी। इससे पहले सदन की कार्यवाही शोक प्रकाश के साथ शुरू हुआ। सदन में विधानसभा स्पीकर रवींद्रनाथ महतो, मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन, नेता प्रतिपक्ष अमर बाउरी समेत कई विधायकों ने शोक प्रकाश पेश किया।झारखंड में शुक्रवार से मॉनसून सत्र का आगाज हो गया। सदन की कार्यवाही शुरू होने के बाद विधानसभा में एटीआर पेश किया गया।

रांची में सेना भर्ती रैली आज से, 70 सीसीटीवी कैमरे से होगी निगरानी

रांची। झारखंड की राजधानी रांची के होटवार स्थित खेलगांव के स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में 27 जुलाई से 10 अगस्त तक सेना भर्ती रैली का आयोजन किया जाएगा। 70 से ज्यादा सीसीटीवी कैमरे की निगरानी में बहाली होगी। किसी दलाल के बहकावे में नहीं आएं। मेरिट पर बहाली होगी। यह सेना भर्ती रैली झारखंड के सभी जिलों के शॉर्ट लिस्ट किए गए अग्निवीर उम्मीदवार और जूनियर कमीशन अफसर (धार्मिक शिक्षक) के पुरुष उम्मीदवारों के लिए आयोजित की गयी है। ये बातें कर्नल विकास भोला ने शुक्रवार को खेलगांव में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में कहीं।

राहुल गांधी को मिला नया बंगला, प्रियंका देखने पहुंचीं

नई दिल्ली। लोकसभा में नेता विपक्ष बनने के बाद कांग्रेस नेता राहुल गांधी को अब नया बंगला दिया जा रहा है। विपक्ष के नेता को कैबिनेट मंत्री का दर्जा प्राप्त होता है। ऐसे में हाउस कमेटी ने कांग्रेस नेता को बंगला नंबर 5, सुनहरी बाग रोड की पेशकश की है। आज उनकी बहन प्रियंका गांधी ने उन्हें आवंटित किए जा रहे बंगला का दौरा किया। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी वर्तमान में अपनी मां सोनिया गांधी के साथ उनके 10 जनपथ वाले आवास में रह रहे हैं। 2004 में सांसद बनने के बाद से राहुल गांधी 12 तुगलक लेन स्थित अपने आवास पर रह रहे थे। पिछले साल मानहानि के एक मामले में दोषी ठहराये जाने के बाद उनकी सदस्यता चली गई थी। इसके बाद उन्हें अपना यह आवास खाली करना पड़ा था। हालांकि बाद में सदस्यता बहाल होने के बाद उन्हें बंगला वापस मिल गया था लेकिन वे उसमें रहने नहीं गए।

झारखंड में करवट ले रही सियासत, नीति आयोग की बैठक में आज हेमंत सोरेन के शामिल होने के बड़े मायने

शिव कुमार सिंह, रांची

अगले कुछ महीनों में होने वाले झारखंड विधानसभा चुनाव की आहट के बीच झारखंड में सियायत करवट लेती दिखाई दे रही है। राज्य के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ नई दिल्ली में हुई शिष्टाचार भेंट से शुरू हुई सियासी चर्चा एवं अटकलों के बीच शनिवार को नीति आयोग की बैठक में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के शामिल होने के भी गहरे राजनीतिक मायने निकाले जा रहे हैं। ऐसा इसलिए, क्योंकि इंडिया गठबंधन द्वारा नीति आयोग की बैठक के बहिष्कार का एलान किया गया है, तो दूसरी ओर इसी गठबंधन में शामिल हेमंत सोरेन बैठक में शामिल हो रहे हैं। इससे स्वाभाविक रूप से इंडिया गठबंधन की दिशा और दशा प्रभावित हो सकती है।

बड़े अफसरों को साथ लेकर दिल्ली गए सीएम : इसके बावजूद मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने शुक्रवार की दोपहर बाद अचानक नीति आयोग की बैठक में भाग लेने का फैसला किया। हेमंत सोरेन शुक्रवार की देर शाम नीति आयोग की बैठक में शामिल होने के लिए दिल्ली रवाना भी हो गए। मुख्यमंत्री के साथ झारखंड के मुख्य सचिव एल ख्यांगते और वित्त सचिव प्रशांत कुमार भी रवाना हुए।

दोपहर बाद खास कागज तैयार करने का दिया निर्देश : नीति आयोग की बैठक में भाग लेना तय हो जाने के बाद मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री के सामने झारखंड की मांग जोरदार तरीके से उठाने के लिए कुछ खास आंकड़ों को तैयार करने का निर्देश दिया। इसके बाद केंद्र की ओर से झारखंड के साथ हो रही नाइंसाफी को दिखाने वाले कुछ खास आंकड़ों की फेहरिस्त तैयार की गई। इनमें साफ तौर पर दिखाया गया कि केंद्र किस तरह से झारखंड की हकमारी कर रहा है।

शीर्ष अदालत के फैसले ने दी ताकत : नीति आयोग की बैठक के बहिष्कार या भागीदारी पर फैसले को लेकर अंतिम निर्णय तक पहुंचने में 25 जुलाई को आए सुप्रीम कोर्ट के एक फैसले ने ताकत दी। इस फैसले में साफ कहा गया है कि खनिजों पर राज्यों का केवल रॉयल्टी का ही हक नहीं है, बल्कि कर लगाने का भी अधिकार है।

हेमंत सोरेन सरकार खनिजों से मिलने वाले लाभ में झारखंड को उपेक्षित करने का आरोप केंद्र सरकार पर लगातार लगाती रही है। दो दिन बाद ही हो रही नीति आयोग की बैठक में झारखंड को जोरदार तरीके से यह मामला उठाने का मौका मिल रहा है। विधानसभा चुनाव की दहलीज पर इस मामले में काफी सियासी संभावना भी है।

केंद्रीय अनुदान 12 से घटकर नौ हजार करोड़ : हेमंत सोरेन के मुख्यमंत्री बनने के बाद भारत सरकार केंद्रीय योजनाओं के लिए मिलने वाले अनुदान में लगातार कमी कर रही है। 2019-20 के वित्तीय वर्ष में भारत सरकार की ओर से 12 हजार करोड़ केंद्रीय अनुदान के मद में दिया गया था। साल दर साल घटते हुए यह 2023-24 में यह 9100 करोड़ पर आ गया है। मुख्यमंत्री झारखंड के साथ हो रहे इस अन्याय को दूर करने की फरियाद भी करेंगे।

केंद्र के हाथ खींचने से संकट में झारखंड : मुख्यमंत्री कई योजनाओं से केंद्र के अचानक हाथ खींचने का सवाल भी प्रधानमंत्री की मौजूदगी में नीति आयोग के सामने उठाएंगे। केंद्र ने 2024-25 के बाद हर घर जल योजना का अनुदान बंद करने की घोषणा की है। इस कारण झारखंड पर सालाना 6500 करोड़ का अतिरिक्त बोझ बढ़ेगा। इससे झारखंड सरकार को दूसरी महत्वपूर्ण कल्याणकारी योजनाओं में कटौती करनी पड़ सकती है। आंगनबाड़ी की एक योजना में भी ऐसा ही हुआ है। शेष पेज 08 पर

नीति आयोग की बैठक में शामिल होंगी ममता बनर्जी

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी नीति आयोग की बैठक में शामिल होंगी। इस बैठक में शामिल होने के लिए वो दिल्ली भी रवाना हो गई हैं। उनके साथ दिल्ली तृणमूल के राष्ट्रीय महासचिव अभिषेक बनर्जी भी हैं। ममता बनर्जी के मुताबिक हेमंत सोरेन भी नीति आयोग की बैठक में भाग लेंगे। बजट में राज्यों के बीच भेदभाव का आरोप लगा कर नीति आयोग की बैठक का बहिष्कार करने की इंडिया गठबंधन की रणनीति में दरार पड़ गई है। नीति आयोग की बैठक को लेकर ममता बनर्जी ने कहा कि वो इस बैठक में शामिल होंगी और अपनी बात को रखेंगी। अगर उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया गया, तो वो आंदोलन करेंगी।

इंडिया ब्लॉक ने बैठक का किया बहिष्कार

नई दिल्ली। नीति आयोग की मीटिंग दिल्ली में शनिवार (27 जुलाई 2024) को होनी है। इस बैठक में कई बड़े नेता शामिल हो सकते हैं। वहीं, गैर-बीजेपी शासित राज्यों और विपक्षी दलों ने इस मीटिंग का बहिष्कार करने का फैसला किया है। तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी, हिमाचल प्रदेश के सुखविंदर सिंह सुक्खू, पंजाब के सीएम भगवंत मान, कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया समेत कई मुख्यमंत्री इस बैठक का हिस्सा नहीं बनेंगे।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में होगी बैठक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में 27 जुलाई को हो रही नीति आयोग की बैठक का इंडिया गठबंधन ने बहिष्कार का एलान कर रखा है। साफ घोषणा है कि इंडिया गठबंधन का कोई भी मुख्यमंत्री इस बैठक में शामिल नहीं होगा।

सीबीआई ने धनबाद से दो और को किया गिरफ्तार

नीट पेपर लीक केस

- तालाब से दर्जनभर मोबाइल किये गये बरामद

प्रातः नागपुरी प्रतिनिधि, धनबाद

नीट-यूजी पेपर लीक मामले में सीबीआई की कार्रवाई जारी है। शुक्रवार को पटना से आयी सीबीआई की टीम ने धनबाद से दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों की निशानदेही पर सीबीआई सुदामडीह थाना के नुनुडीह स्थित शहीद गुरुदास चटर्जी फुटबॉल मैदान के पास भाटबांध तालाब भी पहुंची। जहां से टीम को एक दर्जन से अधिक टूटे हुए मोबाइल सीमेंट की बोरी में बंधे हुए मिले। सीबीआई टीम में पटना और धनबाद के अधिकारी शामिल थे। वहीं सुदामडीह पुलिस सहयोग करने में लगी थी। शेष पेज 08 पर

नीट-यूजी का रिवाइज्ड रिजल्ट नेशनल टेस्टिंग एजेंसी ने किया जारी

नई दिल्ली। नेशनल टेस्टिंग एजेंसी के द्वारा नीट यूजी 2024 परीक्षा के रिवाइज्ड परिणाम जारी कर दिए गए हैं। नीट परीक्षा का आयोजन देशभर के विभिन्न परीक्षा केंद्रों पर 5 मई को आयोजित की गई थी, जिसमें तकरीबन 23 लाख से कैंडिडेट्स शामिल हुए थे। परीक्षा में उपस्थित हुए उम्मीदवार आधिकारिक वेबसाइट **exams.nta.ac.in/NEET** के माध्यम से अपने परिणाम को चेक कर सकते हैं। आपको बता दें कि, पहली बार इस परीक्षा का रिजल्ट 4 जून को घोषित किया गया था। जिसमें कुछ 67 टॉपर्स की लंबी लिस्ट सामने आई थी। हरियाणा के एक ही परीक्षा केंद्र से 6 टॉपर्स हुए थे, जिसके बाद अभ्यर्थियों के द्वारा पेपर लीक और परीक्षा में गड़बड़ी के आरोप लगाए गए थे और सुप्रीम कोर्ट में 40 याचिका दायर की गई थी। सुप्रीम कोर्ट में मामले की सुनवाई के बाद एनटीए को आदेश दिया कि, एग्जाम सिटी और सेंटर वाइस परिणाम घोषित किए जाएं। यह चौथी बार है, जब रिजल्ट जारी किया गया है। नीट यूजी परीक्षा का पहला रिजल्ट 4 जून को जारी किया गया था, दूसरा 30 जून को और तीसरा 20 जुलाई 2024 को जारी किया गया था।

रिवाइज्ड नीट परीक्षा परिणाम हुआ जारी : 23 जुलाई को हुए अंतिम फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि नीट की परीक्षा दुबारा आयोजित नहीं की जाएगी, पर कोर्ट ने एनटीए को आदेश दिया था कि नीट परीक्षा परिणाम दोबारा जारी किए जाएंगे। इसके बाद आज परीक्षा परिणाम दुबारा जारी कर दिया गया है। परीक्षा में शामिल हुए उम्मीदवार अपने परिणाम आधिकारिक वेबसाइट पर देख सकते हैं। उम्मीदवारों के परिणाम में फेरबदल भी देखने को मिला है। टॉपर्स की सूची में भी बदलाव देखने को मिला है। रिवाइज्ड अंतिम परिणाम के बाद लगभग 4 लाख से अधिक उम्मीदवारों की रैंक सूची में फेरबदल हुआ है, जिसमें 44 नीट यूजी टॉपर्स भी शामिल हैं, जिन्हें प्रश्न के लिए ग्रेस मार्क्स दिए गए थे।

मुख्यमंत्री हेमंत ने वृक्षारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का दोहराया संकल्प, कहा

नहीं चेते तो भुगतने होंगे गंभीर परिणाम

प्रातः नागपुरी संवाददाता, रांची

झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने झारखंड विधानसभा परिसर में आयोजित 75वें राज्यव्यापी वन महोत्सव में वृक्षारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संकल्प दोहराया। उन्होंने राज्यवासियों से कहा कि पर्यावरण संतुलन के लिए हम सभी कदम से कदम मिलाकर चलें। पर्यावरण सुरक्षित रहेगा, तभी हम सुरक्षित रहेंगे। वन महोत्सव पर्यावरण को सुरक्षित रखने की दिशा में एक बड़ा अभियान है। हम सभी ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाने का संकल्प लें।

ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाने का लें संकल्प : सीएम हेमंत सोरेन ने कहा कि 75 वर्षों से हम वन महोत्सव मनाते आ रहे हैं। आप इस बात से अंदाजा लगा सकते हैं कि शुरुआत के वन महोत्सव में जो पौधे लगे होंगे, वे वर्तमान समय में किस स्थिति में होंगे। वन महोत्सव सिर्फ एक कार्यक्रम नहीं है, बल्कि पर्यावरण को सुरक्षित करने का एक बड़ा अभियान है। ऐसे में हम सभी ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाने का संकल्प लें, ताकि पर्यावरण में जो असंतुलन पैदा हो रहा है, उसे नियंत्रित कर सकें। शेष पेज 08 पर

कैमरून से लौटे मजदूरों को सरकारी योजनाओं से किया जाएगा आच्छादित

- मुख्यमंत्री ने की संयुक्त श्रमायुक्त को नोडल पदाधिकारी को नामित करने की अनुशंसा

प्रातः नागपुरी संवाददाता, रांची

दक्षिण अफ्रिका के कैमरून से लौटे झारखंड के 27 प्रवासी मजदूरों को विभिन्न सरकारी योजनाओं से आच्छादित किया जाएगा। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने इस संदर्भ में निर्देश दिए हैं। योजनाओं से आच्छादित कार्यों को सफल रूप से पूर्ण कराने के लिए संयुक्त श्रमायुक्त राजेश प्रसाद (मोबाईल सं- 9431344109) को नोडल पदाधिकारी के रूप में नामित करने की अनुशंसा की है। शेष पेज 08 पर

जमीन माफिया कमलेश सिंह गिरफ्तार

प्रातः नागपुरी संवाददाता, रांची

- छठे समन पर पूछताछ के लिए हुआ था पेश
- आज पीएमएलए की विशेष अदालत में होगी पेशी

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने जमीन माफिया कमलेश सिंह को लंबी पूछताछ के बाद शुक्रवार को गिरफ्तार कर लिया। उसे शनिवार को पीएमएलए के विशेष न्यायाधीश की अदालत में पेश किया जाएगा। ईडी की ओर से उसे रिमांड पर लेने के लिए आवेदन देने की संभावना है। ईडी ने समन भेज कर उसे 26 जुलाई को पूछताछ के लिए बुलाया था।

छठे समन पर पूछताछ के लिए हुआ हाजिर : जमीन माफिया कमलेश सिंह शुक्रवार को छठे समन पर ईडी के क्षेत्रीय कार्यालय में पूछताछ के लिए हाजिर हुआ। इससे पहले वह ईडी के पांच समन को नजरअंदाज कर चुका है। वह शुक्रवार की सुबह करीब 10 बजे ईडी कार्यालय पहुंचा। लंबी पूछताछ के बाद देर शाम ईडी ने उसे गिरफ्तार कर लिया। उसके खिलाफ रांची के कांके थाने में दर्ज दो प्राथमिकी के आधार पर इसीआइआर ने इसीआइआर दर्ज की है।

लंबी पूछताछ के बाद ईडी की गिरफ्त में कमलेश: केंद्रीय जांच एजेंसी ईडी जमीन माफिया कमलेश सिंह को लगातार समन भेज रही थी, लेकिन वह उसे नजरअंदाज कर रहा था। पिछले पांच समन को उसने नजरअंदाज कर दिया और पूछताछ के लिए ईडी के क्षेत्रीय कार्यालय में हाजिर नहीं हुआ। आखिरकार ईडी ने छठा समन जारी करते हुए उसे 26 जुलाई को पूछताछ के लिए पेश होने को कहा था। शुक्रवार को लंबी पूछताछ के बाद ईडी के अधिकारियों ने उसे गिरफ्तार कर लिया। शेष पेज 08 पर

दुमका बीडीओ शिवाजी भगत को कोर्ट ने सुनायी चार साल की सजा

- 1.20 लाख रुपये का जुर्माना भी लगाया गया

प्रातः नागपुरी प्रतिनिधि, दुमका

दुमका जिले के रानीश्वर प्रखंड के बीडीओ शिवाजी भगत को अदालत ने चार साल की सजा सुनाई है। इसके साथ ही एक लाख 20 हजार रुपये का जुर्माना लगाया है। जुर्माना की राशि अदा नहीं करने पर 9 महीने अतिरिक्त सजा काटनी होगी। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए उन्हें सजा सुनायी गयी। 30 हजार रुपये रिश्वत लेने का दोषी पाते हुए दुमका की अदालत ने इन्हें सजा सुनायी है।

14 साल पुराने मामले में सुनायी गयी सजा : द्वितीय जिला एवं अपर सत्र न्यायाधीश सह निगरानी के विशेष न्यायाधीश प्रकाश झा की अदालत ने जांच प्रतिवेदन देने के एवज में तीस हजार रुपये रिश्वत लेते रंगेहाथ पकड़े जाने के 14 साल पुराने एक मामले में बीडीओ शिवाजी भगत को सजा सुनायी है। शेष पेज 08 पर

भारत को जल्द मिलेगी दुनिया की सबसे ऊंची सुरंग

- पीएम ने कारगिल विजय दिवस की 25वीं वर्षगांठ पर निर्माण प्रक्रिया की शुरुआत करते हुए किया पहला विस्फोट

एजेंसियां, नई दिल्ली

भारत को जल्द ही दुनिया का सबसे ऊंचा मोटर वाहन चलाने योग्य सुरंग मिलने जा रहा है। यह सीमा सड़क संगठन (बीआरओ) की उपलब्धियों की सूची में एक और उपलब्धि होगी। देश के सीमावर्ती क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे के विकास के लिए जाने जाने वाले इस संगठन ने 26 जुलाई से हिमाचल प्रदेश के मनाली के पास स्थित शिंकु ला दर्रे पर सुरंग का निर्माण शुरू कर दिया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कारगिल विजय दिवस की 25वीं वर्षगांठ की पूर्व संध्या पर निर्माण प्रक्रिया की शुरुआत करते हुए पहला विस्फोट किया।

यह सुरंग 15,800 फीट की ऊंचाई पर बनाई जाएगी और यह हिमाचल प्रदेश के निम्मु, पदम और दरचा के रास्ते मनाली और लद्दाख के केंद्र शासित प्रदेश की राजधानी लेह को जोड़ेगी। शिंकु ला दर्रे की ऊंचाई 16,615 फीट है। एक बार पूरा होने पर, शिंकु ला सुरंग चीन में स्थित मिला सुरंग को पीछे छोड़ते हुए दुनिया की सबसे ऊंची मोटर योग्य सुरंग बन जाएगी। मिला सुरंग 15,590 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। शिंकु ला सुरंग कई उच्च ऊंचाई वाली सुरंगों का हिस्सा होगी। जो भारत को आने वाले वर्षों में मिलने की उम्मीद है। शेष पेज 08 पर

राष्ट्र के लिए किए गए बलिदान अमर : मोदी

करगिल। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को पाकिस्तान को चेतावनी दी कि उसकी नापाक साजिशें सफल नहीं होंगी, क्योंकि हमारे सैनिक पूरी ताकत से आतंकवाद को कुचलने का ऑपरेशन चला रहे हैं और दुश्मन को मुंहतोड़ जवाब देंगे। उन्होंने कहा कि कारगिल युद्ध में जीत के 25 साल बाद आज लद्दाख की राजसी भूमि एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। कारगिल विजय दिवस हमें याद दिलाता है कि हमारे देश के लिए किए गए बलिदान शाश्वत हैं और हमेशा याद किए जाते हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने 25वें कारगिल विजय दिवस के अवसर पर लद्दाख के द्रास में कारगिल युद्ध स्मारक पर पुष्पांजलि अर्पित की। इसके बाद लद्दाख के द्रास में कारगिल विजय दिवस श्रद्धांजलि समारोह में प्रधानमंत्री ने कहा कि कारगिल विजय दिवस हमें बताता है कि राष्ट्र के लिए किए गए बलिदान अमर हैं। जैसे-जैसे समय बीतता है, दिन महीनों में बदल जाते हैं, महीने सालों में और साल सदियों में बदल जाते हैं, राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वालों के नाम हमारी सामूहिक स्मृति में हमेशा के लिए अमर हो जाते हैं। शेष पेज 08 पर

- पाकिस्तान को दी चेतावनी : नापाक साजिशें नहीं होंगी सफल, पूरी ताकत से कुचलेंगे आतंकवाद, दुश्मन को देंगे मुंहतोड़ जवाब
- प्रधानमंत्री ने द्रास में कारगिल युद्ध स्मारक पर पुष्पांजलि अर्पित की

झारखंड के नए डीजीपी अनुराग गुप्ता ने संभाला पदभार, बोले

ड्रग्स व साइबर क्राइम के खिलाफ अपनाएंगे कड़ा रुख

प्रातः नागपुरी संवाददाता, रांची

झारखंड के नए डीजीपी अनुराग गुप्ता ने शुक्रवार को रांची में झारखंड पुलिस मुख्यालय में पदभार ग्रहण किया। अनुराग गुप्ता का स्वागत पूर्व डीजीपी अजय कुमार सिंह ने किया। इस दौरान अजय कुमार ने गुलदस्ता देकर कार्यालय में स्वागत किया। शुक्रवार को गृह और कारा विभाग ने अधिसूचना जारी कर जानकारी दी। अनुराग गुप्ता इससे पहले डीजी सीआईडी थे, लेकिन उन्हें प्रमोट कर डीजीपी बनाया गया। अनुराग गुप्ता फिलहाल डीजी सीआईडी का कार्य भी संभालेंगे। वहीं पूर्व डीजीपी अजय कुमार को झारखंड पुलिस हाउसिंग कॉरपोरेशन का अध्यक्ष बनाया गया है।

नए डीजीपी ने गिनाई अपनी प्राथमिकता : पदभार ग्रहण करने के बाद नव नियुक्त डीजीपी अनुराग गुप्ता ने अपनी प्राथमिकताओं के बारे में बात करते हुए बताया कि संगठित अपराध, साइबर क्राइम, महिलाओं के प्रति अपराध, ड्रग्स के खिलाफ कड़ा रुख अपनाना लक्ष्य है। उन्होंने कहा कि अपराध, विधि व्यवस्था, आम जनता में पुलिस के प्रति विश्वास पैदा करना उनका लक्ष्य है। उन्होंने कहा कि पुलिस की आंतरिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाना, नए पुलिस कर्मियों की भर्ती और पुलिस का प्रमोशन शामिल है। अनुराग गुप्ता ने पुलिस की स्पेशल ट्रेनिंग पर जोर दिया।

थानों में पुलिस के बुरे बर्ताव पर खैर नहीं : डीजीपी अनुराग गुप्ता ने बताया कि पुलिस थानों में पुलिस का आम लोगों के साथ अच्छा बर्ताव, बुजुर्गों और महिलाओं के साथ संवेदन शीलता दिखाना उनकी उच्च प्राथमिकता में शामिल है।

संक्षिप्त

सड़क दुर्घटना में एक की मौके मौत, दूसरा घायल

सोनाहातू। सोनाहातू थाना क्षेत्र की जामुदाग सड़क के पेट्रोल पंप के समीप अज्ञात वाहन की चपेट में आकर मोटरसाइकिल सवार दो युवक गिर पड़े। मोटरसाइकिल से गिरने के बाद दोनों की हालत गंभीर हो गई। कुछ देर बाद एक की मौत तत्काल घटनास्थल पर ही हो गयी। मृतक की पहचान सोनाहातू निवासी 15 वर्षीय मनीष मुंडा तथा 14 वर्षीय अभिषेक भोक्ता के रूप में हुआ है। घायल को बेहतर इलाज के लिए रिम्स भेज दिया गया है। घटना शुक्रवार रात 8 बजे के आसपास बताई जा रही है। अज्ञात वाहन की पड़ताल की जा रही है।

कारगिल विजय दिवस पर शहीदों को दी गई श्रद्धांजलि

खूंटी। श्योर सक्सेस कोचिंग सेंटर मुरहू में शुक्रवार को कारगिल विजय दिवस पर शहीदों को दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी गई। संस्थान के शिक्षक सह निदेशक सकलदीप भगत ने कहा कि आज के दिन भारत की सेना ने अदम्य साहस का परिचय देते हुए पाकिस्तान को घुटने टेकने के लिए मजबूर कर दिया था।देश के उन बलिदानियों को याद करना एक नई प्रेरणा देता है। वीर जवानों के त्याग एवं बलिदान का देश सदा ऋणी रहेगा। कारगिल युद्ध को हुए 25 साल हो चुके है। इस साल हम विजय दिवस की 25वीं वर्षगांठ मना रहे है। मौके पर शिक्षिका सावित्री के साथ-साथ छात्र-छात्राएं मौजूद थे।

डीएवी स्कूल में दो दिवसीय खेल प्रतियोगिता शुरू

खूटी। स्थानीय डीएवी पब्लिक स्कूल खूंटी में आयोजित दो दिवसीय खेल प्रतियोगिता का शुभारंभ शुक्रवार को हुआ। विद्यालय परिसर में आयोजित उद्घाटन कार्यक्रम में विद्यालय के प्रधानाचार्य मनोजेश्वर कुमार के द्वारा क्रीडा ध्वजारोहण और मशाल प्रज्वलित कर प्रतियोगिता का विधिवत शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर पर्यवेक्षक के रूप में टीसीआई डीएवी, पब्लिक स्कूल गोविंदपुर के प्रधानाचार्य विवेकानंद घोष उपस्थित थे। प्रतियोगिता अंतर्गत हॉकी तीरंदाजी एवं फुटबॉल मैच का आयोजन होगा। नेशनल स्पोर्ट्स में कुल सात विद्यालय की टीमों ने भाग लिया है, जिसमें डीएवी हेहल, बरियातु, पुंदाग, गोविंदपुर, खलारी, खूंटी तथा सिल्ली शामिल हैं।

खूंटी शहर में तेजी से पांव पसार रहा डेंगू, मरीजों की संख्या बढ़कर 85 हुई, 16 इलाजरत

संवाददाता

खूंटी। शहरी क्षेत्र में डेंगू तेजी से पांव पसार रहा है। आये दिन डेंगू पीड़ित मरीज खूंटी सदर अस्पताल और निजी अस्पतालों में भर्ती हो रहे हैं। एक जुलाई से सदर अस्पताल में अब तक 67 डेंगू पीड़ित मरीज इलाज कराने पहुंचे हैं। इनमें दो मरीजों को रिम्स रेफर किया गया है। एक नाबालिग छात्रा की रिम्स में इलाज के दौरान मौत हो गई है। अधिकतर मरीज इलाज के बाद स्वस्थ हो गए हैं। वर्तमान में 16 मरीजों का सदर अस्पताल में इलाज चल रहा है। इससे कहीं अधिक मरीज निजी अस्पतालों में इलाज

करा रहे हैं। सदर अस्पताल में डेंगू मरीजों के उपचार के लिए अलग से आइसोलेशन वार्ड नहीं बनाया गया है। सामान्य मरीजों के साथ ही वार्ड में डेंगू संक्रमित मरीजों को भी रखा जा रहा है। सदर अस्पताल के उपाधीक्षक डॉ आनंद किशोर उरांव ने बताया कि अस्पताल में जगह की कमी के कारण अलग से वार्ड नहीं बनाया गया है। उन्होंने बताया कि डेंगू पीड़ित मरीजों के लिए मच्छरदानी की व्यवस्था की गई है। डेंगू मरीज 24 घंटे मच्छरदानी के अंदर रहते हैं।

डेगू का सबसे अधिक प्रभाव शहर के कर्रा रोड, मोहना टोली, आजाद रोड, पाशा कॉलोनी आदि मोहल्ले में देखा जा रहा है। अब तक चिह्नित डेंगू मरीजों में अधिकतर इन्हीं इलाकों के बताए जा रहे हैं। इस स्थिति में विभाग द्वारा गुरुवार और शुक्रवार को शिविर लगाकर संभावित मरीजों की जांच की गई, तो मरीजों की संख्या बढ़कर 85 हो गई है। बहरहाल, शहर में डेंगू के बढ़ते प्रभाव के बाद भी प्रशासन व स्वास्थ्य विभाग की सक्रियता उतनी नजर नहीं आ रही, जितनी होनी चाहिए। नगर पंचायत द्वारा शहरी क्षेत्र में की जा रही साफ-सफाई को भी लोग महज खानापूर्ति बता रहे हैं।

जिन क्षेत्रों में डेंगू वहां गंदगी का अंबार: सीएस

सिविल सर्जन डॉ नागेश्वर मांझी ने कहा कि खूंटी शहरी क्षेत्र में डेंगू का प्रभाव अधिक देखा जा रहा है। जिन क्षेत्रों में डेंगू पांव पसार रहा है, उन इलाकों में गंदगी का अंबार है। उन्होंने कहा कि बरसात शुरू होते ही डेंगू की संभावना बढ़ जाती है। इसे लेकर स्वास्थ्य विभाग पूरी तरह से अलर्ट मोड पर है। उन्होंने डेंगू के प्रति लोगों को जागरूक होने की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि डेंगू और चिकनगुनिया के मच्छर अपेक्षाकृत साफ पानी के बर्तन, कूलर, टूटे हुए बर्तन, प्लास्टिक के बोतल, छत पर जल जमाव, पानी की खुली टंकी, टायर, टूटे बर्तन आदि जगहों पर अंडे देती है। मच्छरों के इन प्रजनन स्थलों को नष्ट करना अति आवश्यक है।

जानें डेंगू के लक्षण

डेंगू के प्रमुख लक्षणों में तेज बुखार का आना, पेट दर्द, थकान, ज्यादा सांस लेने में मुश्किल, ज्यादा सूजन, त्वचा पर चकते और लाल दाने, खून की गंग्रेन, अचानक तेज बुखार, गंभीर सिर दर्द, आंखों के पीछे दर्द, गंभीर जोड़ो और मांसपेशियों में दर्द, जी मिचलाना, उल्टी आना व दस्त होना शामिल है।

सिल्ली : शिक्षिका ने बंद कमरे में फांसी लगाकर की खुदकुशी

संवाददाता

सिल्ली। सिल्ली स्थित अरुणुमा मॉडर्न पालिक स्कूल की 25 वर्षीय शिक्षिका वैनेशा मेरी हेमरोम ने शुक्रवार को फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। घटना बीते रात की है। जानकारी के मुताबिक शिक्षिक स्कूल द्वारा दिए गए सिल्ली के छाताटांड़ स्थित एक घर के कमरे में रह रही थी। इसी के ठीक बगल के कमरे में स्कूल की प्रिंसिपल ममता सिंह भी रहती हैं। स्कूल के संयुक्त सचिव राधेश्याम साहू ने बताया कि, रोज की तरह जब स्कूल जाने का समय हुआ, तो बगल में रह रही ममता सिंह ने कमरे के बाहर से आवाज लगायी। कोई जवाब नहीं मिला। दरवाजा-खिड़की भी अंदर से बंद थे। किसी तरह खिड़की थोड़ा सा खोल कर अंदर देखा, तो उनकी लाश साड़ी के फंदे के सहारे झूल रही थी। सूचना पाकर पहुंची सिल्ली पुलिस ने दरवाजा खोल कर शव का पंचनामा करके पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। स्कूल से बताया गया कि, वह मूलतः चाईबासा की रहने वाली थीं, वह रांची के लोवाडीह में अपने परिवार के सदस्यों के साथ रहती थीं। शुरू में लोवाडीह से ही स्कूल आती थीं। ड्यूटी देर हो जाने के कारण स्कूल की ओर से उन्हें रहने के लिए कमरा दिया गया था। जांच में जुटी पुलिस पुलिस आत्महत्या के कारण का पता लगाने की कोशिश में जुटी है। पुलिस स्कूल जाकर भी पूछताछ कर रही है। शिक्षिका वैनेशा मेरी हेमरोम के निधन के बाद शुक्रवार को विद्यालय में शोक सभा का आयोजन किया गया। इस मौके पर 2 मिनट का मौन रखकर मृत आत्मा की शांति के लिए भगवान से प्रार्थना की गई। स्कूल में शिक्षकों के साथ बच्चों की आंखें भी नम हो गईं। शोकसभा के बाद विद्यालय को बंद कर दिया गया। प्राचार्य राधेश्याम साहू ने बताया कि विद्यालय में 18 से अधिक शिक्षक शिक्षिका कार्यरत हैं, परंतु शिक्षिका वैनेशा मेरी हेमरोम काफी मिलनसार थीं। किस कारण उन्होंने इस तरह का कदम उठाया, यह समझ से परे है।

कर्रा क्षेत्र में थम नहीं रहा गजराजों का आतंक

खूंटी। जिले में जंगली हाथियों का आतंक थमने का नाम नहीं ले रहा है। हर रात जंगली हाथियों द्वारा कहीं न कहीं फसलों को बर्बाद किया जा रहा और घरों में तोड़फोड़ की जा रही है। इसके कारण ग्रामीण इलाकों में भय का माहौल है। कर्रा प्रखंड के जरियागढ़ थाना के मुरेचकेल गांव के पास खेतों में लगे धान के बिचड़ों को खाकर और रौंदकर बर्बाद कर दिया। गजराजों ने गुरुवार की रात कर्रा प्रखंड के जगजराजों ने गुरुवार की रात वीरेंद्र सिंह के खेत में लगे धान के बिचड़ों को बर्बाद कर दिया। वीरेंद्र सिंह ने कहा कि उन्होंने लगभग 40 किलो धान का बिचडे खेतों में डाले थे, जिसे हाथियों ने चट कर दिया। उन्होंने कहा कि अब उनके पास इतनी पूंजी नहीं है कि वे फिर से धान बीज खरीदकर खेती करें। उन्हें इस बात की चिंता सता रही है कि सालभर उनका गुजारा कैसे चलेगा। मामले की जानकारी मिलने पर भाजपा युवा मोर्चा के गोंविंदपुर मंडल अध्यक्ष विनय गुप्ता गांव पहुंचे और फोन से मामले की जानकारी विधायक कोचे मुंडा को दी। विधायक ने वन विभाग के अधिकारियों को फोन से मामले की जानकारी दी और पीड़ित किसान को मुआवजे देने का निर्देश दिया।

चौकीदार बहाली लिखित परीक्षा को लेकर उपायुक्त ने की बैठक

पूरी पारदर्शिता के साथ परीक्षा पूर्ण करने को लेकर की गई हैं विशेष तैयारियां

संवाददाता

रामगढ़ । रामगढ़ जिला अंतर्गत चौकीदार बहाली के तहत 28 जुलाई 2024 को अपराह्न 01:00 बजे से 2:00 के बीच होने वाली लिखित परीक्षा को लेकर शुक्रवार को उपायुक्त रामगढ़ चंदन कुमार ने पुलिस अधीक्षक अजय कुमार की उपस्थिति में केंद्र अधीक्षकों, पर्यवेक्षकों सह स्टैटिक दंडाधिकारियों, गस्ती एवं उड़न दस्ता दलों के सात समाहरणालय सभाकक्ष में बैठक की।

बैठक के दौरान उपायुक्त ने परीक्षा कार्य में लगे सभी केंद्र अधीक्षकों सहित अन्य अधिकारियों को पूरी पारदर्शिता के साथ परीक्षा पूर्ण करने का निर्देश दिया। मौके पर उपायुक्त ने सभी से कहां की जिला स्तरीय चौकीदार बहाली लिखित परीक्षा को पूरी पारदर्शिता के साथ संपन्न कराने के उद्देश्य से लिखित परीक्षा के दिन ही प्रातः 6:00 बजे से जिला प्रशासन कार्य में लग जाएगा वही तमाम सुरक्षा व्यवस्थाओं के बीच जिला समाहरणालय सभाकक्ष में ही प्रश्न पुस्तिका का निर्माण एवं मुद्रण किया जाएगा। अपराह्न 1:00 बजे से अपराह्न 2:00 बजे तक ओएमआर शीट के माध्यम से जिले के अलग-अलग आठ केन्द्रों में होने वाली लिखित परीक्षा की जांच 28 जुलाई को ही समाहरणालय सभाकक्ष में की जानी है वहीं लिखित परीक्षा का परिणाम भी 28 जुलाई को घोषित किया जाना प्रस्तावित है। मौके पर उपायुक्त ने सभी को चौकीदार बहाली परीक्षा की पूरी रूपरेखा एवं निर्धारित नियमों की विस्तार से जानकारी दी। उपायुक्त ने सभी से कहां की परीक्षा के सफल आयोजन में आप सभी का योगदान बेहद महत्वपूर्ण है इसलिए यह बहुत जरूरी है की परीक्षा के पूर्व आप अपनी सभी तरह की दुविधाओं को दूर कर ले। उन्होंने सभी को आपसी समन्वय एवं किसी भी आकस्मिक स्थिति में अपने वरीय पदाधिकारियों के साथ संपर्क करने सहित अन्य आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

गौरतलब है की 28 जुलाई को लिखित परीक्षा के लिए अभ्यर्थी 23 जुलाई से जिला समाहरणालय आकर प्रवेश पत्र प्राप्त कर रहे हैं । प्रवेश पत्र प्राप्त करने हेतु अभ्यर्थियों को अपने साथ पहचान पत्र एवं दो पासपोर्ट साइज फोटोग्राफ लाना है। जो अभ्यर्थी जिला समाहरणालय आकर प्रवेश पत्र प्राप्त करने में असमर्थ होंगे उन्हें उनके परीक्षा केंद्र पर भी प्रवेश पत्र उपलब्ध कराया जाएगा। कोई भी अभ्यर्थी वेबसाइट पर जाकर अपने परीक्षा केंद्र की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

समय सीमा के अंदर निष्पादित करें दाखिल-खारिज के मामले: डीसी

संवाददाता

खूंटी। उपायुक्त लोकेश मिश्रा ने शुक्रवार को समाहरणालय स्थित सभागार में राजस्व संग्रहण एवं राजस्व विभाग से संबंधित कार्यों की समीक्षा की। बैठक में मुख्य रूप से जिले में होने वाले राजस्व संग्रहण समेत दाखिल खारिज, भूमि सीमांकन, सर्टिफिकेट, लैंड डिमार्केशन, ई रेवेन्यू कोर्ट, सक्सेशन म्यूटेशन, पार्टीशन म्यूटेशन, सर्टिफिकेट केस समेत अन्य कार्यों की समीक्षा की गई।

बैठक में अपर समाहर्ता द्वारा विभिन्न अंचलों से प्राप्त अद्यतन प्रतिवेदन उपायुक्त के समक्ष प्रस्तुत किया गया। बैठक में उपायुक्त ने बिंदुवार रेवेन्यू, परिवहन, नगर पंचायत समेत अन्य माध्यमों से होने वाले राजस्व संग्रहण की समीक्षा की और संबंधित विभागों को नियमित रूप से टारगेट के अनुरूप राजस्व संग्रहण सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। दाखिल खारिज से संबंधित मामले की समीक्षा करते हुए उपायुक्त ने वैसे अंचल जहां कर्मचारी द्वारा काफी समय से अपने लॉगिन आईडी में दाखिल खारिज के मामलों को लंबित रखा गया है, वैसे कर्मचारी को चिह्नित कर विभागीय कार्यवाही करने का निर्देश दिया। उपायुक्त ने कहा कि प्राथमिकता के आधार पर निर्धारित समय सीमा के अंदर दाखिल खारिज के मामलों का निष्पादन सुनिश्चित करें। सक्सेसन म्यूटेशन एवं पार्टीशन म्यूटेशन की संख्या कम रहने को लेकर उपायुक्त ने सभी अंचल अधिकारियों को कार्यशाला का आयोजन कर आमजनों को इस संबंध में विस्तृत जानकारी मुहैया कराने का निर्देश दिया। बैठक में अपर समाहर्ता, डीसीएलआर, जिला परिवहन पदाधिकारी, कार्यपालक पदाधिकारी नगर पंचायत, कार्यपालक दंडाधिकारी, सभी अंचल अधिकारी समेत अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे।

कांग्रेस ने सोनाहातू प्रखंड मुख्यालय प्रांगण में लगाया जन सहायता शिविर

राहे। राहे प्रखंड कांग्रेस की ओर से शुक्रवार को सोनाहातू प्रखंड मुख्यालय परिसर में जन सहायता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में कांग्रेसी कार्यकताओं ने सरकार ओर से जनहित में चलायी जा रही सभी प्रमुख योजनाओं के बारे लोगों को जानकारी दी। शिविर में प्रखंड के विभिन्न गांवों से आए लोगों ने अलग-अलग योजनाओं से संबंधित आवेदन दिए। शिविर से मिली जानकारी के मुताबिक सभी योजनाओं के लिए कुल 3262 आवेदन आए। हालांकि ऑन द स्पॉट किसी भी योजना या शिकायत का निष्पादन नहीं हुआ। कार्यकताओं ने ग्रामीणों को सभी आवेदनों को प्रखंड के संबंधित विभागों से उनके काम जल्दी करवाने का आश्वासन दिया। शिविर में जिला कांग्रेस कमेटी के डॉ. राकेश किरण महतो, जगदीश महतो, एडवोकेट विनोद सिंह, राहे प्रखंड अध्यक्ष राजकिशोर मुंडा, सिल्ली प्रखंड कांग्रेस अध्यक्ष कार्तिक चन्द्र महतो, नागेश्वर महतो, अल्पसंख्यक जिला सचिव मंजुर मोमिन, विकास रजक, राहे प्रखंड कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष त्रिलोचन महतो, ज्ञान अहीर, युवा अध्यक्ष कृष्ण अहीर, उपेन्द्र गोंझू, ललित मुंडा, राजेश्वर सिंह, मनोज यादव, त्रिलोक सिंह, नित्यानंद महतो, रमजान अंसारी, महावीर महतो आदि मौजूद थे।

खूंटी में दत्तोपंत ठेंगड़ी रोजगार मेले में उमड़ी युवक-युवतियों की भीड़

खूंटी। श्रम, नियोजन, प्रशिक्षण एवं कौशल विकास विभाग के सौजन्य से शुक्रवार को जिला नियोजनालय खूंटी द्वारा जिला नियोजनालय परिसर में दत्तोपंत ठेंगड़ी रोजगार मेला का आयोजन किया गया।

रोजगार मेला का शुभारंभ डीसीएलआर अरविंद ओझा समेत जिला नियोजन पदाधिकारी, डीपीएम जेएसएलपीएस, प्रखंड विकास पदाधिकारी, अंचल अधिकारी द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस

दौरान पदाधिकारियों ने रोजगार मेले के उद्देश्यों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार एवं जिला प्रशासन का प्रयास है कि जिले के शिक्षित बेरोजगार युवक-युवतियों को उनकी शैक्षणिक योग्यता के अनुसार रोजगार मुहैया कराया जाए। इसी दिशा में रोजगार मेला का आयोजन किया गया है। जिले के शिक्षित बेरोजगार युवक-युवतियों से अपील की गई कि वे रोजगार मेला में अपना रजिस्ट्रेशन जरूर कराएं और अपनी शैक्षणिक योग्यता एवं अपनी दक्षताओं के अनुसार रोजगार के संबंध में इच्छा अनुसार आवेदन दें और रोजगार प्राप्त करें। सभी से रोजगार मेला जैसे सुनहरे अवसर का अधिक से अधिक लाभ उठाने को कहा गया। रोजगार मेला में ऑन द स्पॉट कुछ युवक युवतियों को मंच पर आमंत्रित कर ऑफर लेटर का भी सौंपा गया। प्रोफेशनल हेल्थ केयर द्वारा चयनित लाली धान, मंजू सुहासी, गंगिया सांगा समेत अन्य को ऑफर लेटर दिया गया। दत्तोपंत ठेंगड़ी रोजगार मेला में रजिस्ट्रेशन काउंटर समेत 20 से अधिक कंपनियों ने अपने स्टॉल लगाए थे।कार्यक्रम में मुख्य रूप से डीसीएलआर अरविंद ओझा समेत जिला नियोजन पदाधिकारी, डीपीएम जेएसएलपीएस, सभी अंचल अधिकारी एवं काफी संख्या में स्थानीय युवक युवतियां उपस्थित थे।

मोटरसाइकिल से गिरकर युवक घायल

बुढ़मू। रातू से राय अपने घर जाने के दौरान राय निवासी अनूप कुमार (32 वर्ष) ठाकुरगांव के पास मोटरसाइकिल से गिरकर घायल हो गया। जानकारी के अनुसार अनूप रातू से अपने घर लौट रहा था। इसी दौरान ठाकुरगांव के पास मोटरसाइकिल अनियंत्रित हो गयी और अनूप गिरकर घायल हो गया। 108 के माध्यम से अनूप को सीएचसी बुढ़मू लाया गया। जहां उसका इलाज चल रहा है। अनूप के सिर में चोट लगी है।

वशिष्ठ राज ने रक्तदान कर मानवता का दिया परिचय

रामगढ़ । दुलमी प्रखंड बीस सूत्री अध्यक्ष सुधीर मंगलेश ने वशिष्ठ राज से सम्पर्क कर ब्लड बैंक रांची जाकर उनसे ब्लड डोनेट कराया। मरीज के परिजनों ने बताया कि ब्लड बैंक में ब्लड नही होने की वजह से ब्लड उपलब्ध नहीं हो सका। काफी हतास होने के बाद एक परीचित के माध्यम से सुधीर मंगलेश से संपर्क हुआ उन्होंने तुरंत अपने मित्र वशिष्ठ राज को ब्लड बैंक रांची में रक्तदान कर अनजान की जान बचाकर मानवता का परिचय दिया । वशिष्ठ राज ने कहा रक्तदान से बड़ा कोई दान नहीं है । वशिष्ठ राज कई बार रक्त दान कर चुके हैं ।वशिष्ठ राज ने यह सुनते ही बिना किसी हिचकिचाहट के रक्तदान करने का फैसला किया। उन्होंने कहा रक्तदान एक महान कार्य है और इसे मानवता की सेवा के रूप में देखा जाना चाहिए। मुझे खुशी है कि मैं किसी की जान बचाने में मदद कर सका। अस्पताल के डॉक्टरों और स्टाफ ने समाजसेवी की इस नि:स्वार्थ सेवा की सराहना की और अन्य लोगों को भी नियमित रूप से रक्तदान करने के लिए प्रेरित किया। यह कदम वास्तव में प्रेरणादायक है। हमें उम्मीद है कि अधिक लोग इस प्रकार के कार्यों में भाग लें।

विधायक सुदेश ने 835 छात्र-छात्राओं को किया सम्मानित

बच्चों को मैट्रिक-इंटरमीडिएट परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन का मिला पुरस्कार

प्रातः नागपुरी संवाददाता

राहे। राहे प्रखंड के डोमनडीह स्कूल मैदान में शुक्रवार को गूंज परिवार की ओर से मेधा प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। वर्ष 2024 में मैट्रिक एवं इंटरमीडिएट परीक्षा में सफलता का परचम लहराने वाले राहे प्रखंड के 835 छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व उपमुख्यमंत्री सह विधायक सुदेश महतो, बीडीओ मनोज महथा, बीईईओ शांति मुनि तिर्की एवं अन्य अतिथियों ने प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को उत्कृष्ट प्रमाण पत्र और पुरस्कार तथा प्रखंड टॉपर हाईस्कूल राहे की श्रुति कुमारी और पर्वतीय दुर्गम हाई स्कूल जाराडीह के धीरज कुमार महतो को टैबलेट देकर तथा उनके अभिभावकों को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। वहीं प्रखंड के सभी विद्यालयों में

'पढ़ेगा सिल्ली बढ़ेगा सिल्ली' महाअभियान को ले जाना है और आगे

समारोह को संबोधित करते हुए सुदेश कुमार महतो ने कहा कि, ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों द्वारा शहर के बच्चों की तुलना में अपने आप को खड़ा करना एक चुनौती है। हमारे ग्रामीण परिवेश के छात्रों ने इन चुनौतियों को स्वीकार कर एक उदाहरण पेश किया है। तमाम बाधाओं के बावजूद क्षेत्र के होनहार विद्यार्थियों ने कामयाबी की नई कहानी लिखी है। इसके लिए सभी बधाई के पात्र हैं। लेकिन हमें यहीं नहीं रुकना है। यह महज एक पड़ाव है, हमें 'पढ़ेगा सिल्ली बढ़ेगा सिल्ली' शिक्षा के महाअभियान को और आगे ले जाना है।बेहतर कल को आकार देने के लिए छात्रों की भूमिका अहम है। यहां के छात्रों में अपार क्षमता है। उनमें हर दिन नया सीखने आगे बढ़ने और समाज के हालात बदलने की ललक है। वहीं, उन्होंने कहा कि अपने मुकाम को पाने के लिए आप नए नजरिए से सोचें तथा नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ें।

मैट्रिक एवं इंटर के टॉपर को उत्कृष्ट प्रमाण पत्र, पुरस्कार उनके अभिभावकों को शॉल देकर सम्मानित किया गया। जहां जरूरत होगी, वहां मैं खड़ा हूं। आप सभी कुछ ऐसा करें, जो आपके लिए, आपके परिवार तथा समुदाय में परिवर्तन की नई पहल बने। ध्यान रखें कि आप अपने छोटे और प्रभावशाली कदमों के साथ समाज में बदलाव की नींव रख सकते हैं।

छात्राओं ने स्वागत नृत्य-गीत किया प्रस्तुत

झारखंड आवासीय बालिका विद्यालय की छात्राओं के द्वारा स्वागत नृत्य और गीत प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का संचालन गूंज के अध्यक्ष सुनील सिंह एवं सीआरपी जगन्नाथ मुखर्जी ने किया। मौके पर प्रभारी संजय सिद्धार्थ, बबलू खान, बीपीओ प्रवीण कुमार, रंग बहादुर महतो, पशुपति महतो, भजोहरी महतो, जलेश्वर महतो, मीरा महतो, सुशांत सिंह, सुरेंद्र प्रजापति, सभी विद्यालय के शिक्षक, आजसू पार्टी के ग्राम प्रभारी, पंचायत जनप्रतिनिधि, कार्यकर्ता एवं छात्र-छात्राएं मौजूद थे।

आज से चलेगा विशेष मतदाता सूची अभियान

बेड़ो। जिला निर्वाचन कार्यालय ने मतदाता सूची में नाम जुड़वाने या गलतियों में सुधार के लिए शनिवार से विशेष अभियान की शुरू कर रहा है। इस अभियान के दौरान वे युवा मतदाता भी आवेदन दे सकते हैं, जो एक जुलाई 2024 को 18 वर्ष की उम्र पूरी कर रहे हैं। इसकी जानकारी देते हुए सहायक निर्वाचन पदाधिकारी सह सीओ प्रताप मिंज ने बताया कि इस विशेष अभियान का आयोजन चुनाव आयोग के निर्देश पर पूरे देश में किया जा रहा है। जिसके तहत प्रखंड के सभी बूथों पर मतदाताओं से आवेदन लिया जाएगा। वहीं सभी बूथों में बीएलओ को उपस्थित रहने का निर्देश दिया गया है। इनके पास मतदाता सूची में नाम जोड़ने, नाम हटाने तथा नाम, पता या अन्य तरह की गलतियों में सुधार के लिए अलग-अलग आवेदन प्रपत्र दिए गए हैं।

IN THE COURT OF
EXECUTIVE MAGISTRATE, RANCHI

AFFIDAVIT

I, ABHAY KUMAR SINGH, S/O Late Dhruw Narayan Singh, Resident of Saryoday Nagar, Dam side, Kanke Road, Near Chandra Apartment, Gandhi Nagar, Morabadi, Ranchi, Jharkhand, do hereby solemnly affirm and declare as follows:-

1. That "TEJASWINI SINGH" is my daughter who was born on 07.05.2010, and her mother's name is MAMTA SINGH
2. That, she is a Student of D. A. V. Public School, Gandhi Nagar, Kanke Road, Ranchi in class IX.
3. That in her School register, her name is written as TEJASWINI only, and in her Aadhaar Card No. 5291 2519 6737.
4 That now I want to add my Title 'SINGH' in the name of my said daughter as her full name as TEJASWINI SINGH in place of TEJASWINI.
5. That from today, the name of my said daughter will be known as TEJASWINI SINGH in place of TEJASWINI,
6. That I Swear this affidavit for correction the name of my said daughter as TEJASWINI SINGH in place of TEJASWINI her school register and her Aadhar Card.
7. That aforesaid contents are true to the best of my knowledge.

Sl. No. 828, Date : 09/05/24

संक्षिप्त

रीबॉक ने रांची में अपनी नयी एक्सक्लूसिव दुकान का किया उद्घाटन

रांची : रीबॉक (आदित्य बिड़ला फैशन एंड रिटेल) ने रांची में अपनी नयी एक्सक्लूसिव दुकान का उद्घाटन किया। हमें यह घोषणा करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि आज रीबॉक (आदित्य बिड़ला फैशन एंड रिटेल) ने रांची में अपनी नई एक्सक्लूसिव दुकान का उद्घाटन किया। यह दुकान 563 रतनलाल सुरजमल कंपाउंड, रोशपा टावर के सामने स्थित है। इस उद्घाटन समारोह में आजसू प्रमुख सुदेश महतो मुख्य अतिथि रहे और कंपनी की तरफ से ऋषभ, सचिन शर्मा और नीलम उपस्थित रहे। हमारी नई दुकान में आपको रनिंग, वॉकिंग, ट्रेनिंग, स्पोर्ट्स फुटवियर और कपड़ों की एक विस्तृत श्रृंखला मिलेगी। साथ ही, रीबॉक के नये एडिशन मैक्सफोम+ को रनिंग कैटेगरी में और डीएमएक्स कम्फर्ट+ को वॉकिंग कैटेगरी में शामिल किया गया है। ये दोनों इनोवेटिव प्रोडक्ट्स आपके अनुभव को और भी बेहतर बनायेंगे।

आरटीसी प्रौद्योगिकी संस्थान में कारगिल विजय दिवस का आयोजन

ओरमांझी : शुक्रवार को आर .टी .सी . प्रोद्यौगिकी संस्थान में कारगिल विजय दिवस मनाया गया ।कार्यक्रम के आरंभ में प्राचार्य डॉ एन . हरि बाबू में इस दिवस की महत्ता पर प्रकाश डाला ।उन्होंने कहा की हमारी सेना के अथक प्रयास और बलिदान के फलस्वरूप हम कारगिल,बटालिक और दरास क्षेत्रों पर तिरंगा लहराने में सफल हुए हैं। हमें हमारे वीरों के बलिदानों को याद रखना चाहिए। तत्पश्चात डॉ अरविन्द कुमार ने बताया की हमारी सशक्त सीमा बल एवं सेना के द्वारा 1999 में कई कठिनाइयों के बाद हमें कारगिल पर विजय प्राप्त हुई। अत: यह हमारे लिये एक महत्वपूर्ण क्षण है। कार्यक्रम के सफल संचालन में डॉ रुपम शर्मा, शुभम खन्ना एवं किरण कुमारी की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

सीसीएल को राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार

रांची : शुक्रवार को सीपीडीआईएल द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति उपक्रम (रांची) की छमाही बैठक में वार्षिक पुरस्कार योजना, 2023-24 के अंतर्गत राजभाषा कार्यान्वयन के लिए सीसीएल रांची को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सीसीएल की ओर से हर्ष नाथ मिश्र, निदेशक (कार्मिक), सीसीएल ने पुरस्कार ग्रहण किया। उक्त आयोजन में सीसीएल के महाप्रबंधक राजभाषा, प्रबंधक (सचि./रा.भा.)/ उप प्रबंधक राजभाषा एवं सहायक प्रबंधक (रा.भा.) ने भाग लिया। विगत छमाही में नगर राजभाषा कार्या?वयन समिति उपक्रम (रांची) के विभिन्न सदस्?य कार्यालयों के द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में सीसीएल के 3 विजयी प्रतिभागियों को भी सम्मानित व पुरस्कृत किया गया। ज्ञात हो की सीसीएल द्वारा राजभाषा 'हिंदी' का अधिक से अधिक प्रयोग करने हेतु समय-समय पर विभिन्न कार्यशालाएं आयोजित किये जाते हैं, जिससे प्रेरित होकर सीसीएल के सभी कार्मिक अपने कार्यालयीन कार्य का निष्पादन हिंदी में करते हैं।

पत्नी संग मुख्यमंत्री ने दी श्रद्धांजलि

रांची : मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन शुक्रवार को अपनी धर्मपत्नी विधायक कल्पना सोरेन संग दिवंगत लक्ष्मण छेत्री के डोरंडा स्थित आवास पर पहुंचे और शोक संतप्त परिजनों से मुलाकात कर उन्हें ढाढ़स बंधाया। मुख्यमंत्री ने कहा कि दु:ख की इस घड़ी में वह उनके साथ हैं। उन्होंने ईश्वर से दिवंगत की आत्मा को शांति प्रदान करने की कामना की। ज्ञातव्य है कि मुख्यमंत्री आवास में रसोईया के पद पर कार्यरत लक्ष्मण छेत्री जी की सड़क हादसे में मृत्यु हो गयी थी।

वीडियो पर बवाल, आज हवाई चप्पल में आएंगे स्कूल शिक्षक

राज्य परियोजना निदेशक को हटाने की मुख्यमंत्री से मांग

प्रातः नागपुरी संवाददाता

रांची। झारखंड शिक्षा परियोजना परिषद के परियोजना निदेशक आदित्य रंजन का एक वीडियो इन दिनों सोशल मीडिया में वायरल हो रहा है। इसमें उनके द्वारा हवाई चप्पल पहनकर आने वाले शिक्षकों को चप्पल से मारने की बात कहते हुए सुना जा रहा है। साथ ही, शिक्षकों को जबरन ड्रेस कोड पहनने की भी धमकी दी जा रही है।

इस वीडियो के वायरल होने के बाद राज्य के प्राथमिक से लेकर +2 तक के शिक्षक आक्रोशित हो गए हैं। राज्य के कोने-कोने में निदेशक के इस बयान की निंदा हो रही है। अब तो इसे लेकर शिक्षकों ने आंदोलन की राह पकड़ ली है। अखिल झारखंड प्राथमिक शिक्षक संघ ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर निदेशक को शिक्षा विभाग से हटाने की मांग की है।

अधिकारी द्वारा दिए गए ऐसे अपमान जनक बयान के विरोध में 27 जुलाई को सामूहिक रूप से हवाई चप्पल में स्कूल आने और पढ़ाने की की घोषणा की है।

राज्यपाल, मुख्यमंत्री, मुख्य सचिव और शिक्षा सचिव को भेजे पत्र में संघ ने कहा है कि यदि सरकार स्तर से शिक्षकों के सम्मान में कार्रवाई नहीं की गई तो पांच अगस्त से होने वाले आमरण अनशन में भी इस मुद्दे को लेकर राजधानी में शिक्षक उतरेंगे।

संघ के अध्यक्ष अनूप केसरी, महासचिव राममूर्ति ठाकुर, मुख्य प्रवक्ता नसीम अहमद ने कहा कि निदेशक के कृत्ये से झारखंड शिक्षा परियोजना परिषद से जुड़े कार्यों के बहिष्कार की घोषणा करने की बाध्यता है। निदेशक से शिक्षा विभाग को मुक्त कर स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग के माहौल को स्वस्थ बनाए रखने की ओर पहल की मांग की है।

विरोध करने वालों में धीरज कुमार, सुनील कुमार, दीपक दत्ता, वाल्मीकि कुमार, हरे कृष्णा चौधरी, अजय कुमार सिंह, राकेश कुमार, अजय ज्ञानी, राजेश गुप्ता, विभूति कुमार, निरंजन प्रसाद, सलीम, कृष्ण शर्मा, प्रवीण कुमार, संजय सिंह, मणि उरांव, शंभु शर्मा, मानिक प्रसाद, सुदामा मांझी, संजय कंडोला, आभा लकड़ा, रामचंद्र खेरवार, सुरंजन, प्रेम कुमार शर्मा, संजय कुमार टुडू, सागवान, यदुनाथ, मनोरंजन कुमार, आनंद रजक, राधाकांत शाह, सुधीर दुबे, अमरेश सिंह, सुनील दुबे, दिलीप श्रीवास्तव आदि लोग शामिल थे।

रुक्का मोड़ पर मछवारों की दुकानों को पुलिस ने बल पूर्वक कराया बंद

नाराज मछवारे हुए गोलबंद

संवाददाता

ओरमांझी : ओरमांझी प्रखंड क्षेत्र के रुक्का मोड़ पर लगने वाला मछली बाजार को स्थानीय पुलिस ने बंद करा दिया, जिससे मछली कारोबारियों में काफी रोष हैं, शुक्रवार को चकला हरिजन टोली में मछवारों की बैठक कांग्रेस पार्टी के अनुसूचित जाति के जिला अध्यक्ष शिव टहल नायक के नेतृत्व में हुई, जहां किसानों ने अपनी पीड़ा सुनाते हुए कहा की हमलोग बिल्कुल बेरोजगार हो गये हैं,पुलिस हमलोगों को दुकान नहीं लगाने देती हैं,वहीं बैठक का नेतृत्व कर रहें शिव टहल नायक ने कहा की पुलिस द्वारा नायक समुदाय के पेट पर लात मारने का काम हो रहा है,दुकान खोलने की अनुमति पुलिस जल्द नहीं देती तो बाध्य होकर रांची उपयुक्त और ग्रामीण एसपी को ज्ञापन सोपा जाएगा,और जोरदार विरोध होगा। मछुआरों ने गोल बंद होकर पुलिस प्रशासन हाय हाय के नारे भी लगाये, मालूम हो की रुक्का मोड़ पर रांची आसपास के दर्जनों गांव के मछवारे मछली बेचने यहां पहुंचते हैं, जहां ताजा मछली मिलने से लोग दूर-दूर से आकर यहां मछली खरीदते हैं, मौके पर मुख्य रूप से किशोर नायक, सिवलात करमाली, जोखी देवी, संदीपनायक, सांगर कुमार, राजू नायक,अम नायक,हराम चामू नायक, काजी देवी,सुनीता देवी,संजय नायक,रायमुनी देवी,दिपक करमाल, कदी नायक,सुभाष नायक सहित आने को मछुआरे मौजूद थे।

सैनिकों के कारण अपना देश सुरक्षित है : डॉ. बीपी सिन्हा

संवाददाता

रांची : रांची विश्वविद्यालय की एन एस एस इकाई द्वारा कारगिल विजय के 25 वां वर्षगांठ के अवसर पर आर यू के मास कम्युनिकेशन विभाग परिसर में संकल्प सभा सह सैनिकों के सम्मान में रैली का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता मास कम्युनिकेशन के निदेशक डॉ बी पी सिन्हा ने की। अपने अध्यक्षीय संबोधन में डॉ बी पी सिन्हा ने कहा कि सैनिकों के कारण अपना देश सुरक्षित है एवं उनके सामर्थ्य एवं वीरता का लोहा पूरी दुनिया लेती है। उन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित एन एस के स्वयंसेवकों से कारगिल विजय दिवस के बारे में सभी को बताएं। इस अवसर पर आई एल एस के निदेशक डॉ एस एन मिश्रा ने कहा कि कारगिल विजय दिवस मनाना प्रत्येक भारतीय का नैतिक कर्तव्य है एवं उस युद्ध में शहीद सैनिकों को याद करना उनके लिए सच्ची श्रद्धांजलि है। आज के कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए एन एस एस के कार्यक्रम समन्वयक डॉ ब्रजेश कुमार ने कहा कि सैनिकों का सम्मान, देश का सम्मान है। उन्होंने कहा कि कारगिल जैसे कठिन युद्ध को भारतीय सैनिकों ने अपने जान की परवाह किए बिना पाकिस्तान के सैनिकों को हराकर अपना पराक्रम दिखाया ।आज पूरा देश ऐसे वीर सैनिकों को याद कर उन्हें अपना श्रद्धा सुमन अर्पित कर रहे हैं। मास कम्युनिकेशन परिसर से सैनिकों के सम्मान में रैली का शुभारंभ किया गया जो डी एस पी एम यू, केंद्रीय पुस्तकालय, नीलाम्बर पीताम्बर पार्क होते हुए पुनः मास कम्युनिकेशन विभाग परिसर में समाप्त हुआ ।रैली के दौरान एन एस एस के स्वयंसेवक सैनिकों का सम्मान- देश का सम्मान, जो हमसे टकराएगा- चूर चूर हो जाएगा, कारगिल विजय दिवस अमर रहें, वीर शहीदों की कुबार्नी --व्यर्थ नही जाएगा, देश के सैनिकों का सम्मान - कर रहा पूरा हिंदुस्तान आदि नारे लगा रहे थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में एन एस एस के टीम लीडर्स क्रमशः सुरभि, पीयूष, पुरषोत्तम, स्वरा, दीक्षा, रिकेष, अंश, अंकित, रुपाली, आस्था, सोनम, नवीन आदि का उल्लेखनीय योगदान रहा।

उपायुक्त ने की द्वितीय विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम को लेकर राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक

द्वितीय विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम की दी जानकारी

संवाददाता

रांची : जिला निर्वाचन पदाधिकारी-सह-उपायुक्त, रांची राहुल कुमार सिन्हा की अध्यक्षता में दिनांक 26 जुलाई 2024 को द्वितीय विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम 2024 को लेकर विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक आयोजित की गयी। बैठक में उप निर्वाचन पदाधिकारी, रांची बिवेक कुमार सुमन, निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी, 61-सिल्ली विधानसभा क्षेत्र रामनारायण सिंह, निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी, 65-कांके विधानसभा क्षेत्र एवं अन्य संबंधित कर्मी उपस्थित थे। बैठक में जिला निर्वाचन

पदाधिकारी राहुल कुमार सिन्हा द्वारा राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों को जानकारी दी गयी कि 25.07.2024 से द्वितीय विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम की शुरूआत हो चुकी है, इसके तहत मतदाता सूची के प्रारुप का प्रकाशन भी कर दिया गया। इस दौरान 01 जुलाई 2024 को अर्हता तिथि मानते हुए 18 वर्ष पूरे करने वाले योग्य नागरिकों का नाम वोटर लिस्ट में जोड़ने का कार्य किया जायेगा। साथ ही मतदाता सूची में किसी प्रकार के सुधार संबंधित आवेदन भी उक्त अवधि में प्राप्त किये जा सकेंगे। जिला निर्वाचन पदाधिकारी राहुल कुमार सिन्हा ने कहा कि सभी राजनीतिक दल अपने स्तर से लोगों को बतायें कि मतदाता पुनरीक्षण कार्यक्रम के दौरान जिन मतदाताओं का नाम मतदाता सूची में नहीं है अथवा किसी प्रकार का सुधार करवाना है, वे ऑनलाइन माध्यम अथवा अपने बीएलओ से मिलकर अपना आवेदन समर्पित करें ताकि आगामी विधानसभा चुनाव में वे अपने मताधिकार का प्रयोग कर सकें।

राहुल कुमार सिन्हा द्वारा सभी राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों से ज्यादा से ज्यादा योग्य नागरिकों के नाम मतदाता सूची में नाम जुड़वाने में सहयोग की बात कही गयी। उन्होंने कहा कि बीएलओ द्वारा अपने-अपने क्षेत्र में इस दिशा में कार्य किया जा रहा है, राजनीतिक दल भी अपने बूथ लेवल एजेंट को एक्टिव करते हुए सहयोग करें।

द्वितीय विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण 2024 के कार्यक्रम

मतदाता सूची प्रारूप का प्रकाशन

- 25.07.2024 (गुरुवार)

दावा और आपत्ति दाखिल करने की तिथि

- 25.07.2024 (गुरुवार) से 26.08.2024 (सोमवार)

विशेष अभियान तिथि

- 27 एवं 28 जुलाई और 03 एवं 04 अगस्त (शनिवार और रविवार) दावों और आपत्तियों का निपटारा
- 26.08.2024 (सोमवार) तक मतदाता सूची का अंतिम प्रकाशन
- 27.08.2024 (मंगलवार) को किया जायेगा।

गुरु नानक सेवक जत्था ने शहीद भगत सिंह सम्मान समारोह की तैयारियों को दिया अंतिम रूप

संवाददाता

रांची : गुरु नानक सेवक जत्था द्वारा 28 जुलाई, रविवार को कृष्णा नगर कॉलोनी, रातू रोड स्थित गुरु नानक भवन में आयोजित शहीद भगत सिंह सम्मान समारोह के आयोजन को लेकर जत्था की एक विशेष बैठक बुलाई गई। गुरु नानक सेवक जत्था के सूरज झंडई की अध्यक्षता में हुई बैठक में कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए समारोह से संबंधित जिम्मेदारियां सभी सदस्यों के बीच बांटी गई. संस्था के मीडिया प्रभारी नरेश ने बताया कि शहीद भगत सिंह सम्मान समारोह में झारखंड के प्रत्येक जिले से चिन्हित लगभग 70 मानवतावादी लोगों को उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए जत्था द्वारा शहीद भगत सिंह सम्मान से सम्मानित किया जाएगा. केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री माननीय श्री संजय सेठ जी कार्यक्रम के मुख्य अतिथि होंगे।

संक्षिप्त

डीसी ने कारा सुरक्षा समिति की बैठक में दिये कई दिशा-निर्देश

लातेहार : उपायुक्त गरिमा सिंह की अध्यक्षता में कारा सुरक्षा समिति की बैठक आयोजित की गयी। बैठक में कारा सुरक्षा के मद्देनजर कारा में रखे गए कैदियों की संख्या, जेल भवन की वर्तमान स्थिति, सी.टी.वी, वाकी टॉकी की कार्यशीलता, पेयजल, विद्युत सहित अन्य व्यवस्थाओं की वर्तमान स्थिति की जानकारी ली गई एवं कारा सुरक्षा को लेकर संबंधित पदाधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिया गया। बैठक में उपायुक्त ने कारा में रखे गये कैदियों की जानकारी लेते हुए मंडल कारा, लातेहार में संसीमित बंदियों को टेलीमेडिसिन सुविधा उपलब्ध कराने को लेकर सिविल सर्जन लातेहार को आवश्यक दिशा निर्देश दिया गया। साथ ही कारा में संसीमित दिव्यांगजन बंदियों के लिए बैसाखी, वॉकर, व्हीलचेयर जिला समाज कल्याण विभाग को उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया। बैठक में उपायुक्त द्वारा कारा सुरक्षा संबंधित अन्य जानकारी ली गयी एवं निर्देश दिया गया कि कारा सुरक्षा को लेकर पदाधिकारी पूरी तरह से सजग रहें।

व्यक्ति ने फांसी लगा कर की आत्महत्या

हेरहंज/लातेहार : हेरहंज थाना क्षेत्र के पुरनी हेरहंज निवासी जगेश्वर गंझू का पुत्र विजय गंझू उर्फ ननका गंझू (45) ने गुरुवार की मध्य रात्रि में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। इस संबंध में ग्रामीणों ने बताया कि विजय गंझू का मानसिक स्थिति ठीक नहीं था। वह गुरुवार की रात अपने घर में खाना खाने के बाद सोया था। जब हम लोग सुबह उठे तो बाहर से ही देखा गया कि गले में फांसी लगाकर झूल रहा है। इसकी सूचना तुरंत थाना प्रभारी विक्रम कुमार को दी गई। सूचना मिलते ही थाना प्रभारी के निर्देश पर एएसआई सुबोध सिंह पुलिस बल के जवानों के साथ घटना स्थल पहुंचे। और घटना की विस्तृत जानकारी ली। शव को अपने कब्जे में लेकर अंत्यपरीक्षण के लिए लातेहार भेज दिया।मृतक विजय गंझू का दिमागी हालत ठीक नहीं रहने के कारण पत्नी करीब दस वर्षों से अपने पुत्र के साथ अपनी मायके चंदवा में ही रह कर जीवन यापन कर रही थी। इस घटना के बाद परिजनों का रो रो कर बुरा हाल हैं।

जाम नालियों में सफाई नहीं तो नगर परिषद में होगी तालाबंदी : खुर्शीद आलम

गुमला : झारखंड पार्टी के नेता खुर्शीद आलम ने एक प्रेस बयान जारी कर कहा है कि नगर परिषद के द्वारा विभिन्न वार्ड के नालियों में कचरे का साफ सफाई नहीं हो रही है बरसात आने को है स्थिति बहुत ही खराब हो सकती है खासकर वार्ड नम्बर 09 के इस्लामपुर चौक से हरिजन स्कूल मोड़ तक की नाली में आधा दूर तक नाली में मिट्टी गिराकर नाली को बंद कर दिया गया है जिसे नगर पालिका के द्वारा साफ नही किया जाता है नाली सफाई के नाम पर सिर्फ खानापूर्ति होती है उक्त बातें झारखंड पार्टी के नेता खुर्शीद आलम ने एक प्रेस बयान में बताया की अब समस्या यह हो गयी है कि सड़क का पानी नाली मे बहाव नही हो पा रहा है।

फायरिंग कांड के आरोपी को पुलिस ने किया गिरफ्तार

गुमला : गुमला एसपी शंभू कुमार सिंह को गुप्त सूचना मिलने पर गठित पुलिस टीम ने गुमला बस स्टैंड पर छापामारी अभियान शुरू कर एक देशी कट्टा एवं तीन कारतूस के साथ गिरफ्तार कर गिरफ्तारी पश्चात शनिवार को गुमला थाना परिसर में एक प्रेस कांफ्रेंस आयोजित करते हुए शहजाद अंसारी उम्र करीब 22 वर्ष पिता असरफ अंसारी ग्राम अंबुवा वर्तमान पता अंबेडकर नगर गुमला को जेल भेजा गया। इस मौके पर प्रेस कॉन्फ्रेंस करते हुए एसडीपीओ सुरेश प्रसाद यादव ने कहा कि शुक्रवार को गुमला एसपी शंभू कुमार सिंह को गुप्त सूचना मिलने पर गठित पुलिस टीम को थाना प्रभारी उमेश कुमार सिंह ने तत्काल बस स्टैंड पर छापामारी अभियान करने के लिए भेजा पुलिस की घेराबंदी करने पर एक संदिग्ध व्यक्ति भागने लगा।

अवैध खनन को लेकर उपायुक्त सख्त, रोक के लिए दिए कई निर्देश

उपायुक्त की अध्यक्षता में जिला खनन टास्क फोर्स की बैठक संपन्न

संवाददाता

पलामू। जिले में अवैध खनन की रोकथाम को लेकर उपायुक्त शशि रंजन की अध्यक्षता में शुक्रवार को जिला खनन टास्क फोर्स की बैठक की हुई। समाहरणालय के सभागार में आयोजित इस बैठक में सर्वप्रथम बैठक में जिला खनन पदाधिकारी आनंद कुमार ने अवैध खनन पर की गई कार्रवाई से उपायुक्त को अवगत कराया।

55 वाहनों को किया गया जब्त

जिला खनन पदाधिकारी ने बताया कि 28 जून से लेकर 25 जुलाई तक अवैध खनन से जुड़े 55 वाहनों को जब्त किया गया है। जुमार्ने के रूप में 32.78 लाख रुपए की वसूली की गयी है। साथ ही, 42 राजसात केस दायर किये गये हैं। जब्त 55 वाहनों में 42 वाहन अवैध बालू के परिवहन से जुड़े है, जबकि 13 वाहन अवैध पत्थर से जुड़े थे। सबसे अधिक 10 वाहनों की जब्ती चैनपुर थाना क्षेत्र से की गयी है।

हर हाल में रोकें अवैध खनन

बैठक में श्री रंजन ने सभी अंचलाधिकारी व थाना प्रभारियों से कहा कि आप सभी अपने क्षेत्र अंतर्गत वैसे नदी को चिन्हित करें, जहां से अवैध बालू का उठाव होता है। इसके बाद उस रुट में चेक पोस्ट स्थापित कर वहां से आवागमन कर रहे प्रत्येक वाहनों की एंट्री रजिस्टर में सुनिश्चित करें। साथ ही, आवश्यकता अनुरूप नदी से निकलने वाले रास्ते के बीच ट्रेंच खोदकर रास्ता को भी अवरोध करें या अपने स्तर से कोई अन्य कार्रवाई करें। यह सुनिश्चित करें कि आपके क्षेत्र अंतर्गत कहीं भी किसी प्रकार का कोई अवैध खनन नहीं हो पायें। उन्होंने एनजीटी के नियमों का अक्षरशः पालन कराने के निर्देश दिये। सभी अनुमंडल पदाधिकारी, अंचलाधिकारी व थाना प्रभारियों से अपने क्षेत्र अंतर्गत अवैध खनन के प्रति पूरी गंभीरता के साथ कार्य करने की बात कही।

निरीक्षण रिपोर्ट जिला को भेजें

उपायुक्त ने सभी अनुमंडल पदाधिकारी को उनके क्षेत्र अंतर्गत माइनिंग या बालू घाटों का निरंतर रूप से निरीक्षण करने की बात कही। प्रत्येक 15 दिनों में निरीक्षण की समेकित रिपोर्ट यथा कितनी कार्रवाई की गयी, कितनी प्राथिमिकी दर्ज की गयी, कितने वाहन जब्त हुए, ये सारे बिंदुओं पर प्रतिवेदन जिला को देने की बात कही। मौके पर पुलिस अधीक्षक रीष्मा रमेशन, वन प्रमंडल पदाधिकारी, अपर समाहर्ता, तीनों एसडीओ, एसडीपीओ समेत सभी अंचलाधिकारी व थाना प्रभारी उपस्थित रहे।

सीबीसी के विशेष जागरुकता कार्यक्रम में हुई प्रतियोगिताएं

रंगोली, पेंटिंग्स एवं भाषण प्रतियोगता के प्रतिभागी हुए पुरस्कृत

संवाददाता

मेदिनीनगर। केंद्रीय संचार ब्यूरो, डालटनगंज ने चैनपुर स्थित राजकीय बुनियादी विद्यालय में विश्व जनसंख्या पखवाड़ा, पीएम विश्वकर्म योजना पीएम आवास योजना, भारतीय न्याय संहिता एवं कारगिल विजय दिवस के मौके पर विशेष जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन शुक्रवार को किया गया। इस मौके पर रैली, रंगोली, पेंटिंग एवं भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की शुरूआत चैनपुर प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी नंदकिशोर तिवारी एवं क्षेत्रीय प्रचार सहायक मनोज कुमार के द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस मौके पर श्री तिवारी ने बताया कि वह लगभग डेढ़ वर्ष तक कारगिल में रहे हैं। विश्व जनसंख्या वृद्धि पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने दो बच्चों का लक्ष्य, एक हमारा-एक तुम्हारा का नारा याद दिलाया। साथ ही, बताया कि जनसंख्या के मामले में हम भारतीय विश्व में प्रथम स्थान पर आ गए हैं। इस पर नियंत्रण की जरूरत है। मनोज कुमार ने अन्य विषयों पर विस्तार पूर्वक जानकारी दी।

इस मौके पर प्रधानाध्यापक (राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय, कंकारी) श्यामलाल उरांव, प्रधानाध्यापक (राजमाता प्रफुल्ल मंजरी कन्या उच्च विद्यालय, चैनपुर) सिंधु कुमार यादव के अलावा विद्यालय के प्रधानाध्यापक क्यास ठाकुर, गणेश सिंह, कुंदन कुमार, विद्यालय प्रबंधन समिति की अध्यक्ष श्रीमती बबीता देवी, सहयोगिक श्रीमती सविता देवी एवं अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

इससे पूर्व विद्यालय के प्रधानाध्यापक क्योस ठाकुर ने हरी झंडी दिखाकर जागरुकता रैली को रवाना किया। इस मौके पर रंगोली, पेंटिंग्स एवं भाषण प्रतियोगिता के प्रतिभागियों को पुरस्कृत भी किया गया।

मुक्तिधाम का रास्ता रोका विरोध में तीन घंटे सड़क जाम

संवाददाता

बालूमाथ/लातेहार : बालूमाथ प्रखंड के बसिया ग्राम में अमानवीय चेहरा देखने को मिला। जहां पर अंतिम संस्कार के लिए मुक्तिधाम जाने के लिए कुछ लोगों ने रास्ता रोक दिया। जिस मामले को सुलझाने के लिए ग्रामीण सड़क पर उतर गए और शव के साथ बालूमाथ मुरपा मुख्य मार्ग को बसिया मध्य विद्यालय के पास जाम कर दिया। मिली जानकारी के अनुसार बसिया ग्राम निवासी झरी उरांव के पुत्र धनलाल उरांव का बीमारी के कारण गुरुवार की शाम मौत हो गई थी। जिसका अंतिम संस्कार स्थानीय मुक्तिधाम में किया जाना था। जिसे विधि विधान के अनुसार उनके परिजन और स्थानीय ग्रामीण मुक्तिधाम जाने के लिए निकले थे लेकिन इसके पूर्व रास्ते में ही गैर मजरूआ भूमि को अवैध रूप से स्थानीय ग्रामीण स्वर्गीय शिवचरण उरांव के परिजन नवीन उरांव और संजय उरांव आदि के द्वारा बंदोबस्त करा लिए जाने के कारण मुक्ति धाम जाने के रास्ते को उनके द्वारा बंद कर दिया गया। जिससे स्थानीय ग्रामीण और मृतक के परिजन भड़क गए तथा सड़क जाम कर दी।मुख्य मार्ग मे करीब 3 घंटे तक जाम होने के कारण दोनों ओर एक किलोमीटर तक वाहनों की लंबी कतार लग गई। जिस कारण राहगीर के साथ-साथ कई वाहन मालिकों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। जिसकी सूचना बालूमाथ प्रखंड प्रशासन और अंचल अधिकारी को मिली। जिस मामले को लेकर बालूमाथ अंचल निरीक्षक अनिल कुमार पहुंचे और वस्तु स्थिति का जायजा लिया । जहां पर अंचल निरीक्षक अनिल कुमार ने इस मामले की निंदा कर अपनी सूझबूझ का परिचय देते हुए गैर मजरूआ भूमि का बंदोबस्त करने वाले ग्रामीणों से बात की और कहा कि ऐसी स्थिति में आपकी बंदोबस्ती टूट सकती है और तत्काल मुक्तिधाम जाने के लिए उपस्थित अंचल अमीन को नक्शा काटकर रास्ता के लिए भूमि देने की बात कही । वहीं बसिया ग्राम में और कई जगह पर सार्वजनिक स्थल जाने के लिए गई भूमि का बंदोंबस्ती करा लिया गया था। जहां पर ग्रामीणों के बीच उन्होंने रास्ता दिलवाने का आश्वासन दिया। तत्पश्चात जाम हटा ली गयी। मौके पर बसिया पंचायत क्षेत्र के सैकड़ो ग्रामीण मौजूद रहे। मालूम हो कि बालूमाथ प्रखंड क्षेत्र में सैकड़ो ऐसे मामले हैं। जहां पर मुक्तिधाम के साथ-साथ सरकारी विद्यालय, अस्पताल, बाजार, आम गैर मजरूआ खास गैरमजरूआ आंगनवाड़ी, सड़क, धार्मिक स्थल के साथ-साथ कई सरकारी भूमियों का अतिक्रमण किया गया है।

कर्मचारी चेतना जागरण कार्यक्रम को लेकर बैठक, प्रखंड कार्यकारिणी गठित

संवाददाता

पाकुड़। एनएमओपीएस, झारोटेफ के बैनर तले जिले के अमड़ापाड़ा प्रखंड में प्राथमिक विद्यालय प्रखंड, कोलोनी में शिक्षक प्रमोद कुमार की अध्यक्षता में कर्मचारी चेतना जागरण कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम में 11सूत्री सूत्री मांगों पर विचार विमर्श किया गया। इसमें एनएसडीएल में जमा एनपीएस की राशि वापस लाने, अन्य कर्मचारियों की तरह शिक्षकों को एमएसीपी का लाभ देने, सेवानिवृत्ति की उम्र 62 वर्ष करने, राज्य के सभी विभागों के लिपिक संवर्ग की सेवा नियमावली में एकरूपता लाना समेत अन्य मांगों शामिल है।

मौके पर जिला कार्यसमिति की निगरानी में अमड़ापाड़ा प्रखंड कार्यकारिणी का पुनर्गठन भी किया गया। सर्वसम्मति से धीरेन्द्र कुमार मिस्त्री को अध्यक्ष, रतन प्रसाद राय को उपाध्यक्ष, सोमेश मूर्मू को सचिव, विकास यादव एवं अनिल मरांडी को संयुक्त सचिव एवं रविन्द्र कुमार महतो को कोषाध्यक्ष चुना गया।

एनएमओपीएस झारोटेफ के जिला अध्यक्ष अतिकुर रहमान ने नवगठित कमेटी को बधाई दी। कहा कि सरकारी कर्मचारियों का एनएसडीएल में जमा एनपीएस की राशि वापसी समेत अन्य मांगों को पूरा होने तक यह आंदोलन जारी रहेगा।

प्रदेश मीडिया प्रभारी दिलीप कुमार राय ने कहा कि एनएमओपीएस के नाम कई उपलब्धियां रही है। यह हम कर्मचारियों की एकजुटता से संभव हो पाया। झारखंड राज्य का सबसे बड़ा कर्मचारी संगठन है। सरकार के समक्ष 11 सूत्री मांगों को जोरदार तरीके से रखा जाएगा। प्रखंडों के बाद 11 अगस्त को राज्य के सभी जिलों में कर्मचारी शक्ति समागम का आयोजन होगा। रांची में 1 सितम्बर 2024 को कर्मचारी संकल्प महासम्मेलन का आयोजन झारोटेफ के बैनर तले होगा।

मौके पर मंगल सोरेन, विकास यादव, अनिल यादव, डालेश्वर महतो, नरेश डे, उदय गिरी, रूपेश कुमार गुप्त, स्वर्णलता हांसदा, एनसीला मुर्मू, बाबूराम राय, फलार मांझी, महेंद्र महतो, कृष्ण देव प्रसाद, हेमन्त कुमार शर्मा, वासुदेव साव, कौशल किशोर चौधरी समेत अन्य शिक्षक मौजूद थे।

कठौतिया ग्राम कटकमसांडी प्रखंड में रेलवे ब्रिज की आवश्यकता

संवाददाता

हजारीबाग : भाजपा नेता टोनी जैन ने कटकमसांडी प्रखंड के होरिया, बलिया, उरागडा, कठौतिया, ढातो खुर्द, आरा भुसाई, मैं जनसंपर्क अभियान चलाया/ होरिया ग्राम में स्वास्थ्य उपकेंद्र में डॉक्टर तथा नर्स की सख्त आवश्यकता है, नल जल योजना के तहत जो कार्य हो रहा है उसमें भी इन सभी गांव में काम के प्रति गुणवत्ता को लेकर शिकायत है। कठौतिया ग्राम में रेलवे ब्रिज के ऊपर पल की सख्त आवश्यकता है पिछले वर्ष मैं बहुत सारे ग्रामीणों के जानवर रेलवे ट्रैक पर जाने की वजह से अपनी जान गवा चुके है क्योंकि गांव में जानवरों के पानी पीने का एकमात्र साधन रेलवे ट्रैक के उसे तरफ तालाब है।

तालाब में भी गहरीकरण का कार्य की सख्त आवश्यकता है, इस गांव में भी स्वास्थ्य केंद्र को लेकर चिंता का विषय बना हुआ है क्योंकि डॉक्टर और नर्स कोई गांव में नहीं आते हैं। इन सभी समस्याओं को जानने के बाद भाजपा नेता टोनी जैन ने कहा कि बहुत जल्द हम ग्रामीणों की बात हम रेलवे के बड़े अधिकारी, मंत्री तथा उपायुक्त के सामने रखेंगे इस समस्या का समाधान जल्द से जल्द चाहेंगे ताकि और जान माल की हानि ना हो/ ग्रामीणों ने सिंचाई की व्यवस्था की मांग की। इस बात को भी हम जल्द से जल्द संबंधित अधिकारी तथा मंत्री तक पहुंचाएंगे।

इस जनसंपर्क अभियान में दीपक यादव, सोनू गुप्ता, मुकेश मेहता, मुकेश कुमार, निर्मला साहू भरत रजक, महादेव रविदास, मनोज राम, संदीप सिंह, आशीष पांडे, राजेश सिंह, रोहित सिंह, लव कुश सिंह, मुकुंद राणा, महावीर यादव, कैलाश पासवान, भोला सिंह, तूकेसर यादव, सुभाष यादव महेश प्रसाद, मोनिका देवी, सोनी देवी, सहित सैकड़ो ग्रामीण उपस्थित थे।

सीमा सुरक्षा बल त्रैमासिक ई-पत्रिका 'मेरू ग्रैफिटी' का विधिवत विमोचन

संवाददाता

दारू : प्रशिक्षण केन्द्र एवं विद्यालय, सीमा सुरक्षा बल, मेरू कैंप, हजारीबाग में के0 एस0 बन्याल, प्रशिक्षण केन्द्र एवं विद्यालय द्वारा परिसर स्थित प्रशासनिक भवन कॉन्फ्रैन्स हॉल में सीमा सुरक्षा बल मेरू परिवार पर अध्ययन संकाय द्वारा संकलित व संपादित त्रैमासिक ई-पत्रिका 'मेरू ग्रैफिटी' के पंद्रहवें ई-संस्करण अवधि 11 अप्रैल 2024 से 10 जुलाई 2024 का विधिवत विमोचन किया गया। इस मौके पर श्री राकेश रंजन लाल, (प्रशा0), राजेश कुमार, (एस0टी0एस0), डी0 के0 प्रमाणिक, सत्यवान खैंची, समादेष्टा, व प्रशिक्षण केन्द्र एवं विद्यालय के सभी अधिकारीगण उपस्थित रहे। यह पत्रिका सीमा सुरक्षा बल के आई0पी0पी0 नेटवर्क/ई-मेल व अन्य डिजिटल प्लेटफार्म द्वारा निर्गत की जाएगी।

इस संस्करण में प्रशिक्षण केन्द्र एवं विद्यालय द्वारा गत तीन माह (11 अप्रैल 2024 से 10 जुलाई 2024) की अवधि में किए गए क्रियाकलापों विशेषकर प्रशिक्षण, प्रशासनिक, सांस्कृतिक, उच्च अधिकारियों का दौरा, बावा गतिविधियाँ, विभिन्न सांस्कृतिक आयोजन आदि के क्षेत्र में किये गए कार्यों में से कुछ की झलकियाँ दिखाई गई है। विदित रहे कि इस पत्रिका का चैदहवां ई-संस्करण दिनांक 31 अप्रैल 2024 को जारी किया जा चुका हैं वर्तमान संस्करण पत्रिका सभी पाठकों तक पहुंचे इसे पुनः ई-स्वरूप में जारी किया गया है।

दत्तोपंत ठेंगड़ी रोजगार मेला का हुआ आयोजन

संवाददाता

लातेहार : जिला नियोजन कार्यालय के द्वारा शुक्रवार को जिला खेल स्टेडियम परिसर दत्तोपंत ठेंगढ़ी रोजगार मेला का आयोजन किया गया। रोजगार मेला का विधिवत रूप से शुभारंभ उपायुक्त गरिमा सिंह के द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। दत्तोपंत ठेंगढ़ी रोजगार मेला में स्थानीय नियोजको के साथ जिले के बाहर से भी नियोजनको ने विभिन्न प्रकार के रिक्तयों के साथ भाग लिया। इस दौरान उपायुक्त ने अपने संबोधन में कहा कि आज नियोजनालय, लातेहार के सौजन्य से रोजगार मेला का आयोजन किया गया है, जिसका मुख्य उद्देश्य युवाओं को उनके अभिरुचि एवं शैक्षणिक योग्यता के अनुसार नौकरी प्रदान करना है। उन्होंने कहा कि आज के समय में नौकरी व रोजगार की बहुत समस्या हो गई है। आज यहां पर 29 कंपनी आई है, आप सभी अपनी अभिरुचि एवं योग्यता के अनुसार स्टॉल में जाएं और नौकरी हेतु आवेदन करें। जिला नियोजन पदाधिकारी ने बताया कि नियोजनालय द्वारा समय समय पर रोजगार मेला/भर्ती- कैम्प का आयोजन किया जाता रहा है, ताकि बड़ी संख्या में पढ़े-लिखे, योग्यता प्राप्त बेरोजगारों को निजी क्षेत्र में नौकरियां मिल सके, यह कार्यक्रम आगे भी जारी रहेगा। इस रोजगार मेले में 29 नियोजकों ने भाग लिया। नियोजक एवं नियोजक प्रतिनिधि के द्वारा भी अपने संस्थान के बारे में आवेदको को बताया गया। इस रोजगार मेला में लगभग 700 अभ्यर्थि उपस्थित हुए जिसमें 136 अभ्यर्थियों का चयन किया गया तथा 206 अभ्यर्थियों को शॉट लिस्ट किया गया है।

अल्पसंख्यकों के कल्याणार्थ चलायी जा रहीं योजनाओं से सम्बन्धित समीक्षात्मक बैठक

संवाददाता

कोडरमा : शुक्रवार को कोडरमा जिला के परिसदन सभागार में झारखंड राज्य अल्पसंख्यक आयोग के माननीय अध्यक्ष हिदायतुल्लाह खान एवं माननीय सदस्य बरकत अली ने आज संयुक्त रूप से जिले में अल्पसंख्यकों के कल्याणार्थ चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं की विभागवार समीक्षा की।

समीक्षा के बाद आयोजित पत्रकार वार्ता में अध्यक्ष ने मीडिया को बताया कि आज आयोग ने जिले में अल्पसंख्यकों के कल्याणार्थ शिक्षा, ग्रामीण विकास, सामाजिक सुरक्षा, समाज कल्याण, मत्स्य, कृषि, स्वास्थ्य सहित अन्य विभाग द्वारा चलाई जा रही योजनाओं की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि आयोग का उद्देश्य है कि झारखंड के सभी जिलों में अल्पसंख्यकों के कल्याणार्थ केंद्र एवं राज्य सरकार की योजनाएं सही तरीके से धरातल पर उतरे। उन्होंने कहा कि राज्य के माननीय मुख्यमंत्री की भी यही प्राथमिकता है कि राज्य के सभी व्यक्तियों को सरकार की सभी योजनाओं का लाभ मिले। उन्होंने ने बताया कि समीक्षा के क्रम में विभागों से प्राप्त रिपोर्ट से आयोग संतुष्ट है। आयोग द्वारा बताया गया कि आगे हजारीबाग में विभागों की समीक्षा की जाएगी। इसके साथ साथ जनसुनवाई भी की जाएगी। आयोग लगातार सभी जिलों में भ्रमण कर विभागवार समीक्षा एवं जनसुनवाई कर रही है। जन सुनवाई के दौरान कई आवेदन भी प्राप्त हुए जिन्हें सम्बंधित विभाग को अग्रतर करवाई हेतु भेज दिया गया है साथ ही राज्यस्तरीय मामले को आयोग सभी जिलों से प्राप्त रिपोर्ट का डाटा इकट्ठा कर राज्यस्तरीय बैठक करेगा।

इसके बाद रिपोर्ट के आधार पर राज्य सरकार को अपनी अनुशंसा प्रेषित करेगा। इस दौरान उन्होंने कहा कि यहाँ पर विशेष कर शिक्षा से सम्बंधित मामले ज्यादा हैं। कोडरमा जिले में भी उर्दू शिक्षकों की कमी है। हम अपने तौर पर सरकार को अनुसंशा करेंगे। हम लोग राज्य सरकार से अनुरोध करेंगे की बहुत जल्द होने वाली शिक्षकों की बहाली में उर्दू शिक्षक की बहुत बड़ी संख्या में बहाली हो।

मौके पर झारखंड राज्य अल्पसंख्यक आयोग अध्यक्ष हिदायतुल्ला खान एवं माननीय सदस्य बरकत अली के अलावा अपर समाहर्ता, जिला आपूर्ति पदाधिकारी, जिला कल्याण पदाधिकारी, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी, जिला कृषि पदाधिकारी, जिला शिक्षा पदाधिकारी, जिला शिक्षा अधीक्षक समेत जिला स्तरीय पदाधिकारी व अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

संक्षिप्त

तुपकाडीह हेल्थ सेंटर में डॉक्टर देने की मांग

बोकारो । जैनामोड़ रेफरल अस्पताल द्वारा संचालित तुपकाडीह शिव मंदिर रोड स्थित हेल्थ सेंटर में सप्ताह में एक दिन डाक्टर भेजने की मांग जय हिंद कलामंच के अध्यक्ष राजू महतो ने चिकित्सा प्रभारी डॉ जितेंद्र कुमार से की है। पत्र में कहा गया है कि सेंटर में सभी कर्मी व नर्स आते हैं। जरुरी दवा भी मिलती है, लेकिन डाक्टर नहीं होने के कारण मरीज को रेफरल या सदर अस्पताल जाना पड़ता है। सेंटर में बिजली, पानी व अन्य सुविधाएं मौजूद हैं। सेंटर में 108 एम्बुलेंस भी है। सरकारी डाक्टर नहीं आने के कारण निहायत ही गरीब लोगों को झोला छाप डाक्टरों से इलाज करवाना पड़ता है।

रंजना ने बच्चों को बताई पारंपरिक संगीत की महत्ता

बोकारो। बोकारो की प्रसिद्ध लोक गायिका रंजना राय ने नगर के सेक्टर 9 स्थित सरस्वती शिशु मंदिर में विद्यार्थियों को भारत के पारंपरिक संगीत के संबंध में प्रशिक्षण दिया। उन्होंने पारंपरिक लोकगीतों से बच्चों को अवगत कराया। उन्होंने पारंपरिकता की कड़ी में सावन माह से जुड़े संगीत व लोकगीतों की जानकारी देते हुए भोला बाबा के नचारी, कजरी आदि के बारे में बताया। उन्होंने भोले बाबा डम-डम डमरू बजावे ला हमार जोगिया... समूह वंदना सिखाई। सावन गीत घेरी आई सावन की बदरिया ना..., का ले के शिव के मनावत हो, शिव मानत नहीं... जैसे गीतों की प्रस्तुति कर कार्यक्रम में समां भी बांध दिया। श्रीमती राय ने कहा कि संगीत बच्चों के लिए आवश्यक है। यह उनके मानसिक व शारीरिक विकास के साथ-साथ तनावमुक्त होकर पढ़ाई के प्रति के एकाग्रता बढ़ाने में सहायक है। उन्होंने कहा कि हमारे जीवन में कई प्रकार के संस्कार होते हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक, सोहर से निर्गुण तक सभी प्रकार के पारंपरिक गान हैं। हमारी परंपराएं ही हमारी धरोहर हैं, जिनके बारे में बच्चों को जानकारी होनी चाहिए।

न्युवोको विस्टास का हाइड्रोफोबिक कंक्रीटो यूनो लांच

जमशेदपुर। न्युवोको विस्टास कॉर्प लिमिटेड ने काँक्रीटो यूनो हाइड्रोफोबिक काँक्रीट लॉन्च किया, जो कंस्ट्रक्शन मटेरियल इंडस्ट्री में एक बड़ी सफलता है। अपने एडवांस्ड हाइड्रोफोबिक गुणों के साथ इनोवेटिव डैम्प-लॉक फॉर्मूला के साथ, यह खास और अनूठा काँक्रीट कंस्ट्रक्शन स्टैंडर्ड्स को फिर से डिफाइन करता है। इस संबंध में प्रशांत झा, चीफ रेडी-मिक्स काँक्रीट और मॉडर्न बिल्डिंग मटेरियल ऑफिसर, न्युवोको विस्टास कॉर्प लिमिटेड ने कहा कि काँक्रीटो यूनो हाइड्रोफोबिक काँक्रीट बिल्डिंग मटेरियल इंडस्ट्री में एक गेम-चेंजिंग हाइड्रोफोबिक काँक्रीट है।

कोयला क्षेत्रीय पुलिस ड्यूटी मीट का समापन, मेजबान रहा बोकारो ओवरऑल चैंपियन

नए कानूनों के मुताबिक पुलिसकर्मियों को अपना कौशल बढ़ाने की जरूरत : डीआईजी

प्रातः नागपुरी संवाददाता

बोकारो। बोकारो के कैंप-2 स्थित न्याय सदन के सभागार में आयोजित तीन दिवसीय कोयला क्षेत्रीय पुलिस ड्यूटी मीट 2024 का समापन शुक्रवार को हो गया। तीन दिनों तक विभिन्न तरीके से अनुसंधान व अन्य पुलिसिया कार्यप्रणाली को लेकर चली प्रतियोगिता में मेजबान बोकारो पुलिस ओवरऑल चैंपियन बनी। बोकारो के डॉग स्क्वायड टीम सहित 22 पुलिसकर्मियों को अवार्ड मिला, जबकि धनबाद के 12 पुलिस कर्मियों को अवॉर्ड देकर सम्मानित किया गया। ओवरऑल टॉपर एसआई शैलेंद्र पासवान बने।

जबकि, बीएस सिटी थाना प्रभारी इंस्पेक्टर सुदामा कुमार दास सेकेंड ओवरऑल चैंपियन बने। विजेता टीम को समापन समारोह के मुख्य अतिथि कोयला क्षेत्र के डीआईजी सुरेंद्र कुमार झा ने ट्रॉफी देकर सम्मानित किया।

इस अवसर पर अपने संबोधन में डीआईजी श्री झा ने पुलिस की कार्यप्रणाली में बेहतरी की दिशा में ऐसे आयोजन को महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि नए कानून में फॉरेंसिक एविडेंस के साथ-साथ इलेक्ट्रॉनिक एविडेंस का भी महत्व बढ़ा है। ऐसे में पुलिसकर्मियों को अपना अधिक से अधिक स्किल बढ़ाने की जरूरत है और इस प्रकार का प्रशिक्षण व ऐसी प्रतियोगिताएं इस ओर काफी कारगर हैं। उन्होंने बताया कि अगले साल जनवरी माह में झारखंड के रांची में अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी मीट का आयोजन होने वाला है। इसमें सीआरपीएफ व सीआईएसएफ के जवान भी भाग लेंगे। साथ ही बोकारो में विजेता हुए पुलिसकर्मी रांची में आयोजित पुलिस ड्यूटी मीट में भाग लेंगे।

विभिन्न स्पर्धाओं में इन्होंने जीते पुरस्कार

पुलिस ड्यूटी मीट के तहत आयोजित विभिन्न स्पधाओं में से फॉरेंसिक साइंस लिखित परीक्षा में बोकारो के एसआई शैलेंद्र पासवान प्रथम, द्वितीय धनबाद के इंस्पेक्टर प्रमोद पांडेय व बोकारो के एसआई अमित राय तथा तृतीय बोकारो के जीतेश कुमार रहे। मेडिको लीगल ओरल में बोकारो के इं. सुदामा कुमार दास प्रथम, धनबाद के इं. प्रमोद पांडेय द्वितीय व बोकारो के एसआई शैलेंद्र पासवान तृतीय रहे। प्रदर्शनों को उठाना, पैक करना और अग्रेषित करने में धनबाद के एसआई शैलेंद्र कुमार, बोकारो के शैलेंद्र पासवान व धनबाद के रंजीत यादव प्रथम, द्वितीय व तृतीय रहे। अपराध जांच, कानून, नियम और प्रक्रियाएं और अदालती निर्णय में बोकारो के इं. सुदामा दास प्रथम, बोकारो के इं. संजय कुमार व धनबाद के इं. प्रमोद पांडेय द्वितीय, धनबाद की इं. ममता कुमारी व बोकारो के एसआई शैलेंद्र पासवान तृतीय रहे। फिंगर प्रिंट प्रेक्टिकल व ओरल में प्रथम बोकारो के सुदामा दास, द्वितीय धनबाद के एसआई रंजीत यादव व तृतीय बोकारो के शैलेंद्र पासवान रहे। फोटोग्राफी में बोकारो के एसआई जीतेश कुमार प्रथम, धनबाद के अजय महतो द्वितीय तथा बोकारो के शैलेंद्र पासवान व शोभा टोप्पो तृतीय रहे। अवलोकन परीक्षण और पुलिस चित्र में धनबाद के एएसआई नीलकमल लकरा व कांस्टेबल मो हामिद अंसारी प्रथम व द्वितीय तथा बोकारो के एएसआई नौशाद अली तृतीय रहे। कंप्यूटर अवेयरनेस में बोकारो के कांस्टेबल बजरंग महतो, संजय रजवार व आनंद झा प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर रहे। वहीं डॉग स्क्वॉयड टेस्ट में कांस्टेबल अनिल तिग्गा डॉग मेलविन के साथ बेहतर प्रदर्शन कर चैंपियन बने। सभी को डीआईजी ने अवॉर्ड व मेडल देकर सम्मानित किया।

उच्च न्यायालय में लंबित मामले सहित अन्य का समय से करें निपटारा : उपायुक्त

संवाददाता

धनबाद। उपायुक्त माधवी मिश्रा की अध्यक्षता में शुक्रवार को उच्च न्यायालय में लंबित केस, सर्वोच्च न्यायालय में लंबित केस एवं विभिन्न आयोगों से संबंधित लंबित रिपोर्ट की समीक्षात्मक बैठक समाहरणालय स्थित सभागार में की गई।

बैठक में उच्च न्यायालय झारखंड में जिले के वादों को सससमय निबटारा के लिए उपायुक्त ने लंबित वादों की विभागवार व अंचलवार समीक्षा की। उपायुक्त ने कहा कि उच्च न्यायालय के मामलों को प्राथमिकता देते हुए निष्पादन के कार्य में तेजी लाई जाए। न्यायालय के लंबित मामलों में लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों पर जवाबदेही तय की जाएगी। उन्होंने गंभीर और जटिल मामलों को अविलंब संज्ञान में देने की भी बात कही, ताकि सससमय उसका हल निकाला जा सके।

इसके अलावा उपायुक्त ने सभी अंचलाधिकारियों को लंबित म्यूटेशन, लंबित भू मापी को जल्द निष्पादन हेतु भी आवश्यक दिशा निर्देश दिए। साथ ही सरकारी जमीन पर अवैध कब्जा, सरकारी योजनाओं के लिए भूमि उपलब्ध कराने हेतु भी आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए। उपायुक्त ने अंचलाधिकारियों को सभी माइनिंग प्रोजेक्ट्स का निरीक्षण कर खनन क्षेत्र की एरिया मापी कर 5 अगस्त तक रिपोर्ट देने के लिए निर्देशित किया।

सहारा से जमाकर्ताओं के पैसे लौटाने की पहल करे सरकार : डॉ लंबोदर महतो

संवाददाता

बोकारो। गोमिया विधायक डॉ लंबोदर महतो ने झारखंड विधानसभा के मानसून सत्र के पहले दिन आज सहारा में निवेश करने वाले जमाकताओं की जमा राशि का शीघ्र भुगतान करने की मांग को लेकर धरना दिया। उन्होंने यह धरना विधानसभा के प्रवेश द्वार पर दिया। उन्होंने कहा कि झारखंड राज्य के सहारा में निवेश करने वाले जमाकताओं के अरबों रुपए की परिपक्वता राशि/ जमा राशि का अविलंब भुगतान किए जाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि सहारा में जिन लोगों ने राशि निवेश व जमा किया है, उसका भुगतान किया जाना आवश्यक हो गया है। सहारा में निवेश करने वाले व जमा करने वाले लोग अपनी राशि के भुगतान को लेकर अनेक दरवाजा पर दस्तक दे रहे हैं, बावजूद इसके उन्हें किसी प्रकार की सफलता नहीं मिल रही है। राज्य सरकार को इस मामले में सकारात्मक कार्रवाई करनी चाहिए।

बोकारो में पूर्व सैनिकों ने मनाया कारगिल विजय का रजत जयंती समारोह

संवाददाता

बोकारो । कारगिल विजय के 25 वर्ष पूरे होने की खुशी में पूर्व सैनिक सेवा परिषद की बोकारो इकाई द्वारा रजत जयंती समारोह की परिकल्पना के साथ अपने शहीद सैनिकों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए शुक्रवार को बोकारो इस्पात नगर के सिटी पार्क स्थित शहीद उद्यान में एक श्रद्धांजलि सह-सम्मान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में सेल, बोकारो स्टील प्लांट के मुख्य महाप्रबंधक कुंदन कुमार के अलावा बैंक ऑफ इंडिया के आंचलिक प्रबंधक अश्विनी कुमार मित्तल, पंजाब नेशनल बैंक के मंडल अधिकारी पी के मिश्रा एवं संघचालक बोकारो महानगर, रंजीत वर्णवाल की उपस्थिति रही। सर्वप्रथम मुख्य अतिथि के आगमन पर सरस्वती विद्या मन्दिर, सेक्टर 9 के घोष की टीम ने उनका स्वागत किया और अपनी धुन के साथ उन्हें कार्यक्रम स्थल तक पहुंचाया। सभी शहीद सैनिकों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। घोष ने अपने वादन से समां बांध दिया। इसके बाद उपस्थित सभी व्यक्तियों ने एक-एक कर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये। शहीदों को याद करते हुए उनके सम्मान में दो मिनट के लिए मौन रखा गया। बैंक ऑफ इंडिया के आंचलिक प्रबंधक श्री मित्तल ने अपने वक्तव्य में इस युद्ध के दौरान सैनिकों के योगदान की सराहना करते हुए सैनिकों के प्रति हमेशा सम्मान का भाव रखने को कहा। उन्होंने कहा कि युद्ध में हमारे सैनिकों ने अपने अदम्य साहस, अद्भुत पराक्रम, उत्कृष्ट रणकौशल और अटूट कर्तव्यनिष्ठा को इतिहास के पन्नों में अपने से बेहतर पोजीशन पर, विभिन्न हथियारों से लैश और वो भी घात लगाए दुश्मन पर विजय के रूप में लिख दिया। इसके अशोक जी ने अपने चिर परिचित अंदाज में- है प्रीत जहां की रीत सदा, मैं गीत वहां के गाता हू.. गीत से भावनाओं की बारिश करते हुए अपने उद्गार व्यक्त किए।

कार्यक्रम के पूर्व कारगिल विजय-1999 के अवसर पर परिषद की बोकारो इकाई द्वारा अपने सामाजिक सरोकारों से जुड़े विभिन्न कार्यक्रमों की श्रृंखला का प्रारम्भ 16 जुलाई को ही सरस्वती विद्या मंदिर सेक्टर 3 सी में बहुउपयोगी पौधों के वृक्षारोपण का कार्यक्रम संपन्न हुआ। एक ऑनलाइन चित्रकला प्रतियोगिता भी आयोजित की गई थी, जिसमें प्रथम विजेता स्नेहा कुमारी को स्मृति फलक प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर आशा लता केन्द्र के दिव्यांग बच्चों की भी उपस्थिति प्रेरक रही।

कारगिल युद्ध के कुछ जांवाजों ने अपने यादगार पलों को साझा किया, जो काफी रोमांचित करने वाला और जोश भरने वाला था। सभी पूर्व सैनिकों के साथ-साथ अन्य उपस्थित नागरिकों के भारत माता की जय, वंदे मातरम एवं वीर शहीद अमर रहें के नारों से आकाश गुंजायमान हो गया। इस कार्यक्रम में महानगर कारवाह रतन जी, विस्तारक सुधीर जी, महाराणा विचार मंच के अध्यक्ष उदय कुमार सिंह, जनसंख्या समाधान फाऊंडेशन के राष्ट्रीय संयोजक कौशल किशोर, एस एन दास, विद्या भारती से जितेन्द्र जी, विवेक सिंह, चैतन्य श्री, रोहित लाल सिंह, अशोक कुमार वर्मा, मृगेंद्र प्रताप सिंह, चंद्रशेखर कुमार, राजेश दुबे, सजीव कुमार जी, जैनेंद्र कुमार, प्रशांत जी के साथ-साथ सैकड़ों पूर्व सैनिकों और नागरिकों की भी उपस्थिति थी।

तीन दशक बाद अपने विद्यालय पहुंच 1993 बैच के छात्र अनंत ने साझा कीं यादें, विद्यार्थियों का किया मार्गदर्शन

आत्मविश्वास ही सफलता का सूत्र : अपर नगर आयुक्त

संवाददाता

बोकारो। दिल्ली पब्लिक स्कूल (डीपीएस) बोकारो में 1993 बैच के मेधावी छात्र रहे झारखंड प्रशासनिक सेवा अधिकारी अनंत कुमार शुक्रवार को तीन दशक के बाद अपने पुराने विद्यालय पहुंचे। चास नगर निगम के अपर नगर आयुक्त (एएमसी) एवं बेरमो के पूर्व अनुमंडल पदाधिकारी अनंत कुमार ने विद्यालय में 30 साल पहले बिताए अपने स्वर्णिम क्षण एवं स्मृतियां साझा करते हुए 11वीं एवं 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया।

अतिथि व्याख्यानशाला को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि 10वीं के बाद विद्यार्थियों के लिए वह समय होता है, जब वे अपने सपने बुनते हैं। उन सपनों को पूरा करने के लिए जरूरी है कि वे बगैर किसी के दबाव में आए अपनी क्षमता और रुचि को ध्यान में रखकर ही अपना करियर चुनें। दृढ़ निर्णय के साथ अपना लक्ष्य बनाएं और उसे पाने के लिए लगन, परिश्रम और आत्मविश्वास के साथ निरंतरता बनाए रखें। ये चीजें ही उनके लिए भाग्य-निमार्ता बनेंगी। उन्होंने कहा कि शिक्षा का मूल उद्देश्य मानवीय चेतना का विकास करना है। एक सफल और अच्छा इंसान बनने के लिए विद्यार्थी सदैव अपना नैतिक मूल्य और अपनी विनम्रता बरकरार रखें। साथ ही, अपनी विचारधारा को सकारात्मक रखते हुए राष्ट्र-निर्माण में योगदान दें।तीन दशक पहले विद्यालय में अपने छात्र-जीवन के अनुभव साझा करते हुए उन्होंने कहा कि आज वह जो भी कुछ भी हैं, जिस मुकाम पर हैं, उसमें डीपीएस बोकारो की केंद्रीय भूमिका है। यहां की कुशल शैक्षणिक-व्यवस्था और शिक्षकों तथा विद्यार्थियों के समेकित प्रयत्नों का ही परिणाम है कि आज डीपीएस बोकारो शिक्षा के क्षेत्र में एक ब्रांड बन चुका है। आज के विद्यार्थी यहां के उन्नत संसाधनों का लाभ लें। उन्होंने छात्र-छात्राओं से व्यक्तित्व-विकास के लिए खेलकूद, कला-संगीत सहित सभी सह-शैक्षिक गतिविधियों में भाग लेने, स्वास्थ्य को प्रथम प्राथमिकता देने, ज्ञान के स्तर में बढ़ोतरी हेतु नियमित समाचार-पत्र पढ़ने तथा सोशल मीडिया का संतुलित इस्तेमाल करने की भी अपील की। उन्होंने यह भी कहा कि विद्यार्थी अपने जीवन का आनंद लें, मित्रता करें और किसी भी असफलता से घबराने की बजाय उससे सीख लें।विद्यालय के प्राचार्य डॉ. ए एस गंगवार ने इस प्रकार की अतिथि व्याख्यानशाला को विद्यार्थियों के हित में आवश्यक बताया। उन्होंने कहा कि समय-समय पर ऐसे कार्यक्रमों से जरिए छात्र-छात्राओं का मार्गदर्शन किया जाता रहा है। उन्होंने अपर नगर आयुक्त श्री कुमार के व्याख्यान के लिए आभार व्यक्त किया। श्री कुमार ने भी व्याख्यान के अवसर को लेकर अपनी कृतज्ञता व्यक्त की।

शिक्षक संघ ने राज्य परियोजना निदेशक के अपमानजनक वक्तव्य का किया विरोध

संवाददाता

बोकारो । झारखंड +2 शिक्षक संघ, जिला इकाई बोकारो की बैठक गूगल मीट के माध्यम से जिलाध्यक्ष पंकज कुमार सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। श्री सिंह ने राज्य परियोजना निदेशक आदित्य रंजन द्वारा आपत्तिजनक शब्दों का इस्तेमाल किए जाने की निंदा की एवं कहा कि इसका नकारात्मक प्रभाव शिक्षकों पर पड़ेगा। बैठक में जिला सचिव डॉ अवनीश कुमार झा ने राज्य परियोजना निदेशक आदित्य रंजन के बयान पर आश्चर्य प्रकट किया एवं कहा कि शिक्षक प्रेम की भाषा जानते हैं और उनके लिए अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल मानव जाति का अपमान है।

जिला संरक्षक डॉ अजय कुमार पाठक ने कहा कि राज्य परियोजना निदेशक के वक्तव्य से शिक्षकों में निराशा का भाव उत्पन्न हुआ है। उन्होंने कहा कि डरा-धमका कर कार्य करवाना अनुचित है। उपाध्यक्ष कौशल कुमार मुखर्जी ने राज्य परियोजना निदेशक के हाल के वक्तव्य को लेकर कहा कि ऐसे घुटन भरे माहौल में काम करना बड़ी चुनौती है। शिक्षकों एवं पदाधिकारियों को अपने दायरे में रहकर काम करना जरूरी है। उपाध्यक्ष श्रुति ताह ने अपने संबोधन में कहा कि शिक्षकों में भय का माहौल व्याप्त है। पदाधिकारियों द्वारा अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल अस्वीकार्य है। संयुक्त सचिव राजेश कुमार विश्वकर्मा ने राज्य परियोजना निदेशक के बयान को शर्मनाक बताया एवं कहा कि बदले हुए हालात में शिक्षा व्यवस्था तनावग्रस्त प्रक्रिया हो गई है। पठन-पाठन के अलावा बहुत से कार्य दे दिए गए हैं। शिक्षक आज अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है। कोषाध्यक्ष राजदेव साहू ने राज्य परियोजना निदेशक के बयान पर क्षोभ व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि शिक्षकों को बार-बार दंडात्मक कार्रवाई की धमकी देना उचित नहीं है। विद्यालयों में उपलब्ध राशि का कैसे सुगमतापूर्वक इस्तेमाल हो, इसको बताने में विभाग की कोई रुचि नहीं है। प्रवक्ता - सह-मीडिया प्रभारी गौरव कुमार दुबे ने राज्य परियोजना निदेशक के शिक्षकों पर दिए गए अपमानजनक वक्तव्य की निंदा की एवं कहा कि शिक्षकों को आकलन परीक्षा में शामिल करवा कर जबरन स्थानांतरण करना उचित नहीं है। प्रांतीय गुणात्मक शिक्षा समिति सदस्य धनंजय कुमार ने वर्तमान हालात को भयावह करार दिया एवं कहा कि आजकल शिक्षक काफी परेशान रहते हैं। डरा-धमकाकर बदलाव लाना संभव नहीं है। संघ के सदस्य कपिल देव ठाकुर ने सवाल किया कि हर चीज के लिए शिक्षक को ही दोषी क्यों ठहराया जाता है। बच्चों के नामांकन की कोई सीमा नहीं है। नित्य-प्रतिदिन राज्य एवं जिलास्तर से नए-नए फरमान आते रहते हैं। शिक्षकों का मानसिक दोहन हो रहा है। बैठक को सदस्य गोरांग प्रसाद गोराई, मुकेश कुमार गुप्ता, जय प्रकाश रजक, मनंजय कुमार आदि ने भी संबोधित किया। बैठक में उपाध्यक्ष दीपा पंकज लाटा, राज्य प्रतिनिधि संतोष कुमार महतो एवं सदस्य चंद्र नारायण सिंह भी उपस्थित थे।

प्राथमिक विद्यालय अभिभावक कमिटी की मासिक बैठक

जमशेदपुर। वारिस कॉलोनी प्राथमिक विद्यालय में अभिभावक समिति की एक आवश्यक बैठक हुई जिसमें मुख्य अतिथि के तौर पर मानगो नगर निगम के ब्रांड एम्बेसडर मुख्तार आलम खान उपस्थित थे।बैठक में प्रधान अध्यापिका मेहर जहां सहायक शिक्षक अनवर फातिमा शिक्षा समिति की सदस्य जहां आरा तबस्सुम परवीन जबीरून खातून परवीन खातून आरिफा खातून समरून खातून रौशन परवीन उपस्थित थी।बैठक में निर्णय लिया गया के बरसात के समय बच्चे घर जाने के समय कपड़े गंदा कर देते है जिस पर अभिभावकों से अनुरोध किया गया के वो उनके स्कूल के यूनिफॉर्म को साफ कर के उन्हें अगले दिन स्कूल भेजे और आस पड़ोस के जो बच्चे स्कूल नहीं जाते उनके माता पिता से अनुरोध कर उनका भी स्कूल ने नामांकन करवाए।

डीपीएस चास में देशभक्ति थीम पर आर्केस्ट्रा प्रतियोगिता आयोजित

रंग-बिरंगे परिधानों में सजे बच्चों ने देशभक्ति धुनों पर बिखेरा जलवा

प्रातः नागपुरी संवाददाता

बोकारो । दिल्ली पब्लिक स्कूल चास का सभागार धुनों और मनमोहक प्रस्तुतियों से गूंज उठा, जब विद्यालय नेह्वदेशभक्तिह्व थीम पर एक आकर्षक इंटर हाउस आर्केस्ट्रा प्रतियोगिता का आयोजन किया।

इस कार्यक्रम में सभी चारों सदनों के प्रतिभागियों ने भाग लिया। देशभक्ति थीम पर आधारित वेशभूषा पहने, उभरते संगीतकारों ने अपने मंत्रमुग्ध कर देने वाले आर्केस्ट्रा प्रदर्शन से मंच पर आकर्षक दृश्य उपस्थित किया। बाल तथा युवा संगीतकारों ने कुशलतापूर्वक देश भक्ति धुनों को जीवंत कर दिया, जो समय की कसौटी पर खरी उतरी हैं। कार्यक्रम की शुरूआत मुख्य अतिथि विद्यालय की चीफ मेंटर डॉ हेमलता एस मोहन तथा विशिष्ट अतिथि विद्यालय के प्रो वाइस चेयरमैन एन मुरलीधरन के गर्मजोशी से स्वागत के साथ हुई। सबसे पहले जूनियर विंग के गंगा सदन के बच्चों ने दादरा ताल, यमुना सदन ने रूपक ताल, चेनाब सदन ने तीन ताल तथा सतलज सदन ने कहरवा ताल की प्रस्तुतियां दीं। बेहतर प्रदर्शन के आधार पर जूनियर विंग में यमुना सदन को प्रथम, गंगा सदन को द्वितीय तथा चेनाब सदन को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।

सीनियर विंग में गंगा सदन ने अविस्मरणीय स्वर्ग से सुंदर थीम के साथ धूम मचा दी। जमुना सदन ने मिले सुर मेरा तुम्हारा गाने की प्रस्तुति से जादू बिखेरकर दर्शकों को आश्चर्यचकित कर दिया। चेनाब सदन ने दिल को झकझोर देने वाले वंदे मातरम के साथ गहरा भावनात्मक राग छेड़ा तो सतलज सदन ने बंगाली देशभक्ति गीत की प्रतिष्ठित धुनों से लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। बेहतर प्रदर्शन के आधार पर सतलज सदन ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, गंगा सदन ने दूसरा स्थान, जबकि तीसरा स्थान यमुना सदन ने प्राप्त किया। मुख्य अतिथि डॉ मोहन ने छात्रों की रचनात्मकता और कलात्मक कौशल को देखकर प्रसन्नता जाहिर की। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजनों से छात्रों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा और एकता की भावना बढ़ती है। साथ ही ये हमारी सांस्कृतिक जड़ों को संरक्षित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। इससे छात्रों को जीवन में सामाजिक कौशल विकसित करने में भी मदद मिलती है।

निर्णायक मंडल में भारतीय संगीत कला अकादमी के डॉ राकेश रंजन, त्रिसप्तिका संस्था के निदेशक तथा गिटार प्राध्यापक डॉ धनंजय चक्रवर्ती तथा संस्कार भारती के पूर्व सचिव जगदीश बावला उपस्थित थे। प्रभारी प्राचार्या दीपाली भुस्कुटे ने उल्लेखनीय प्रतिबद्धता के प्रदर्शन के लिए प्रत्येक सदन की सराहना की। प्रधानाध्यापिका सुदेशना सिन्हा ने कहा कि यह एक साथ सीखने और बढ़ने का अवसर भी प्रदान करता है।

उन्होंने हाउस वार्डन और शिक्षकों द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की। डीपीएस मेमोरियल सोसायटी चास के सचिव सुरेश अग्रवाल ने बच्चों के प्रदर्शन पर खुशी व्यक्त करते हुए उन्हें बधाई दी। धन्यवाद ज्ञापन शिक्षक विवेक कुमार ने किया तथा सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन शिक्षक वीरेंद्र सिंह व विवेक कुमार के निर्देशन में कक्षा ग्यारहवीं की ज्योत्सना राज तथा नौवीं की मन्नत जहां ने किया।

कारगिल के शहीदों को नमन

प्रेम कुमार धूमल

उस ऐतिहासिक क्षण में श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी का यह कथन 'जब तक एक भी घुसपैठिया कारगिल में है, तब तक न युद्ध विराम होगा और न मैं देश छोड़कर कहीं जाऊंगा' इतिहास के स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा । प्रधानमन्त्री के इस दृढ़संकल्प को देखते हुये सारे राष्ट्र में एक नई ऊर्जा आ गई और सैनिकों में यह संकल्प और दृढ़ हो गया और भारत की वीर सेना ने निर्णायक विजय प्राप्त की ।

देश में राष्ट्रभक्ति का गजब का माहौल था ऐसा लगता था सारा भारत एक है, देश की एकता, अखण्डता, सर्वभौमिकता बचाये रखने के लिये कुछ भी कर गुजरने को तैयार था । कारगिल का संघर्ष क्या शुरू हुआ ऐसा लगा जैसे सारा राष्ट्र और राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक देष के लिये कोई भी कुबार्नी देने को तैयार था । विश्व के इतिहास में पहली बार हुआ जब देशाभक्ति से ओत-प्रोत विश्व के सबसे बड़े लोकतन्त्र के प्रधानमन्त्री, अटल जी सभी चुनौतियों, चेतावनियों और व्यक्तिगत सुरक्षा के खतरों को नजर अन्दाज करते हुये 2 जुलाई 1999 को सीमा पर तैनात युद्वरत सैनिकों की पीठ थपथपाने के लिये स्वयं सीमा पर जा पहुंचे । आप अनुमान लगा सकते हैं कि प्रधानमन्त्री को अपने साथ सीमा पर खड़ा देखकर सैनिकों का साहस तो सातवें आसमान पर पहुंचना स्वभाविक था । 5 जुलाई 1999 को कारगिल के युद्व क्षेत्र में जाने के बाद श्रीनगर के सैनिक अस्पताल में उपचाराधीन घायल सैनिकों को दैनिक उपयोग का आवश्यक सामान दे रहे थे, एक जवान चादर ओढ़े हुये लेटा था उसने सामान पकड़ा नहीं, हमने विस्तर के साईड टेबल पर सामान रखा और आगे बढ़ने लगे तभी डॉक्टर ने कहा कि माईन ब्लास्ट में इस वीर सैनिक के दोनों हाथ और दोनों पैर चले गये थे । हम फिर मुड़े और पूछा, 'बहुत दर्द होता होगा', सैनिक ने उतर दिया, 'कल शाम से नहीं हो रहा है' । हमने पूछा क्या कोई (पेन किलर) दर्द निवारक दवाई ली या टीका लगा ? उसने उतर दिया ह्यह्यनहीं, कल शाम (4 जुलाई को) टाईगर हिल वापस ले लिया और तिरंगा फहरा दिया, मेरा दर्द चला गया । राष्टभक्ति और मातृभूमि के प्रति समर्पण की भावना को शत शत नमन ।

आजकल एक और विवाद मीडिया में देखने को मिला यहां शहीद की नौजवान विधवा ने मरणोपरान्त मिलने वाले सम्मान को शहीद के मॉ-बाप के साथ सांझा करना उचित नहीं समझा। ऐसी समस्यायें आप्रेशन विजय के बाद भी आई थीं, अधिकतर विधवायें नवविवाहिता थीं और उनका पुनर्विवाह होना स्वभाविक और न्यायोचित भी था परन्तु बजुर्ग मॉ-बाप का सहारा भी तो शहीद जवान ही होता था इसलिये पुनर्विवाह के समय प्रदेश और केन्द्र सरकार की ओर से मिली सारी की सारी अनुदान राषि, पैट्रोल पम्प या गैस एजैन्सी आदि सभी को साथ ले जाना मॉ-बाप के साथ अन्याय था क्योंकि अधिकतर मामलों में गरीब मॉ-बाप ने अपना पेट काट कर बेटे को पाला पोसा होता था और बुढ़ापे में नौजवान बेटे की शहादत और बहु का सब कुछ

अपने साथ ले जाना उनके लिये दोहरा अघात होता था। इसलिये हमने प्रदेश कैबिनेट की बैठक में सारी परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुये निर्णय लिया कि अगर तो पुनर्विवाह उसी परिवार में होता है तो सभी कुछ वैसे ही रहेगा लेकिन यदि वीर नारी कहीं दूसरी जगह शादी करती है तो सरकार की ओर से मिली राषि दो हिस्सों बांट दी जायेगी । आधी राषि उस युद्व विधवा को और आधी राषि बूढ़े मॉ-बाप को दी जायेगी और यदि शहीद के बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे हों और मॉ तथा दादा-दादी से अलग रहते हों तो राषि तीन भागों में बांटी जायेगी और एक तिहाई बच्चों को दी जायेगी। इस निर्णय से सभी की समस्या का समाधान हो गया ।

राष्ट्रभक्ति के साथ साथ एक दूसरे के प्रति सम्बेदनशीलता के भी कई उदाहरण देखने को मिले, शामिला जिले का एक अनुसूचित जाति से सम्बन्ध रखने वाला जवान शहीद हुआ था, घर की अर्थिक स्थिति भी कमजोर थी । जब हमने अनुग्रह राषि उन्हें दी तो उस गरीब परिवार ने कहा हमें आधी राषि ही दीजिए, अभी युद्व चल रहा है और शहीद हो रहे हैं और आपको कई और परिवारों की सहायता करनी है, हमें आधी राशाी दे दो बाकि किसी और परिवार के काम आ जायेगी । शहीद की शहादत को तो नमन था ही पर गरीब परिवार की सम्बेदनशीलता और दूसरों के प्रति समर्पण की भावना से हम सभी द्रवित हो गये और उन्हें धन्यवाद देते हुये हमने कहा कि राषि आपके लिये ही है और आवश्यकता होगी तो लोग योगदान दे ही रहे हैं ।

पालमपुर में तो जहां एक ओर प्रथम परमवीर चक्र विजेता, मेजर सोमनाथ शर्मा वहीं कारगिल युद्व के नायक कै. विक्रम बतरा, परमवीर चक्र विजेता का भी घर है, उस दिन हम कै. विक्रम बतरा के पार्थिव शरीर का इन्तजार कर रहे थे वहीं पर कारगिल युद्व के प्रथम शहीद कै. सौरभ कालिया की माता जी, विजय कालिया और कै. विक्रम बतरा की माता जी साथ साथ बैठी थीं । विजय कालिया श्रीमति बतरा को ढांढस बंधा रही थीं, एक महान मां दूसरी महान माता को साहस बंधा रही थी, शायद यही जीवन है।

इसी प्रकार जिला बिलासपुर की एक बहादुर मां, कौषल्या देवी जी जब मिली तो अन्होंने कहा, 'धूमल जी कल मंगल सिंह की अर्थी को डेढ किलो मीटर मैंने कंधा दिया'। मैंने पहली बार सुना कि शहीद की मॉ ने अपने शहीद सुपुत्र की अर्थी को कंधा दिया हो । शहीद की शहादत और मॉ की हिम्मत को सलाम ।

सोलन जिला मुख्यालय में चपरासी के पद पर नियुक्त एक व्यक्ति का सैनिक बेटा शहीद हो गया, अन्तिम संस्कार में भाग लेने के बाद हम उसके घर ढांढस बंधाने के लिये गये। शहीद की मॉ ने कहा मेरा बेटा देश के काम आ गया, दूसरा बेटा दसवीं कक्षा में पढ़ रहा है यह भी पढ़कर फौज में भर्ती होगा और देश की सेवा करेगा।

जिला हमीरपुर के बमसन क्षेत्र में पहाड़ी के ऊपर एक बगलू गांव है यहां से राज कुमार सुपुत्र खजान सिंह शहीद हुये थे। चढ़ाई चढ़ते मैं सोच रहा था कि शहीद के बजुर्ग पिता जी से कैसे बात करूंगा । मैं उनके आंगन में पहुंच गया और इससे पहले कि मैं कुछ बोलता, खजान सिंह बोले, 'धूमल साहब, बेटे तो पैदा ही इसलिये किये जाते हैं कि पढ़ें, लिखें और बड़े होकर फौज में भर्ती हों और देश की रक्षा करें । उन्होंने अपने दोनो पोते मुझे मिलाये और कहा ये भी पढ़कर फौज में भर्ती होंगे और देश की सेवा करेंगे । उन्होंने मुझे कहा आप दिल्ली जायेंगे तो प्रधानमन्त्री, वाजपेयी जी को कहना कि जवानों की यदि कमी हो तो 82 वर्ष का हबलदार खजान सिंह आज भी हथियार उठाकर देष की रक्षा करने के लिये तैयार है ।

शहीदों का आदम्य साहस, परिवारों का सम्पूर्ण समर्पण, अटल जी का दृढ़निष्चयी नेतृत्व सदियों तक देष के लिये प्रेरणा रहेगा ।

5 जुलाई को जब अमेरिका के राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने आदरणीय अटल जी को फोन करके कहा कि पाकिस्तान के प्रधानमन्त्री नवाज शरीफ इनके पास पहुंच गये हैं और अटल जी से आग्रह किया कि वे भी युद्व विराम की घोषणा कर दें और अमेरिका आ जायें ताकि समस्या का सर्वमान्य हल निकाला जा सके ।

उस ऐतिहासिक क्षण में श्रद्वेय अटल बिहारी वाजपेयी का यह कथन 'जब तक एक भी घुसपैठिया कारगिल में है, तब तक न युद्व विराम होगा और न मैं देश छोड़कर कहीं जाऊंगा' इतिहास के स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा ।

प्रधानमन्त्री के इस दृढ़संकल्प को देखते हुये सारे राष्ट्र में एक नई ऊर्जा आ गई और सैनिकों में यह संकल्प और दृढ़ हो गया और भारत की वीर सेना ने निर्णायक विजय प्राप्त की ।

कारगिल से वापसी पर हम प्रभु अमरनाथ की पवित्र गुफा के पास उतरे, दर्षन किये और संयोग से टाईगर हिल विजय प्राप्त करने वाले जवान भी उसी समय गुफा में दर्षन करने के लिये आये हमने उन से चर्चा की और नरेन्द्र मोदी जी ने तो उनके हथियार लेकर उन हथियारों के बारे में जानकारी भी ली ।

यह उचित ही है कि 26 जुलाई को प्रतिवर्ष हम कारगिल विजय दिवस मनाते हैं और उन शहीदों को श्रद्वासुमन अर्पित करते हैं । ठीक ही कहा है 'शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर वर्ष मेले, वतन पर मिटने वालों का यही निशां होगा'।

-(लेखक हिमाचल के पूर्व मुख्यमन्त्री रहे हैं व कारगिल युद्व के समय मुख्यमन्त्री थे।)

संपादकीय

अनावश्यक फैसला

भारतीय राजनीति में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) किसी न किसी कारण से हमेशा चर्चा और विवादों के केंद्र में रहा है। अभी पिछले दिनों केंद्र सरकार ने सरकारी कर्मचारियों पर आरएसएस की गतिविधियों में हिस्सा लेने पर लगे करीब छह दशक पुराने प्रतिबंध को हटाने का फैसला लिया है जिसे बुद्धिमत्तापूर्ण नहीं कहा जा सकता। जाहिर है कि राजनीतिक क्षेत्रों में इस फैसले की कड़ी आलोचना हो रही है। आरोप लगाया जा रहा है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कर्मचारियों को वैचारिक आधार पर विभाजित करना चाहते हैं। वस्तुतः आरएसएस की चाहे जितनी आलोचना या निंदा की जाए लेकिन राष्ट्र के उत्थान में इस संगठन की सार्थक भूमिका को नजरंदाज नहीं किया जा सकता। ब्रिटिश सरकार में भी 1932 में सरकारी कर्मचारियों की आरएसएस की गतिविधियों में भाग लेने पर प्रतिबंध लगाया था लेकिन इस प्रतिबंध के कारण आरएसएस के विस्तार में रुकावट नहीं आई। यह संगठन अपने ध्येय को लेकर आगे बढ़ख्ता गया। आरएसएस अपनी स्थापना के शताब्दी वर्ष में प्रवेश करने जा रहा है और अब यह संगठन समाज की मुख्यधारा में है। आरएसएस पर महात्मा गांधी की हत्या, आपातकाल और बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद प्रतिबंध लगाया गया। लेकिन क्या यह हैरानी की बात नहीं है कि इतने प्रतिबंधों के बावजूद इस संगठन से जुड़े.हुए लोग आज देश के शीर्ष पदों पर आसीन हैं। कुछ लोग संघ और सरकार के बीच संबंधों की तुलना चर्च और राज्य के रिश्ते से करते हैं। उनका विश्वास है कि धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक देश में चर्च और राज्य के बीच विभाजन रेखा का सम्मान किया जाता है लेकिन आरएसएस दावा करता है कि वह सामाजिक-सांस्कृतिक संगठन है और राजनीति एवं धर्म से इसका दूर-दूर तक रिश्ता नहीं है। आरएसएस पर ब्रिटिश सरकार से लेकर आज तक हमले होते रहे हैं लेकिन अपनी स्थापना के सौ वर्षों में यह संगठन बरगद का रूप ले चुका है। पूर्वोत्तर भारत यदि देश की मुख्यधारा में शामिल हुआ है तो इसका श्रेय आरएसएस को ही दिया जाना चाहिए। सरकारी कर्मचारियों के लिए आरएसएस का द्वार खोलने का केंद्र सरकार का फैसला एक नये विवाद को जन्म देने वाला है। संघ को इसकी कोई आवश्यकता नहीं थी।

चिंतन-मनन

सत्ता-संपदा का उन्माद

मनुष्य विचारशील प्राणी है, विवेकशील प्राणी है। उसके पास बुद्धि है, शक्ति है। वह अपनी बुद्धि का उपयोग करता है, चिंतन के हर कोण पर रुकता है, विवेक को जगाता है, शक्ति का नियोजन करता है और संसार के अन्य प्राणियों से बेहतर जीवन जीता है। जीने के लिए वह अनेक प्रकार की सुविधाओं को जुटाता है। सत्ता और संपदा ये तो ऐसे तत्व हैं, जिनका आकषर्ण अधिकांश लोगों को बना रहता है। सत्ता के मूल में सेवा की भावना है और संपदा के मूल में जीवनयापन की। न सत्ता के बल पर कोई व्यक्ति बड़ा बनता है और न संपदा ही किसी को शिखर पर बिठा सकती है। जो लोग सेवा की पवित्र भावना से सत्ता के गलियारे में पांव रखते हैं और जीवनयापन के साधन के रूप में अर्थ का उपयोग करते हैं, वे सत्ता और संपदा प्राप्त करके भी कुछ अतिरिक्त अनुभव नहीं करते। सहज सादगीमय जीवन जीते हुए वे सत्ता और संपदा के द्वारा हितकारी प्रवृत्तियों में संलग्न हो जाते हैं।

कुछ लोगों की अवधारणा है कि व्यक्ति का अस्तित्व और व्यक्तित्व सत्ता और संपदा पर ही निर्भर है। इसलिए वे जैसे-तैसे इन्हें हथियाने का प्रयास करते हैं और ये हस्तगत हो जाएं तो इनका उचित-अनुचित लाभ भी उठा लेते हैं। ऐसे लोगों में न तो सेवा की भावना होती है और न ही वे उपयोगितावादी दृष्टि से अर्थ का अंकन करते हैं। इनके द्वारा अहंकार बढ़ता है और वे स्वयं को आम आदमी से बहुत बड़ा मानने लगते हैं। यहीं से एक भेद-रेखा बनने लगती है, जो सत्ताधीश और संपत्तिशाली को दूसरे नजरिए से देखने का धरातल तैयार करती है। जिस व्यक्ति के पास सत्ता हो और संपदा हो, फिर भी उन्माद न हो; बहुत कठिन बात है। इन दोनों में से एक पर अधिकार पाने वाला व्यक्ति भी मूढ़ हो सकता है। जहां दोनों का योग हो जाए, वहां मूढ़ता न आए, यह तो संभव ही नहीं है। इस बात को सब लोग जानते हैं, फिर भी सत्ता और संपदा पाने की आकांक्षा का संवरण नहीं होता। जिनकी आकांक्षा पूरी हो जाती है, वे सौभाग्य से ही मूढ़ता से बच पाते हैं। किंतु जिनकी आकांक्षा पूरी नहीं होती, वे एक दूसरे प्रकार के उन्माद का शिकार हो जाते हैं।

बातचीत से ही खुलेंगी किसान आंदोलन की समाधान राहें

ललित गर्ग

मोदी सरकार 3.0 के पहले बजट में वित्त मंत्री ने सरकार की जिन 9 प्राथमिक्ताओं का जिक्र किया उसमें विकसित भारत लिये रोजगार, महंगाई नियंत्रण, कृषि, महिला-युवा विकास के साथ-साथ मध्यम वर्ग के लिये पहली बार सकारात्मक सोच सामने आयी है। बावजूद इसके विपक्षी दल किसी न किसी बहाने उसका विरोध करते हुए संसद में हंगामा बरपा रहे हैं। सभी क्षेत्रों के लिये न्यायसंगत एवं विकास योजनाओं के बावजूद विरोध होना अतिश्योक्तिपूर्ण है। विपक्षी दल इस आरोप के सहारे बजट का विरोध कर रहे हैं कि उसमें अन्य राज्यों के साथ भेदभाव किया गया है। इस विरोध का आधार बिहार और आंध्र प्रदेश की विभिन्न विकास योजनाओं के लिए विशेष घोषणाएं के साथ न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की वैधानिक गारंटी और अन्य मांगों को लेकर किसी तरह की घोषणा न करने के मुद्दे हैं। विपक्षी दल किसान आन्दोलन को उग्र करने के प्रयास करेंगे। ऐसा इसलिये भी लग रहा है कि बुधवार को ही नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी से नई दिल्ली में मुलाकात करने के बाद किसान नेताओं ने साफ भी कर दिया है कि दिल्ली मार्च का उनका कार्यक्रम जारी रहेगा। संसद सत्र जारी है, ऐसे में किसान आंदोलन को लेकर प्रतिपक्ष सरकार पर हमलावर होगा, एक बार फिर किसान आन्दोलन के उग्र से उग्रतर होने की संभावनाएं हैं, जिससे आम जनता को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

सुप्रीम कोर्ट ने किसान-आन्दोलन से जुड़े मामले की सुनवाई करते हुए पंजाब-हरियाणा से सटे शंभू बॉर्डर पर यथास्थिति बनाए रखने का औचित्यपूर्ण आदेश दिया है। सुप्रीम कोर्ट की यह टिप्पणी अहम है कि एक 'तटस्थ मध्यस्थ' की आवश्यकता है जो सरकार और किसानों के बीच विश्वास कायम कर सके। सुप्रीम कोर्ट ने इसके लिए स्वतंत्र विशेषज्ञों की एक कमेटी बनाने का प्रस्ताव भी दिया है। प्रश्न है कि कांग्रेस एवं अन्य विपक्षी दल न्यायालय के इस महत्वपूर्ण सुझाव को आकार देने की बजाय किसान-आन्दोलन को उग्र करने की मंशा रखते हुए अराजक माहौल ही क्यों बनाना चाहते है? क्यों अव्यवस्था फैलाने चाहते हैं? निश्चित ही शंभू बॉर्डर खोले जाने पर कानून-व्यवस्था को लेकर संकट की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। यह बात सही है कि शंभू बॉर्डर खोले जाने से आंदोलनरत किसानों के दिल्ली कूच की राह खुल सकती है। आंदोलनरत किसान संगठन पहले ही ऐलान कर चुके हैं कि जब भी सीमाएं खुलेंगी, किसान ट्रैक्टर ट्रोलियों के साथ दिल्ली की ओर बढ़ेंगे। शीर्ष अदालत हरियाणा सरकार की उस याचिका पर सुनवाई कर रही थी जिसमें उच्च न्यायालय के उस आदेश को चुनौती दी गई है जिसमें उसे एक सप्ताह के भीतर अंबाला के पास शंभू सीमा पर बैरिकेड्स हटाने के लिए कहा गया था जहां किसान 13 फरवरी से डेरा डाले हुए हैं।

केन्द्र सरकार एवं विपक्षी दलों को मिलकर इस विकट समस्या का समाधान निकालने के लिये कोई सार्थक प्रयास करने चाहिए। किसानों के भरोसे को जीतने की कोशिश होनी चाहिए। लेकिन नेशनल हाई-वे पर जेसीबी और बख्तरबंद ट्रैक्टर ट्रॉली की इजाजत तो इस समस्या का समाधान नहीं है। सुप्रीम कोर्ट ने विशेषज्ञों की समिति के जरिए बातचीत का जो प्रस्ताव दिया है उस पर सरकार की प्रतिक्रिया आनी बाकी है। लेकिन दोनों पक्षों को ही आंदोलन खत्म करने के लिए बातचीत के माध्यम से समाधान का रास्ता निकालने की पहल करनी होगी। किसान आंदोलन के उग्र रूप को भी यह देश देख चुका है, भारी नुकसान भी हुआ है। किसानों की समस्याएं अपनी जगह हैं और इनकी आड़ में होने वाली राजनीति अपनी जगह। वैसे भी स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशें लागू करने, न्यूनतम समर्थन मूल्य की कानूनी गारंटी और कर्ज माफी जैसे मुद्दों पर समिति के गठन का प्रस्ताव केन्द्र सरकार पहले ही दे चुकी है। यह बड़ा सच है कि बात करने से ही बात बनती है। बातचीत की हर संभावना का स्वागत किया जाना चाहिए। किसी भी आंदोलन का लंबे वक्त तक जारी रहना सचमुच चिंताजनक है। ऐसे आन्दोलन को उग्र करने की विपक्षी दलों की मानसिकता भी संदेहों एवं अविश्वासों से घिरी है। अच्छा हो कि विपक्षी दल एवं नेता प्रचार पाने के लिए विरोध की बेतुकी रस्म निभाने के बजाय बजट में कृषि क्षेत्र के लिये किये गये बड़े ऐलानों पर गौर करें। सरकार ने एग्रीकल्चर सेक्टर के लिए कई बड़े ऐलान किए हैं। इनमें कृषि उत्पादकता को बढ़ाने और जलवायु परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए मौसम में बदलाव को बरदाश्त कर सकने वाली फसलों की प्रजातियों को विकसित करने पर जोर दिया गया है। इसके लिए एग्रीकल्चर रिसर्च के बजट को भी बढ़ाया गया है।

विपक्षी पार्टियां लगातार किसानों एवं कृषि को लेकर सरकार को घेरने का प्रयास कर रही हैं। कोई न कोई बहाना चाहिए विरोध का, अब किसान-आन्दोलन के सहारे अपनी राजनीति चमकाने की जुगत में देश का कितना नुकसान होगा, कहा नहीं जा सकता। जबकि भाजपा सरकार द्वारा भारतीय अर्थ-व्यवस्था की वृद्धि और विकास में कृषि की भूमिका को ध्यान में रखते हुए, इस बजट में कृषि क्षेत्र पर अधिक ध्यान दिया गया है। कृषि में उत्पादकता, किसानों के हितों एवं कृषि की सुदृढ़ता को बढ़ाना बजट द्वारा निर्धारित शीर्ष प्राथमिकताओं में से एक है। उल्लेखनीय है कि बजट में जो नौ प्राथमिकताएं शामिल है, उनमें कृषि एवं संबंधित क्षेत्रों के लिए करीब 1.52 लाख करोड़ रुपये के आवंटन से खेती-किसानी की दशा-दिशा सुधरने की आस बढ़ी है। विभिन्न फसलों की प्रस्तावित 109 किस्मों से भी उत्पादकता में बढ़ोतरी की उम्मीद है। ये किस्में जलवायु परिवर्तन के चलते बढ़ रही प्रतिकूल मौसमी परिघटनाओं के विरुद्ध कवच का काम करेंगी। दलहन-तिलहन को प्राथमिकता, डिजिटल क्राप सर्वे के अतिरिक्त किसान उत्पादक संघों यानी एफपीओ एवं भंडारण और आपूर्ति श्रृंखला पर ध्यान देने जैसे उपाय उपज को पहुंचने वाले नुकसान को घटाने एवं कीमतों में स्थायित्व सुनिश्चित करेंगे। ग्रामीण विकास के लिए 2.66 लाख करोड़ की बड़ी राशि आवंटित की गई है। भले ही सरकार ने सीधे तौर पर बजट में किसानों की आय बढ़ाने और एमएसपी पर खरीद सुनिश्चित न किए जाने से किसानों को निराशा हुई हो लेकिन बजट में तिलहन में आत्मनिर्भरता, सब्जी उत्पादन केन्द्र विकसित करने और खेती के लिए डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास की बात कही गई है। विशेषज्ञों के मुताबिक इस बजट से आने वाले समय में एग्रीकल्चर सेक्टर की विकास की रफ्तार बढ़ाने में मदद मिलेगी जो सीधे तौर पर किसानों की आय भी बढ़ायेगा एवं उन्नत कृषि को प्रोत्साहन भी देगा।

असल में न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की वैधानिक गारंटी और अन्य मांगें राजनीतिक मुद्दे बन गये हैं, जिनके चलते हो रहा आन्दोलन न केवल किसानों के बल्कि आम जनता के लिये भी परेशानी का सबब है। जबकि सरकार ने धान का उत्पादन करने वाले किसानों के लिए एमएसपी को बढ़ा कर 2300 कर दिया है जो स्वागत योग्य कदम है। उम्मीद थी की सरकार एमएसपी पर खरीद को सुनिश्चित करने के लिए कोई कदम उठाएगी। लेकिन बजट में इस तरह का कोई प्रावधान न होने से काफी निराशा हुई है। दुनिया भर के विकसित देश अनिवार्य रूप से किसानों की उपज को एमएसपी पर खरीदते हैं। लेकिन भारत में किसानों को उनकी उपज का सही मूल्य नहीं मिल पाता। विपक्षी दल किसानों के हित में आन्दोलन की बजाय बातचीत के रास्ते पर आगे बढ़े। स्तरीय विरोध हो, किसानों को गुमराह करने एवं उनका मनोबल कमजोर करने के लिये विपक्षी दल उजालों पर कालिख न पोते, इससे उन्हीं के हाथ काले होने की संभावनाएं है।

मुद्दा : जमानत पर 'सुप्रीम' फैसला

रजनीश कपूर

किसी भी अपराध के संबंध में निर्दोषता की धारणा एक कानूनी सिद्धांत है। जिसके अनुसार किसी भी अपराध के लिए आरोपी प्रत्येक व्यक्ति को तब तक निर्दोष माना जाता है जब तक कि उसे दोषी साबित न कर दिया जाए। देश की शीर्ष अदालत ने अपने कई आदेशों में यह भी स्पष्ट किया है कि 'जमानत देना नियम है और जेल में रखना अपवाद।' परंतु आए दिन यह देखने को मिलता है कि जब भी किसी आरोपी को निचली अदालत से जमानत दी जाती है तो सरकारी एजेंसियां तुरंत उस फैसले के खिलाफ हाईकोर्ट पहुंच कर रोक लगवा लेती हैं। बीते मंगलवार सुप्रीम कोर्ट ने इस चलन पर आपत्ति जताते हुए एक अहम फैसला दिया।

सुप्रीम कोर्ट के न्यायमूर्ति अभय सिंह ओका और न्यायमूर्ति ऑगस्टिन जॉर्ज मसीह की खंडपीठ ने धन शोधन के मामले में आरोपी परविंदर सिंह खुराना की याचिका पर सुनवाई करते हुए देश भर के हाई कोर्टों को यह निर्देश दिया कि, 'कोर्ट को स्टे लगाने का अधिकार होता है, लेकिन किसी की जमानत पर यूं ही रोक नहीं लगाई जा सकती। सिर्फ असामान्य मामलों और असाधारण परिस्थितियों में ही ऐसा करना चाहिए। हाई कोर्ट को ऐसे मामलों में सोच समझकर फैसला देना चाहिए। सामान्य तौर पर हाईकोर्ट को जमानत के आदेशों पर रोक नहीं लगानी चाहिए।' उल्लेखनीय है कि मनी लॉन्ड्रिंग के आरोपी परविंदर सिंह खुराना को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने 2023 में गिरफ्तार किया था, लेकिन खुराना को ट्रायल कोर्ट से जून 2023 में ही बेल मिल गई थी, जिसके खिलाफ ईडी ने हाईकोर्ट में याचिका लगाई थी। हाईकोर्ट ने ट्रायल कोर्ट के बेल ऑर्डर पर रोक लगा दी। जिसे चुनौती देते हुए खुराना सुप्रीम कोर्ट पहुंचे। सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने उनकी स्वतंत्रता को लेकर चिंता जताई। कोर्ट ने कहा कि, 'एक साल तक एक शख्स बिना किसी कारण के जेल में सड़ रहा है।' केस की पिछली सुनवाई पर ईडी की तरफ से पेश हुए सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कोर्ट से कहा कि खुराना को जमानत मिलते ही वो देश छोड़ कर जा सकता है। यदि वो देश छोड़ कर चला गया तो जमानत के क्या मायने? शीर्ष अदालत ने इस तर्क को अस्वीकार करते हुए यह स्पष्ट किया कि, 'जमानत पर रोक केवल बहुत ही दुर्लभ मामलों में लगाई जा सकती है। यदि आरोपी पर देशद्रोह, आतंकवाद या एनईए जैसे संगीन मामले दर्ज हों तभी जमानत पर रोक लगाई जानी चाहिए।' गौरतलब है कि देश भर की जेलों में लगभग 6 लाख कैदी बंद हैं। इनमें से बहुत सारे कैदी ऐसे हैं, जिनका आरोप सिद्ध भी नहीं हुआ है। वहीं दूसरी तरफ, जिन मामलों में सीबीआई या अन्य जांच एजेंसियों को तत्परता दिखानी होती है वहां तो रातों-रात गिरफ्तारी भी हो जाती है, परंतु जहां ढील देने का मन होता है या ऊपर से ढील देने के 'निर्देश' होते हैं, वहां विजय माल्या, नीरव मोदी और मेहुल चोकसी जैसे आर्थिक अपराधियों को देश छोड़ कर भाग जाने का मौका भी दे दिया जाता है। यदि जांच एजेंसियां वास्तव में संगीन अपराधों को गंभीरता से लें तो उन्हें देश में लंबित पड़े सैंकड़ों मामलों में तेजी दिखानी चाहिए। केवल चुनिंदा मामलों में तेजी दिखाने से जांच एजेंसियों पर सवाल तो उठेंगे ही। अब बनी खॅड के मामलों को ही लें तो पिछली लोक सभा में एक सवाल का उत्तर देते हुए भारत सरकार के वित्त राज्य मंत्री डॉ. भागवत कराड ने बताया था कि 31 मार्च 2022 को खत्म होने वाले वित्तीय वर्ष में 'टॉप 50 विल्फुल लोन डिफॉल्टरों' ने बैंकों के साथ 5,40,958 करोड़ धोखाधड़ी की है, परंतु सीबीआई, ईडी व इनकम टैक्स विभाग ने इन मामलों में काफी ढुलमुल रवैया अपनाया। मिसाल के तौर पर लोक सभा में दिए गए इसी उत्तर में देश के 'टॉप 50 विल्फुल लोन डिफॉल्टरों' की सूची में छटे नंबर पर एक नाम 'खॅस्ट इंटरनेशनल लिमिटेड' का भी है। सूची के अनुसार इनके बैंक खॅड की रकम 3311 करोड़ है। इस कंपनी पर 14 बैंकों के एक समूह के साथ धोखाधड़ी का आरोप है।

गौरतलब है कि बैंक ऑफ इंडिया और इंडियन ओवरसीज बैंक ने 2020 में उदय देसाई और 13 अन्य लोगों के खिलाफ सीबीआई में धोखाधड़ी के मामलों

की एफआईआर लिखवाई थी, परंतु इस मामले की जांच कर रही एजेंसियां किन्हीं कारणों से इस गंभीर मामले में फुर्ती नहीं दिखा रही हैं। 2020 में जब इस मामले की एफआईआर दर्ज हुई थी तब यह मामला नीरव मोदी और मेहुल चोकसी के 13,000 करोड़ के बैंक खॅड मामले के बाद दूसरा सबसे बड़ा मामला था, लेकिन इतने संगीन मामले के अपराधी आज तक खुले घूम रहे हैं। वहीं इससे कई छोटे अपराध के मामले में यदि अपराधी जमानत लेता है तो जांच एजेंसियां इसका विरोध करने हाई कोर्ट पहुंच जाती हैं। ऐसे में देश की शीर्ष अदालत के आदेश के बाद जांच एजेंसियों द्वारा अपनाए गए दोहरे मापदंड का भी पदार्फाश होता है। इसलिए जांच एजेंसियों को संगीन मामलों में फुर्ती दिखानी चाहिए न कि चुनिंदा मामलों में जमानत का विरोध कर सुप्रीम कोर्ट की लताड़ का सामना करना चाहिए।

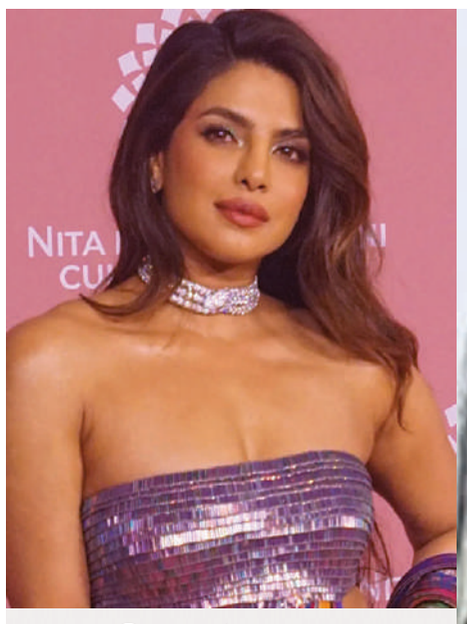

शादी अटेंड करने के बाद प्रियंका ने शुरु किया पुनः काम

अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट की शादी अटेंड करने के बाद इंटरनेशनल एक्ट्रेस प्रियंका चोपड़ा ने फिर से काम शुरू कर दिया है। प्रियंका चोपड़ा इन दिनों एक के बाद एक कमाल के प्रोजेक्ट कर रही हैं। एक्ट्रेस इन दिनों ऑस्ट्रेलिया में अपनी अगली फिल्म की शूटिंग कर रही हैं। द ब्लफ के सेट से उनकी कई तस्वीरें सामने आई हैं और सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रही हैं। पीसी के लुक ने ही लोगों को हैरान कर दिया है। प्रियंका चोपड़ा इन दिनों द ब्लफ की शूटिंग कर रही हैं। इस फिल्म के सेट से एक्ट्रेस के नए लुक की कई तस्वीरें वायरल हो रही हैं। फ्रैंक ई टावर्स की पीरियड एक्शन फिल्म द ब्लफ में वह एक समुद्री डाकू का किरदार निभा रही हैं। लीक हुई तस्वीरों में वह एक समुद्री डाकू जहाज पर एक सीक्वेंस के बीच में नजर आ रही हैं। वह ब्लैक स्पेगेटी पहने नजर आ रही हैं। उन्होंने अपने बाल भी अजीबोगरीब तरीके से कटवाए हैं और यह हेयरस्टाइल अब चर्चा का विषय बन गया है। इस रोल के लिए प्रियंका ने अपने लंबे बालों से अलग हेयरस्टाइल अपनाया है। उन्हें पहली बार मोहॉक के साथ देखा जा सकता है, जो 19वीं सदी के कैरिबियन समुद्री डाकू के रूप में उनके लुक को और निखार रहा है। इंस्टाग्राम यूजर्स इस लुक से इतने उत्साहित हो गए कि उनमें से एक ने कमेंट सेक्शन में यह भी पूछ लिया, 'क्या यह पाइरेट्स ऑफ द कैरेबियन पीरियड में है या कुछ अलग है?' फैन अकाउंट ने जवाब दिया, 'हां। यह 1800 के दशक में कैरेबियन आइलैंड में है।' एक अन्य ने पूछा कि प्रियंका ऑस्ट्रेलिया में कब तक फिल्मांकन करने वाली हैं, जिस पर फैन अकाउंट ने जवाब दिया, 'मुझे नहीं पता कि प्री शूटिंग खत्म होने तक रुकेगी या नहीं, क्योंकि उसने पहले शुरू कर दिया है, अगस्त के अंत तक सामान्य शूटिंग की जाएगी। बता दें, प्रियंका चोपड़ा जल्द ही द ब्लफ और हेड्स ऑफ स्टेट में नजर आएंगी। इसके अलावा वह जी ले जरा से भी बॉलीवुड में वापसी करने के लिए तैयार हैं।

साउथ से मिल रहे ऑफर्स, लेकिन बालीवुड से नहीं: नेहा धूपिया

बालीवुड एक्ट्रेस नेहा धूपिया ने एक ऐसा बयान दिया है, जिसकी खूब चर्चा हो रही है। उन्होंने कहा कि साउथ इंडस्ट्री से उन्हें काम मिल रहा है, लेकिन बॉलीवुड में नहीं। एक इंटरव्यू के दौरान नेहा धूपिया ने बताया कि वह पिछले 22 साल से स्ट्रगल कर रही हैं। उन्होंने कहा, 'मैं अच्छी फिल्मों के लिए पिछले 22 सालों से संघर्ष कर रही हूं। मेरी कुछ फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस पर अच्छा परफॉर्म किया। वहीं, कुछ फिल्मों को कम ऑडियंस मिली। एक चालीस की लास्ट लोकल, मिथ्या और अ थर्सडे ऑडियंस को बहुत पसंद आईं। लोगों ने खुद कहा कि उन्हें मेरा काम बहुत अच्छा लगा।' नेहा धूपिया ने आगे बताया, पिछले तीन महीने में मुझे बैक-टू-बैक 2 फिल्में मिली हैं, लेकिन आखिरी बार मुझे कब किसी हिंदी फिल्म का ऑफर मिला, ये याद नहीं है। इंडस्ट्री बुरे दौर से गुजर रही है।' नेहा धूपिया का कहना है कि काम मांगना कोई बुरी बात नहीं है। अगर आप बाहर जाकर किसी से काम मांग रहे हैं, तो इसमें कुछ भी गलत नहीं है, लेकिन जो लोग काम देते हैं, वे इंडस्ट्री की मैथ को लेकर खुद स्ट्रगल कर रहे हैं। वर्क फ्रंट की बात करें तो नेहा धूपिया की हाल ही में फिल्म 'बैड न्यूज' रिलीज हुई है, जिसमें उन्होंने विक्की कौशल, एमी विर्क और तृप्ति डिमरी के साथ काम किया है। 'बैड न्यूज' में नेहा धूपिया ने मालिनी शर्मा का रोल निभाया है, जिसे ऑडियंस से अच्छा रिस्पॉन्स मिल रहा है। बॉक्स ऑफिस पर भी फिल्म अच्छा कलेक्शन कर रही है। 19 जुलाई को रिलीज हुई 'बैड न्यूज' का डायरेक्शन आनंद तिवारी ने किया है। बता दें कि नेहा धूपिया बॉलीवुड की पॉपुलर एक्ट्रेसेस में से एक हैं। वह पिछले दो दशकों से फिल्म इंडस्ट्री में एक्टिव हैं। नेहा धूपिया ने साल 2003 में तेलुगु फिल्म इश्तापडानू से एक्टिंग की दुनिया में कदम रखा था। उसी साल उन्होंने 'कयामत' फिल्म से बॉलीवुड डेब्यू किया।

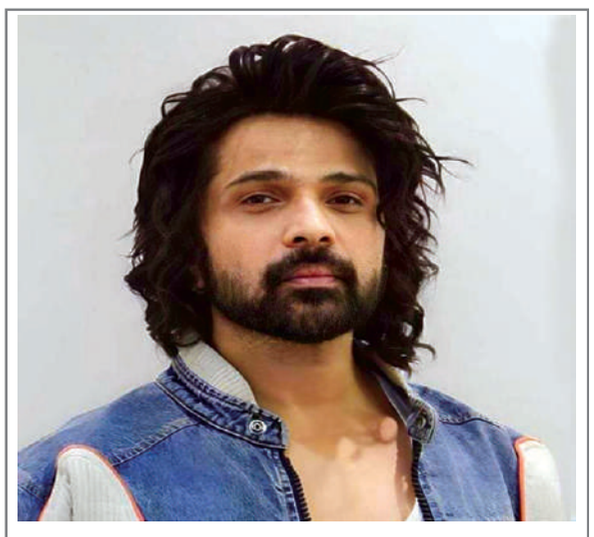

हिमेश ने अपने जन्मदिन पर किया नई फिल्म का एलान

बालीवुड के सिंगर, म्यूजिक डायरेक्टर और एक्टर हिमेश रेशमिया ने 23 जुलाई को अपना 51वां जन्मदिन सेलिब्रेट किया और देर रात नई फिल्म की घोषणा भी की। हिमेश रेशमिया ने अपनी नई फिल्म जानम तेरी कसम लेकर आ रहे है। सिंगर ने फिल्म के ऐलान के साथ-साथ इसका एक पोस्टर और सॉन्ग टीजर भी जारी किया। इसके अलावा, फिल्म की रिलीज डेट से भी पर्दा उठाया। यह फिल्म 2025 में दशहरे के मौके पर रिलीज होगी। हिमेश ने अपने पोस्ट को कैप्शन दिया, जन्मदिन की शुभकामनाओं के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद! जानम तेरी कसम एक दर्दभरी प्रेम कहानी है। राव और सप्रू फिल्म्स के सहयोग से हिमेश रेशमिया मेलोडीज द्वारा निर्मित यह फिल्म दशहरा 2025 पर रिलीज होगी। इस फिल्म को राधिका राव और विनय सप्रू डायरेक्ट करेंगे। फिल्म का टाइटल ट्रैक शेयर करते हुए हिमेश ने इंस्टा पर एक और पोस्ट शेयर किया, इस पर रील्स बनाने की अपील की। उन्होंने कैप्शन में लिखा, जिस दर्द में आराम है... इश्क उसी का नाम है... जानम तेरी कसम के टाइटल ट्रैक पर अपनी खुद की रील बनाएं सिंगर के करियर की बात करें तो हिमेश रेशमिया ने म्यूजिक डायरेक्टर के तौर पर 1998 में प्यार किया तो डरना क्या से अपने करियर की शुरुआत की। इसके बाद उन्होंने कई फिल्मों में संगीत दिया, जिसमें हेलो ब्रदर, दुल्हन हम ले जाएंगे, बंधन और तेरे नाम शामिल हैं। झलक दिखला जा, आशिक बनाया आपने, आप की कशिश, नाम है तेरा तेरा जैसे कई हिट गानों के जरिए उन्होंने लोगों के दिलों में अपनी जगह बनाई। हिमेश ने एक्टिंग में भी किस्मत आजमाई। उन्होंने साल 2007 में फिल्म आप का सुरूर से बॉलीवुड में एक्टिंग करियर की शुरुआत की। इसके बाद वह फिल्म कर्ज में नजर आए। उन्होंने रेडियो, कजरारे, दमादम, द एक्सपॉज, तेरा सुरूर, खिलाड़ी 786 और हैप्पी हार्डी एंड हीर जैसी फिल्मों में काम किया। वह जल्द ही बडास रवि कुमार और जानम तेरी कमस में नजर आएंगे। बता दें कि हिमेश रेशमिया इंडस्ट्री का एक जाना-माना नाम है। उन्होंने बॉलीवुड में नाम कमाने के लिए लंबे समय तक संघर्ष किया है। वह उन सितारों में से एक हैं, जिन्होंने सिंगिंग के अलावा एक्टिंग में भी अपना जलवा बिखेरा।

दृष्टि धामी अपनी प्रेग्नेंसी को लेकर चर्चा में

छोटे परदे की एक्ट्रेस दृष्टि धामी अपनी प्रेग्नेंसी को लेकर खूब चर्चा में हैं। बीते दिनों एक्ट्रेस ने अपनी मैटरनिटी फोटोशूट शेयर करते हुए अपने फैंस को खुशखबरी दी थी कि वह मां बनाने वाली हैं। मधुबाला के नाम से भी जानने वाली एक्ट्रेस का एक वीडियो सोशल मीडिया पर सामने है, जिसमें आप उन्हें प्रेग्नेंसी के दौरान खुद का बहुत ही अनोखे तरीके से ध्यान रखते हुए देख सकते हैं। वहीं मॉम टू बी दृष्टि धामी का ये हेवी वर्कआउट वीडियो देख कुछ लोग उनकी तारीफ कर रहे हैं तो कुछ उनकी चिंता करते हुए अलग-अलग तरह की फिटनेस टिप्स दे रहे हैं। दृष्टि धामी ने अपने इंस्टाग्राम जो वर्कआउट वीडियो शेयर किया है वो तेजी से सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। इतना ही नहीं लोगों के बीच खूब चर्चा में भी बना हुआ है। हाल ही में एक मजेदार वीडियो के साथ एक्ट्रेस ने अपनी पहली प्रेग्नेंसी का ऐलान किया था। 40 साल की उम्र में मां बनने जा रहीं दृष्टि धामी का प्रेग्नेंसी वर्कआउट लोगों को बहुत पसंद आ रहे है। इंस्पायर करती नजर आ रही हैं। वहीं कुछ लोग एक्ट्रेस को इस तरह एक्सरसाइज करता देखने के बाद कुछ सेकंड के लिए घबरा गए। इस वीडियो में एक्ट्रेस का प्रेग्नेंसी ग्लो साफ दिखाई दे रहा है। दृष्टि धामी ने ये वीडियो शेयर करते हुए लिखा है, कुकिंग अप बेबी... जिम में प्रेग्नेंसी के दौरान और हेल्थी होने के लिए... चिंता न करें, मेरे पास इन रिप्स के लिए डॉक्टर का नोट है। बता दें कि दृष्टि धामी के वर्कआउट वीडियो के कमेंट बॉक्स में यूजर्स उनकी चिंता करते हुए सलाह दे रहे हैं कि ऐसे हेवी वर्कआउट करने की जगह आप योग करें। योग से भी आपका बेबी हेल्थी होगा। वहीं कुछ स्टार्स दृष्टि के फिट रहने के जज्बा को देख उनके कायल हो गए हैं।

जान्हवी ने फिल्म उलझ के गाने का टीज़र किया शेयर

बालीवुड एक्ट्रेस जान्हवी कपूर ने अपकमिंग फिल्म उलझ के पहले गाने का टीज़र अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर शेयर किया है। प्रशंसक पूरा गाना देखने का इंतज़ार कर रहे थे। उनकी इच्छा का सम्मान करते हुए निर्माताओं ने फिल्म का पूरा गाना रिलीज़ कर दिया है। उलझ के पहले ट्रैक का नाम शौकन है और यह एक पेपी ट्रैक है। गाने को जुबिन नौटियाल, नेहा कक्कड़ और शाश्वत सचदेव ने गाया है। गाने के बोल कुमार ने लिखे हैं। उलझ फिल्म में जान्हवी कपूर, गुलशन देवैया और रोशन मैथ्यू जैसे कलाकार हैं। गाने में जान्हवी और गुलशन की केमिस्ट्री ज़बरदस्त है और यह कहना गलत नहीं होगा कि दर्शकों को एक नई ऑन-स्क्रीन जोड़ी मिल गई है। न केवल केमिस्ट्री बल्कि प्रशंसक जेके के डांस मूव्स और स्क्रीन प्रेजेंस की भी प्रशंसा कर रहे हैं। कई प्रशंसक अभिनेत्री के लिए टिप्पणी अनुभाग में प्यार बरसाने से खुद को रोक नहीं पाए। एक उपयोगकर्ता ने लिखा, जान्हवी और यह गाना, परफेक्ट कॉम्बो!, एक अन्य प्रशंसक ने टिप्पणी की, जान्हवी का नया गाना, शानदार होने वाला है! जबकि, कई लोगों ने गायक जुबिन नौटियाल और नेहा कक्कड़ की भी इतनी अच्छी तरह से गाने के लिए प्रशंसा की। हाल ही में 16 जुलाई को फिल्म उलझ का ट्रेलर रिलीज हुआ। दर्शक जाह्नवी कपूर को सुहाना नाम की लड़की की भूमिका निभाते हुए देखेंगे, जो लंदन दूतावास में एक महत्वपूर्ण काम पर काम करते हुए एक खतरनाक निजी साजिश में फंस जाती है। वह अपने काम के जटिल मुद्दों का सामना करती है, जो उसके करियर को परिभाषित करेगा, और खुद को अपनी विरासत के बोझ तले और धोखाधड़ी के जाल में फंसा हुआ पाती है, जहां कोई भी साथी दुश्मन बन सकता है। डार्लिंग्स में काम कर चुके रोशन मैथ्यू और बधाई दो के अभिनेता गुलशन देवैया भी फिल्म में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते नजर आएंगे। आगामी फिल्म उलझ एक भारतीय हिंदी भाषा की जासूसी थ्रिलर फिल्म है। इसे राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता निर्देशक सुधांशु सरिया ने निर्देशित किया है। फिल्म में राजेश तैलंग और आदिल हुसैन जैसे कलाकार भी अहम भूमिका निभाते नजर आएंगे।उलझ 2 अगस्त, 2024 को सिनेमाघरों में रिलीज होने के लिए पूरी तरह तैयार है। जंगली पिक्चर्स के तहत विनीत जैन ने इस फिल्म का निर्माण किया है।

जूनियर एनटीआर की झोली में है देवरा, वॉर 2 और ड्रैगन...

सुपरस्टार जूनियर एनटीआर आगामी 18 अगस्त को फिल्म वॉर 2 का दूसरा शेड्यूल शुरू करने के लिए मुंबई आएंगे। इस फिल्म के जरिए वह बॉलीवुड में डेब्यू करने वाले हैं। जल्द ही फिल्म का दूसरा शेड्यूल शुरू करेंगे। वॉर 2 को अयान मुखर्जी डायरेक्ट कर रहे हैं। एक्टर की झोली में इस वक्त तीन बड़ी फिल्में हैं- देवरा, वॉर 2 और ड्रैगन... देवरा फिल्म में एक्शन और ड्रामा देखने को मिलेगा। इसको कोराताला शिवा डायरेक्ट कर रहे है। इसमें वह देवराजू या देवरा का किरदार निभाते दिखाई देंगे। उनके अपोजिट बॉलीवुड एक्ट्रेस जाह्नवी कपूर नजर आएंगी, जो इस फिल्म के जरिए तेलुगू फिल्म इंडस्ट्री में डेब्यू कर रही हैं। वहीं सैफ अली खान विलेन के रोल में दिखाई देंगे। इनके अलावा, फिल्म में प्रकाश राज, श्रीकांत, शाइन टॉम चाको, नरैन, मीरा जैस्मिन सहित कई सितारे हैं। यह हिंदी, तेलुगू, तमिल, कन्नड़ और मलयालम भाषा में रिलीज होगी। एक सूत्र ने कहा, जूनियर एनटीआर वॉर 2 का दूसरा शेड्यूल शुरू करने से पहले देवरा से जुड़े सभी कामों को पूरा कर रहे हैं। वह बड़े एक्शन सीक्वेंस का प्लान बनाकर एक शानदार शुरुआत करेंगे। अयान वॉर 2 में जूनियर एनटीआर को पहले कभी न देखे गए अवतार में पेश करने जा रहे हैं, और इस शेड्यूल में निर्देशक उन हिस्सों को फिल्माते हुए दिखाई देंगे। सूत्र ने आगे बताया, जूनियर एनटीआर पैन-इंडिया सुपरस्टार हैं, और अयान अच्छे से जानते हैं कि वॉर 2 में उन्हें किस अवतार में पेश करना है, ताकि दर्शकों को आकर्षित किया जा सके। ऐसा करने के लिए वह कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। जूनियर एनटीआर 18 अगस्त को मुंबई में इसका दूसरा शेड्यूल शुरू करेंगे। वॉर 2 2019 की ब्लॉकबस्टर वॉर का सीक्वल है, जिसमें ऋतिक रोशन ने मेजर कबीर धालीवाल की भूमिका निभाई थी, जो एक दुष्ट रॉ एजेंट है और एक्शन स्टार टाइगर श्रॉफ दोहरी भूमिका में हैं। फिल्म का निर्देशन सिद्धार्थ आनंद ने किया था, जो पठान और फाइटर के लिए जाने जाते हैं। 2019 में ऋतिक रोशन और टाइगर श्रॉफ की फिल्म वॉर ब्लॉबस्टर हिट रही। इसमें ऋतिक रोशन ने मेजर कबीर धालीवाल की भूमिका निभाई थी, जो एक रॉ एजेंट है और एक्शन स्टार टाइगर श्रॉफ डबल रोल में हैं।

अगली फिल्म की शूटिंग जल्द शुरू करेंगे आयुष्मान

वैम्पायर्स ऑफ विजयनगर की शूटिंग पूरी करने के बाद बालीवुड एक्टर आयुष्मान खुराना राज शांडिल्य की अगली फिल्म की शूटिंग शुरू करेंगे। साल 2019 में आयुष्मान ने पहली बार राज शांडिल्य के साथ मिलकर एक बेहतरीन कॉमिक एंटरटेनर, ड्रीम गर्ल बनाई और यह फिल्म हिट साबित हुई, जो अभिनेता की सबसे ज़्यादा कमाई करने वाली फिल्म बन गई। 4 साल बाद, फिल्म को एक फ्रैंचाइज़ी में बदल दिया गया और सीक्वल भी बड़े पर्दे पर एक बड़ी हिट साबित हुआ। जानकारी के अनुसार, राज ने एक मजेदार पारिवारिक कॉमेडी लिखी है और आयुष्मान ने इस फिल्म में काम करने में अपनी रुचि दिखाई है। इस मामले से जुड़े एक सूत्र ने बताया, यह फिल्म एक स्टैंडअलोन कॉमेडी फिल्म है, न कि ड्रीम गर्ल 3। राज एक हटके कॉमिक एंटरटेनर लिख रहे हैं और आयुष्मान फिल्म के मूल विचार से प्रभावित हैं। एक महीने में फिल्म की कहानी पूरी हो जाएगी, उसके बाद कहानी सुनाई जाएगी। राज फिलहाल विक्की विद्या का वो वाला वीडियो में व्यस्त हैं, वहीं आयुष्मान करण जौहर और गुनीत मोंगा द्वारा निर्मित अभी तक बिना शीर्षक वाली कॉमेडी फिल्म की शूटिंग कर रहे हैं। इसके बाद वह अक्टूबर में दिनेश विजान के लिए वैम्पायर्स ऑफ विजय नगर में काम करेंगे। सूत्र ने कहा, शूटिंग की टाइमलाइन को लेकर दोनों ही टैलेंट एकमत हैं। अगर सब कुछ योजना के मुताबिक हुआ, तो अभी तक बिना शीर्षक वाली कॉमिक कैपर मार्च-2024 तक फ्लोर पर आ जाएगी, जब वे अपनी मौजूदा प्रतिबद्धताओं को पूरा कर लेंगे। बता दें कि दो बैक-टू-बैक सफ़लताओं के साथ, आयुष्मान और राज के बीच एक तालमेल विकसित हुआ है। अब यह जोड़ी अपने तीसरे सहयोग के लिए बातचीत कर रही हैं।

साउथ के डायरेक्टर बच्चन फेमिली के साथ बनाना चाहते थे अनारकली

साउथ के एक जाने-माने प्रोड्यूसर अमिताभ बच्चन, ऐश्वर्या, जया और अभिषेक को लेकर इतिहास रचने वाली फिल्म 'मुगल ए आजम' का रीमेक बनाना चाहते थे। लेकिन मेहुल कुमार ने उन्हें बताया कि ये फिल्म सफल नहीं हो पाएगी। साल 1960 में दिलीप कुमार और मधुबाली स्टारर फिल्म मुगल ए आजम एक ऐसी फिल्म थी, जिसे बनने में सालों लग गए थे। रिलीज के बाद इस फिल्म ने तो इतिहास में अपना नाम दर्ज करवाया था। दिलीप कुमार और मधुबाला की जोड़ी ने लोगों को दीवाना बना दिया था। फिल्म पर मेकर्स ने पानी की तरह पैसा बहाया था। सिर्फ एक गाने को ही फिल्माने में 10 लाख रूपए खर्च किए गए थे। फिल्म को न सिर्फ क्रिटिक्स की सराहना मिली थी, बल्कि दर्शकों का भी खूब प्यार मिला था। लेकिन क्या आप जानते हैं कि फिल्म को दोबारा बनाया जा रहा था जिसमें अमिताभ बच्चन का पूरा परिवार नजर आने वाला था। एक इंटरव्यू में फिल्ममेकर मेहुल कुमार ने खुद इस बात का खुलासा किया था। उन्होंने बताया कि साउथ इंडस्ट्री के एक बड़े प्रोड्यूसर मेरे पास इस फिल्म का रीमेक बनाने का आइडिया लेकर आए थे। वो इस फिल्म में अमिताभ बच्चन, जया, अभिषेक और ऐश्वर्या राय बच्चन को कास्ट करना चाहते थे। अमिताभ को अकबर, जया को जोधा बाई, अभिषेक बच्चन को सलीम और ऐश्वर्या को अनारकली के किरदार में पेश करना चाहते थे।' मेहुल ने इस बात का भी खुलासा किया कि प्रोड्यूसर ने इस फिल्म के लिए अमिताभ बच्चन से भी संपर्क किया था। लेकिन बिग बी ने कहा कि वह पहले मुझसे यानी मेहुल कुमार से ही बात कर लें। मैंने उस वक्त उन्हें समझाया था कि 'मुगल ए आजम की जगह इंडस्ट्री की कोई दूसरी फिल्म नहीं ले सकती। यह आइडिया हिट नहीं हो पाएगा, क्योंकि ऑडियंस इस फिल्म को ओरिजनल फिल्म से जरूर कंपेयर करेंगे। वो एक इतिहास रचने वाली फिल्म थी।' बता दें कि 'मुगल-ए-आजम' बॉलीवुड की क्लासिक कल्ट फिल्म मानी जाती है। जब कभी भी हिंदी सिनेमा की इतिहास रचने वाली फिल्मों का जिक्र होता है तो 'मुगल-ए-आजम' का जिक्र जरूर होता है।

वेतन बढ़ाने को लेकर प्रदर्शन कर रहे शिक्षकों पर लाठीचार्ज

पटना। वेतन बढ़ाने और नौकरी नियमित करने की मांग को लेकर विरोध- प्रदर्शन कर रहे पीटी टीचर पर शुक्रवार की सुबह पुलिस ने जमकर लाठियां बरसायीं और खदेड़कर विश्वेश्वरैया भवन तक पहुंचा दिया। सुबह में गर्दनीबाग धरनास्थल से छिपते-छिपाते प्रदर्शनकारी प्रतिबंधित क्षेत्र सचिवालय, विकास भवन के पास पहुंच गये। प्रदर्शनकारी आगे विधानसभा की ओर बढ़ना चाह रहे थे कि इसी बीच पुलिस ने सभी को रोक दिया। पहले पुलिस ने समझा-बुझाकर सभी को जाने को कहा। बाद में जब प्रदर्शनकारी नहीं माने तो पुलिस ने लाठीचार्ज शुरू कर दिया। लाठीचार्ज होते ही मौके पर भगदड़ मच गयी। प्रदर्शनकारियों ने आरोप लगाया कि महिलाओं के साथ पुलिस ने धक्का-मुक्की की है। पुलिस ने प्रदर्शन कर रहे लोगों से कहा कि विधानमंडल का सत्र चल रहा है। निषेधाज्ञा लागू है। बावजूद पीटी टीचर नहीं माने और सरकार के खिलाफ नारेबाजी करने लगे। सचिवालय से खदेड़कर इन सबों को विश्वेश्वरैया भवन तक पहुंचा दिया।

पांच साल पहले एसटीइटी के माध्यम से हुई थी बहाली : शारीरिक शिक्षक एवं स्वास्थ्य अनुदेशक संघ की ओर से प्रदर्शन किया गया था। संघ के प्रदेश अध्यक्ष डॉ राजेश कुमार पांडेय ने बताया कि बिहार सरकार ने 5 साल पहले एसटीइटी के माध्यम से बहाली की थी जिसमें शारीरिक शिक्षक और स्वास्थ्य अनुदेशक की बहाली हुई थी। इसमें प्राथमिक शिक्षक को 5 हजार, माध्यमिक शिक्षक को 6 हजार और शारीरिक शिक्षक की 4 हजार पर बहाली हुई थी। अभी हम लोगों को वेतन केवल 8 हजार रुपये है। इतनी महंगाई है, 8 हजार में क्या होगा। सरकार वेतन बढ़ाये और नौकरी पक्की करे।

बिहार भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बने दिलीप जायसवाल

किशनगंज। बिहार भाजपा में बड़ा उलटफेर हुआ है। भाजपा ने प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी को हटाकर डॉ. दिलीप कुमार जायसवाल को कमान सौंपी है। केंद्रीय नेतृत्व ने एक साल के भीतर ही प्रदेश अध्यक्ष के पद से सम्राट चौधरी को हटाने का फैसला ले लिया। साथ ही बिहार में भूमि सुधार मंत्री के रूप में काम कर रहे डॉ. दिलीप कुमार जायसवाल को प्रदेश अध्यक्ष बनाकर बड़ी जिम्मेदारी सौंपी है। इस फेरबदल के पीछे लोकसभा चुनाव के नतीजे और कुशवाहा वोट बैंक में विपक्ष की सेंधमारी मुख्य कारण माना जा रहा है। डॉ. जायसवाल अतिपिछड़ा वैश्य समाज से आते हैं। भाजपा ने बिहार में अतिपिछड़ा वोट बैंक को साधने और इसपर अपनी पकड़ मजबूत बनाकर रखने के लिए लगातार काम करती रही है। अतिपिछड़ा वोट बैंक को जोड़कर रखने के लिए जायसवाल पर पार्टी ने भरोसा जताया है। सम्राट चौधरी से ठीक पहले इसी समाज से संजय जायसवाल को प्रदेश अध्यक्ष बनाया गया था।

भारतीय जनता पार्टी के इतिहास में झांके तो सन 1980 में स्थापना के बाद ओबीसी और अगड़ी जाति के नेताओं को अध्यक्ष बनने का मौका मिला है। सबसे पहले कैलाश पति मिश्रा अध्यक्ष पद पर रहे हैं। तीन बार यादव समाज के जगदंबी प्रसाद यादव (1981-1984), नंद किशोर यादव (1998-2003), नित्यानंद राय (2016-2019) रहे। वैश्य समाज से सुशील मोदी (2005-2006), संजय जायसवाल (2016-2019) रहे। ब्राह्मण और भूमिहार समाज से कैलाश पति मिश्र दो बार 1980 और 1981 फिर बाद में 1984 1987 तक अध्यक्ष रहे। इसके अलावा तारकांत झा (1990 1993), गोपाल नारायण सिंह (2003-2005), सीपी ठाकुर (2010-2013), मंगल पांडे (2013-2016), राजपूत समाज से राधा मोहन सिंह और कुशवाहा समाज से सम्राट चौधरी बने है। एक समय बिहार भाजपा के बड़े दलित नेता संजय पासवान को अध्यक्ष बनने की चर्चा साल 2000 के आसपास कई बार चली लेकिन बिहार भाजपा ने अपने नेतृत्व की जिम्मेदारी देने के लिए दलित समाज के किसी व्यक्ति पर अब तक भरोसा नहीं दिखा पाई है।

'रिकॉर्ड सीटों से जीतेंगे आगामी बिहार विधानसभा चुनाव'

पटना। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नवनियुक्त बिहार प्रदेश अध्यक्ष दिलीप जायसवाल ने शुक्रवार को कहा कि पार्टी ने उन्हें जो जिम्मेदारी सौंपी है वो इसके लिए पार्टी के शीर्ष नेतृत्व को धन्यवाद देते हैं। आगामी 2025 के बिहार चुनाव में हम रिकार्ड सीट के साथ चुनाव जीतने वाले हैं। मूलतः बिहार के सीमांचल के जिले किशनगंज से आने वाले दिलीप जायसवाल ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि सम्राट चौधरी हमारे नेता हैं। वो हमारे उप मुख्यमंत्री हैं। उनके नेतृत्व में भाजपा ने बहुत अच्छा काम किया। आगे मुझे काम करने का मौका मिला है। हम सब मिलकर संगठन को मजबूत करने का काम करेंगे। मैं चाहता हूं कि बिहार के विकास के लिए अलग-अलग पार्टी नहीं रहकर, बल्कि सब मिलकर एक साथ काम करें और बिहार को आगे बढ़ाएं। हमारा लक्ष्य स्पष्ट है। जायसवाल ने कहा कि भाजपा ने हमेशा कार्यकर्ताओं को आगे बढ़ाया है। पार्टी ने मुझे जैसे कार्यकर्ता पर विश्वास किया, इसके लिए हम सबके आभारी हैं। आने वाले विधानसभा 2025 चुनाव के लिए संगठन में बेहतर काम करने का मौका मिला है। इस पर हम खरा उतरने की कोशिश करेंगे। विधानसभा चुनाव के लिए पार्टी संगठन पूरी तरह तैयार है। हम रिकार्ड सीट के साथ 2025 का विधानसभा चुनाव जीतनेवाले हैं।

संक्षिप्त खबरें

मढ़ौरा प्रखंड परिसर में लगा अस्थायी पौधा बिक्री काउंटर

मढ़ौरा। मशरख वन प्रक्षेत्र अंतर्गत मढ़ौरा प्रखण्ड परिसर के मुख्य द्वार पर अस्थाई पौधा बिक्री काउंटर लगाया गया। जिसमें काष्ठ एवं फलदार दोनों प्रजाति के पौधे आम जनता को 10 रुपया प्रति पौधा की दर से उपलब्ध कराया जा रहा है। इस मौके पर वनों के क्षेत्र पदाधिकारी मशरख प्रवीण गुप्ता के साथ कार्यपालक पदाधिकारी नगर पंचायत मढ़ौरा बबलू कुमार एवं मढ़ौरा प्रखण्ड विकास पदाधिकारी सुधीर कुमार के साथ -साथ वन उप परिसर पदाधिकारी मढ़ौरा चंद्रमणी उपाध्याय भी मौजूद हुए। प्रखंड परिसर में किसानों की सुविधा के लिए पौधा बिक्री काउंटर के साथ -साथ कृषि वानिकी सूचना शिविर भी लगाया गया है, जिसमें किसानों को कृषि वानिकी योजना के फायदे को समझाया जा रहा है। इस अवसर पर वन क्षेत्र पदाधिकारी मशरख द्वारा बताया गया कि कृषि वानिकी योजना किसानों की आमदनी का बहुत अच्छा साधन है, जिसमें किसानों को 10 रुपया पौधा देकर 3 सालों बाद 50% से अधिक उत्तरजीविता होने पर 6 गुना मुनाफा दिया जाता है। इस योजना से पौधे लेने हेतु अस्थाई पौधा बिक्री काउंटर से कृषि वानिकी फॉर्म लेकर पौधा लिया जा सकता है । साथ की वन विभाग के किसी भी कार्यालय से फॉर्म प्राप्त किया जा सकता है।

नवादा में नालंदा के मुखिया पति की हत्या

नवादा। नालंदा जिले के गिरियक थाने के सतउआ ग्राम पंचायत के मुखिया पति बलवीर यादव का अपहरण कर शुक्रवार सुबह नवादा जिले में हत्या कर दी गई। उनका शव वारसलीगंज थाने के टाटी मीर बीघा के ईंट चिमनी भट्ठे के पास से बरामद हुआ है ।हत्या पिटाई कर तथा तेज हथियार से वार कर बेरहमी से की गई है। वारसलीगंज के थाना प्रभारी इंस्पेक्टर रूपेश कुमार सिन्हा ने बताया कि बालू माफियाओं ने नालंदा के गिरियक थाना क्षेत्र से बलवीर का अपहरण कर लिया था। हत्या कर वारसलीगंज क्षेत्र में लाश को फेंक दी गई है ।नवादा पुलिस फॉरेंसिक टीम के साथ घटनास्थल की वैज्ञानिक जांच तथा संपूर्ण मामले की जांच में नालंदा पुलिस को पूरी सहयोग कर रही है । उन्होंने कहा कि नालंदा पुलिस को लाश भी सुपुर्द कर दी गई है ।थाना प्रभारी ने यह भी बताया कि बालू का कारोबार बड़े पैमाने पर किया जा रहा है, जिसमें कुछ विवाद के कारण बालू माफियाओं ने बलवीर यादव का अपहरण कर हत्या कर दी। नवादा तथा नालंदा जिले में बालू माफियाओं की सक्रियता से पुलिस काफी परेशान है। यहां तक कहा जाए तो नवादा एसपी की निकम्मापन ने नवादा जिले को बालू माफियाओं के आगोश में झोंक दिया। एसपी को अपराध नियंत्रण से कोई मतलब नहीं है ।केवल नौकरी की घड़ियां गिनकर अपने आप को संपन्न बनाने में लगे हुए हैं।

ताला तोड़ लाखों के आभूषणों की चोरी

मधेपुरा। भर्राही थानांतर्गत मधुबन वार्ड नंबर एक में चोरों ने लाखों की संपत्ति पर हाथ साफ किया। पीड़ित ने थाने में आवेदन देकर चोरी गए सामानों की बरामदगी एवं चोरों के विरुद्ध कार्रवाई की मांग की है। चोरों ने एक जोड़ा पायल, आठ आने सोने का झुमका, एक लाख 30 हजार रुपये मूल्य का एक भरी सोने का नथिया, एक लाख रुपये का डेढ़ भरी सोने की चेन, 40 हजार रुपये मूल्य की दो सोने की अंगूठी सहित आधा किलो चांदी के अन्य जेवरात की चोरी हो गयी है।

पति की मौत से आहत महिला ने दी जान

शेखपुरा। पति की मौत से डिप्रेशन में जी रही एक महिला ने घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर लिया। घटना के बाद परिजनों में हड़कंप मच गया। सूचना मिलने के बाद मौके पर पहुंची स्थानीय थाने की पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेज दिया है। घटना शेखपुरा जिले के शेखोपुरसराय थाना क्षेत्र अंतर्गत नीमी गांव में घटित हुई है। मृतिका की पहचान गांव के अभय शंकर कुमार की 21 वर्षीय पुत्री कोमल कुमारी के रूप में की गयी है। परिजनों ने बताया कि एक महीने पहले मृतका के पति गुलशन कुमार की मौत हो गयी थी। वह डाक विभाग में कार्यरत थे। उस घटना के बाद से कोमल लगातार डिप्रेशन में थी। घर वालों से बहुत कम ही बात करती थी। घटना के बाद से वह मायके में ही रह रही थी। तभी अचानक गुरुवार की सुबह उसने अपने कमरे में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली।

जहर खा महिला ने की आत्महत्या

जदिया (सुपौल)। जदिया थाना क्षेत्र के मानगंज पूरब पंचायत के वार्ड नंबर 01 में शुक्रवार को एक विवाहिता ने जहर खाकर आत्महत्या कर ली। जहर खाने के बाद विवाहिता को परिजनों ने उपचार के लिए छातापुर हॉस्पिटल ले गये, जहां इलाज के दौरान स्थिति बिगड़ने के कारण चिकित्सकों ने उसे मेडिकल कालेज मधेपुरा के लिए रेफर कर दिया। मेडिकल कॉलेज मधेपुरा में इलाज के दौरान विवाहिता की मौत हो गयी। जानकारी मिलते ही जदिया पुलिस शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल सुपौल भेज दिया।

दरभंगा में एम्स निर्माण के लिए केंद्र सरकार से मिली मंजूरी

- जल्द से जल्द भूमि हस्तांतरित प्रक्रिया शुरू करने को कहा

पटना। बिहार के दरभंगा जिले में एम्स का निर्माण शोभन स्थित बायपास के पास स्थित प्रस्तावित जमीन पर ही होगा। केंद्र की नरेन्द्र मोदी सरकार ने इसकी मंजूरी दे दी है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने बिहार सरकार को पत्र लिखकर जल्द से जल्द भूमि को हस्तांतरित करने की प्रक्रिया शुरू करने को कहा है। राज्यसभा सदस्य संजय झा ने शुक्रवार को इसकी जानकारी दी है। जदयू सांसद संजय झा ने शुक्रवार को सोशल मीडिया एक्स पर पोस्ट कर जानकारी दी है कि केंद्र सरकार ने प्रस्तावित जमीन पर ही एम्स के निर्माण के लिए सहमति दे दी है। उन्होंने लिखा है कि "हमें शेयर करते हुए खुशी है कि दरभंगा में एम्स निर्माण के लिए राज्य सरकार द्वारा शोभन-एकमी बाईपास के निकट प्रस्तावित भूमि का सर्वेक्षण करने 18-19 मार्च 2024 को दरभंगा आई केंद्र सरकार की तकनीकी टीम ने अपनी रिपोर्ट में उक्त भूमि को एम्स निर्माण के लिए उपयुक्त बताया है। इसके बाद केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने प्रस्तावित भूमि पर एम्स के निर्माण को मंजूरी दे दी है"।

उन्होंने लिखा है कि "इस मंजूरी के लिए मैं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा डी तथा मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के प्रति अपनी ओर से तथा संपूर्ण मिथिलावासियों की ओर से कोटि-कोटि आभार प्रकट करता हूं। हमें विश्वास है, दरभंगा में एम्स का निर्माण अब जल्द शुरू होगा"। जेडीयू के कार्यकारी अक्ष्यक्ष ने लिखा, "प्रस्तावित भूमि पर एम्स निर्माण की मंजूरी मिल जाने के बाद राज्य सरकार अब जल्द ही संपूर्ण भूमि (150 एकड़ से अधिक) केंद्र को निःशुल्क हस्तांतरित कर देगी। साथ ही अपने संसाधनों से उक्त स्थल पर बिजली और पानी की आपूर्ति की व्यवस्था करने तथा वहां तक फोर लेन कनेक्टिविटी देने के लिए भी जरूरी कदम उठाएगी"।

संजय कुमार झा ने लिखा है कि "हमारा मानना है कि एम्स का निर्माण शहर की सीमा पर स्थित शोभन के पास होगा तो दरभंगा शहर को एक नया विस्तार मिलेगा और नये क्षेत्रों का तेजी से विकास होगा। इससे नये क्षेत्र में रोजगार के अवसर पैदा होंगे। इसके साथ राज्य सरकार दरभंगा मेडिकल कॉलेज अस्पताल (डीएमसीएच) का भी पुनर्विकास करा रही है। वहां 2500 बेड का नया अस्पताल बनाने के लिए 2742.04 करोड़ की योजना पर काम चल रहा है। दोनों सुपर स्पेशियलिटी अस्पतालों का निर्माण हो जाने पर दरभंगा केवल उत्तर बिहार के लिए ही नहीं, नेपाल तक के लिए भी एक बड़ा केंद्र बन जाएगा।

राजद के बिहार विधान परिषद सदस्य सुनील सिंह की सदस्यता रद्द

पटना। बिहार विधानमंडल में मानसून सत्र के आखिरी दिन शुक्रवार को मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के खिलाफ अमर्यादित टिप्पणी करना राजद के एमएलसी सुनील कुमार सिंह को भारी पड़ गया। इसके चलते एमएलसी सुनील कुमार सिंह की विधान परिषद से सदस्यता रद्द कर दी गई है। इससे पहले गुरुवार को विधान परिषद की आचार समिति ने उनके खिलाफ रिपोर्ट तैयार कर दी थी और अब आज इसकी घोषणा कर दी गई। समिति ने कहा था कि सुनील कुमार सिंह ने सदन के सदस्य बने रहने की पात्रता खो दी है। समिति ने अपनी 112 पन्नों की रिपोर्ट दी है। विधानमंडल सत्र के चौथे दिन गुरुवार को राजद विधान परिषद सदस्य सुनील कुमार सिंह ने सदन के अंदर नीतीश कुमार की मिमिक्री की थी। इस दौरान उनके साथ उनकी पार्टी के एक और एमएलसी कारी सोहैब भी साथ थे। ऐसे में दोनों के इस आचरण को अनुचित मानते हुए यह मामला विधान परिषद की आचार समिति के पास भेजा गया था। हालांकि, बाद में कारी सोहैब ने गलती मान ली थी लेकिन सुनील सिंह ने गलती मानने से इंकार कर दिया था।

इसके बाद सुनील सिंह के खिलाफ आचार समिति ने जांच रिपोर्ट तैयार की और उनपर अनुशासनिक कार्रवाई के तहत सदस्यता समाप्त करने की सिफारिश की। समिति का प्रतिवेदन कल ही सदन में रख दिया गया था, जिसपर आज अंतिम मुहर लग गई। राजद ने इस कार्रवाई को अनुचित करार दिया है। खुद की बर्ख़ास्तगी पर प्रतिक्रिया देते हुए सुनील कुमार सिंह ने कहा कि सदस्यता समाप्त होने का पहले से ही मैच फिक्स है। जिस तरह देश में पेपर लीक का तार नालंदा से जुड़ा है, मेरी बर्ख़ास्तगी का भी तार भी नालंदा से जुड़ा है।

पूर्णिया के तनिष्क शोरूम से 20 मिनट में लूट लिये दो करोड़ से अधिक के जेवरात

पूर्णिया। अपराधियों ने हथियार के बल पर दिनदहाड़े तनिष्क के शोरूम से दो करोड़ से अधिक रुपये के हीरे-जेवरात लूट लिये। पूर्णिया में अबतक की सबसे बड़ी लूट की यह वारदात शहर के सबसे व्यस्त लाइन बाजार चौक से कुछ ही दूरी पर डाकबंगला चौक के समीप हुई। ग्राहक बनकर आये कुल सात अपराधी महज 20 मिनट में इस घटना को अंजाम देकर चलते बने। सूचना मिलने के बाद डीआइजी विकास कुमार एवं एसपी उपेंद्रनाथ वर्मा घटनास्थल पर पहुंचे। घटना के बाद पूरे जिले की नाकेबंदी कर दी गयी है। अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए विशेष टीम गठित की गयी है। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, पहले दो अपराधी ग्राहक के रूप में शोरूम में घुसे। थोड़ी देर बाद दो लोग और आये। इसके बाद चारों ने पिस्तौल निकालकर सभी को एक जगह खड़ा होने को कहा। शोरूम के प्रोपराइटर रामनारायण सिंह के भतीजे रुचिर राज को पिस्तौल की नोक पर लॉकर की ओर ले गये। चाबी लेने के बाद अपराधी लॉकर और शॉप में रखे सारे हीरे और जेवरात अपने बैग में भर कर बाइक पर सवार होकर फोर्ड कंपनी रोड की तरफ भाग निकले।

अपराधियों की सूचना देने पर इनाम : डीआइजी विकास कुमार ने बताया कि इस लूट कांड से संबंधित जानकारी कोई व्यक्ति देता है तो उसका नाम व पता गोपनीय रखा जायेगा। अगर सूचना सही पायी गयी, तो उसे तीन लाख का इनाम दिया जायेगा।

जदयू महासचिव रहे राजीव रंजन का अंतिम संस्कार आज

पटना। जदयू के राष्ट्रीय महासचिव एवं पूर्व विधायक राजीव रंजन का शनिवार को पटना के दीघा घाट पर अंतिम संस्कार होगा। अंतिम संस्कार के समय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार भी मौजूद रहेंगे। शुक्रवार को उनका पार्थिव शरीर नयी दिल्ली से पटना लाया गया। शनिवार को दोपहर ढ़ाई बजे कंकड़बाग स्थित उनके आवास से अंतिम यात्रा आरंभ होगी। पार्थिव शरीर को विधानसभा परिसर लाया जायेगा। इसके बाद शाम पांच बजे दीघा घाट पर उन्हें मुखाग्नि दी जायेगी।

पेज एक का शेष

झारखंड में करवट...

बकाया देने के लिए मांग सकते हैं टाइमलाइन : मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन खनिजों की रॉयल्टी और सरफेस रेंट के बकाये एक लाख 32 हजार करोड़ का मुद्दा नीति आयोग के सामने फिर से उठाएंगे। यह राशि झारखंड को देने के लिए टाइमलाइन बताने का आग्रह करेंगे।

सीबीआई ने धनबाद...

पटना से धनबाद पहुंची सीबीआई की टीम : जानकारी के मुताबिक नीट पेपर लीक मामले में पटना की सीबीआई टीम धनबाद पहुंची थी। सीबीआई की टीम ने धनबाद कंबाइंड बिल्डिंग के पास छापेमारी कर एक युवक को हिरासत में लिया। उसकी निशानदेही पर भांट बांध तालाब पहुंचकर मोबाइल जब्त किया।

एनडीआरएफ की टीम ने आने में की देरी : सीबीआई की टीम ने एनडीआरएफ की टीम से मदद मांगी, लेकिन एनडीआरएफ ने आने में काफी देर की। जिसके बाद स्थानीय गोताखोरों की मदद से भांट बांध तालाब में खोजबीन शुरू की। करीब तीन घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद एक सीमेंट का बोरा निकाला गया। इस बोरे से सीबीआई की टीम को एक दर्जन टूटे हुए मोबाइल फोन और दो इंसुलेटर मिले, जिसे बोरे में डालकर तालाब में फेंका गया था।

सीबीआई ने फिलहाल कुछ कहने से किया इंकार : सीबीआई टीम ने सभी मोबाइल फोन की जांच की। जिसमें दो आईफोन के अलावा कई अन्य कंपनियों के मोबाइल फोन शामिल थे। सीबीआई की टीम ने सभी फोन को जब्त कर लिया है। मामले को लेकर सीबीआई ने फिलहाल कुछ भी कहने से इंकार कर दिया है।

स्थानीय गोताखोरों को दिया 5 हजार का इनाम : मोबाइलों को खोजने में स्थानीय गोताखोरों की मदद करने के बाद सीबीआई टीम ने उन्हें 5 हजार रुपये का इनाम दिया। मौके पर सीबीआई टीम, सुदामडीह थाना प्रभारी सूरज कुमार रजक ने कुछ भी कहने से इंकार कर दिया।

नहीं चेते तो...

सीएम हेमंत सोरेन ने कहा कि जल-जंगल और जमीन झारखंड की पहचान रही है। एक ऐसा भी वक्त था, जब राज्य में चारों ओर घने जंगल थे। हर तरफ हरियाली ही हरियाली थी। उस दौरान यहां वृक्षारोपण की कोई जरूरत नहीं पड़ती थी, लेकिन जैसे-जैसे विकास की ओर बढ़ते गए, जंगलों पर खतरा पैदा होता गया। उद्योग-धंधे का विस्तार, बड़े पैमाने पर खनन कार्य होने और पुल-पुलिया एवं सड़कों का जाल बिछने समेत कई अन्य कारणों से बड़े पैमाने पर पेड़ काटे गए, जहां जंगल हुआ करते थे, वहां कंक्रीट के जंगल बन गए। प्राकृतिक व्यवस्था में हस्तक्षेप का सीधा असर पर्यावरण पर पड़ा। प्रकृति का संतुलन बिगड़ने से आज हमें तरह-तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। अगर नहीं चेते, तो इसके गंभीर परिणाम भुगतने को तैयार रहना होगा। ऐसे में ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाने के लिए सभी को आगे आना होगा, तभी पर्यावरण के साथ अपने जीवन को सुरक्षित रख पाएंगे।

ये भी रहे मौजूद : इस अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष रबीन्द्रनाथ महतो, मंत्री रामेश्वर उरांव, इरफान अंसारी एवं मिथिलेश कुमार ठाकुर, कई विधायकगण, मुख्यमंत्री के अपर मुख्य सचिव अविनाश कुमार, पीसीसीएफ संजय श्रीवास्तव समेत कई वरीय पदाधिकारी मौजूद थे।

कैमरून से लौटे...

श्री प्रसाद पत्र प्राप्ति के 72 घंटे के भीतर संबंधित जिले में जाकर उपायुक्त, जिला कौशल विकास पदाधिकारी एवं श्रम अधीक्षक से सम्पर्क स्थापित कर कार्य योजना तैयार कर इसे पूर्ण करायेंगे। श्रमायुक्त इस कार्य की प्रतिदिन समीक्षा कर अधोहस्ताक्षरी को अवगत करायेंगे। यह आदेश तत्काल प्रभाव से लागू होगा।

जमीन माफिया कमलेश...

फ्लैट से 1 करोड़ कैश, 100 गोलियां बरामद : बता दें कि, ईडी की टीम ने 21 जून को उसके किराए के फ्लैट में छापेमारी की थी। इस दौरान ईडी की टीम को एक करोड़ रुपए कैश और राइफल की 100 गोलियां मिली थीं। इस मामले में रांची के कांके थाना में ईडी के अधिकारियों द्वारा कमलेश सिंह के खिलाफ आर्म्स एक्ट के तहत प्राथमिकी दर्ज करायी गयी थी।

दुमका बीडीओ शिवाजी...

22 जुलाई को अदालत ने दिया था दोषी करार : जामताड़ा जिले के नाला प्रखंड के पूर्व प्रखंड विकास पदाधिकारी सह अंचल अधिकारी शिवजी भगत को चार साल के सश्रम कारावास और एक लाख बीस हजार रुपए जुर्माना अदा करने की सजा सुनायी गयी है। शिवाजी भगत वर्तमान में दुमका जिले के रानीश्वर प्रखंड में प्रखंड विकास पदाधिकारी के पद पर पदस्थापित थे। न्यायालय ने पिछले 22 जुलाई को दोषी करार देते हुए न्यायिक हिरासत में लेकर जेल भेज दिया था।

2010 का है मामला : स्पेशल केस नम्बर 10/2010 (निगरानी थाना कांड संख्या 10/2010) में सजा के बिंदु पर सुनवाई के बाद अदालत ने दोषी करार देते हुए सजा सुनायी। इस मामले में सरकार की ओर से लोक अभियोजक चंपा कुमारी और बचाव पक्ष की ओर से बहस सुनने के बाद न्यायालय ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए जेल में बंद दोष सिद्ध बीडीओ शिवाजी भगत को सजा सुनायी।

30 हजार रुपये रिश्वत लेते किया गया था गिरफ्तार : जामताड़ा जिले के नाला प्रखंड क्षेत्र के रहने वाले तारकनाथ मंडल की शिकायत पर निगरानी थाने में भ्रष्टाचार निरोधक अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत एक अप्रैल 2010 को नाला में पदस्थापित पूर्व प्रखंड विकास पदाधिकारी सह अंचल अधिकारी शिवजी भगत के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज की गयी थी। शिवाजी भगत पर सूचक से रिश्वत के रूप में तीस हजार रुपए की मांग कर परेशान करने का आरोप लगाया गया था। शिकायत पर भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो ने त्वरित कार्रवाई करते हुए जमीन विवाद में उसके पक्ष में जांच प्रतिवेदन देने के एवज में रिश्वत के तौर पर तीस हजार रुपये लेते शिवजी भगत को रंगेहाथ पकड़ लिया था।

भारत को जल्द...

इनमें जम्मू-कश्मीर में जोजिला दर्रे पर बन रही एक नई सुरंग भी शामिल है। जो दुनिया के सबसे ऊंचे मोटर योग्य दर्रों में से एक है।

दुनिया की सबसे ऊंची सुरंग शिंकु ला की प्रमुख बातें : पीएम मोदी ने शुक्रवार को द्रास में कारगिल युद्ध स्मारक से दूरस्थ रूप से 'पहला विस्फोट' किया। यह ऑल-वेदर सुरंग, जो 4.1 किलोमीटर लंबी होगी, लेह और मनाली के बीच की दूरी को लगभग 60 किलोमीटर कम कर देगी। यह सुरंग श्रीनगर-लेह राजमार्ग और मनाली-लेह राजमार्ग के अलावा वाहनों के लिए एक तीसरा विकल्प भी प्रदान करेगी। मनाली और लेह के बीच का हाईवे छोटा रास्ता है और कम से कम चार उच्च पर्वतीय दर्रों से होकर गुजरता है। नई सुरंग मनाली और लेह के बीच की दूरी को सिर्फ 295 किलोमीटर तक कम कर देगी। और शिंकु ला को एकमात्र उच्च पर्वतीय दर्रा के तौर पर शामिल करेगी।

राष्ट्र के लिए....

आज जब मैं एक बार फिर कारगिल की पवित्र धरती पर खड़ा हूं तो उन यादों का फिर से ताजा होना स्वाभाविक है। मुझे याद है कि कैसे हमारे बलों ने चरम और चुनौतीपूर्ण युद्ध स्थितियों के बावजूद सफलतापूर्वक ऑपरेशन को अंजाम दिया था। प्रधानमंत्री ने पाकिस्तान पर हमला बोलते हुए कहा कि पड़ोसी देश ने अपने इतिहास से कुछ नहीं सीखा है और छद्म युद्ध कर रहा है। पाकिस्तान अतीत में अपने सभी नापाक प्रयासों में विफल रहा है लेकिन वह आतंकवाद और छद्म युद्ध की मदद से खुद को प्रासंगिक बनाए रखने की कोशिश कर रहा है। प्रधानमंत्री ने कहा कि आज मैं ऐसी जगह से बोल रहा हूं, जहां आतंक के आका मेरी आवाज सीधे सुन सकते हैं। मैं आतंकवाद के इन संरक्षकों को बताना चाहता हूं कि उनके नापाक इरादे कभी कामयाब नहीं होंगे। हमारे सैनिक पूरी ताकत से आतंकवाद को कुचल देंगे और दुश्मन को मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि कारगिल में हमने न केवल युद्ध जीता, बल्कि 'सत्य, संयम और शक्ति' का अद्भुत उदाहरण भी दिया। आप जानते हैं कि भारत उस समय शांति के लिए प्रयास कर रहा था और बदले में पाकिस्तान ने एक बार फिर अपना अविश्वसनीय चेहरा दिखाया था लेकिन सत्य के सामने असत्य और आतंक की हार हुई। उन्होंने आगे कहा कि भारत विकास की राह में आने वाली हर चुनौती को परास्त करेगा। कुछ ही दिनों बाद 5 अगस्त को अनुच्छेद 370 को समाप्त हुए 5 साल हो जाएंगे। जम्मू-कश्मीर नए भविष्य की बात कर रहा है, बड़े सपनों की बात कर रहा है। बुनियादी ढांचे के विकास के साथ-साथ लद्दाख और जम्मू-कश्मीर में पर्यटन क्षेत्र भी तेजी से बढ़ रहा है। दशकों बाद कश्मीर में कोई सिनेमा हॉल खुला है। प्रधानमंत्री ने कहा कि साढ़े 3 दशक के बाद पहली बार श्रीनगर में ताजिया जुलूस निकाला गया। धरती का हमारा स्वर्ग तेजी से शांति और सद्भाव की ओर बढ़ रहा है। उन्होंने अग्निपथ योजना पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इसका लक्ष्य सेना को युवा बनाना और सेना को लगातार युद्ध के लिए फिट रखना है। उन्होंने कहा कि सेना में बड़े सुधारों की लंबे समय से मांग रही है। देश दशकों से रक्षा क्षेत्र में बड़े सुधारों की जरूरत महसूस कर रहा है। सेना वर्षों से इसकी मांग कर रही थी लेकिन दुर्भाग्य से पहले इसे पर्याप्त महत्व नहीं दिया गया। अग्निपथ योजना भी सेना में किए गए जरूरी सुधारों का एक उदाहरण है। उन्होंने कहा कि दशकों से संसद और कई समितियों में सेना को युवा बनाने पर चर्चा होती रही है। उन्होंने कहा कि भारत में सैनिकों की औसत आयु वैश्विक औसत से अधिक होना वर्षों से चिंता का विषय रहा है और अग्निपथ ने इस मामले को सुलझाया है। भारतीय सैनिकों की औसत आयु वैश्विक औसत से अधिक होना चिंता का विषय रहा है। इसीलिए यह मुद्दा भी वर्षों से कई समितियों में उठाया जाता रहा है। हालांकि, देश की सुरक्षा से जुड़ी इस चुनौती को हल करने की इच्छाशक्ति पहले नहीं दिखाई गई। अग्निपथ योजना के जरिए देश ने इस चिंता का समाधान किया है।

हिंदू जनसंख्या को कर रहे नियंत्रित मुसलमान पैदा कर रहे 10 बच्चे

□ प्रेमानंद महाराज के बयान परपरमहंस आचार्य ने दी प्रतिक्रिया

अयोध्या। पश्चिम बंगाल में बिगड़ते हालात को देखकर पंचायती अखाड़ा निरंजन के महामंडलेश्वर प्रेमानंद महाराज ने बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि हिंदू बहनें चार बच्चे पैदा करें, जिसमें से 2 हमें सौंप दें। वहीं प्रेमानंद महाराज के बयान पर अयोध्या के संतों ने प्रतिक्रिया दी है। राम मंदिर के मुख्य पुजारी आचार्य सत्येंद्र दास ने कहा, 'प्रेमानंद महाराज कथा वाचक हैं, कुछ भी कहते रहते हैं, जिसका कोई मतलब नहीं है। सरकार परिवार नियोजन की बात कर रही है। शास्त्रों में संतान उत्पत्ति व्यवस्था की बात कही गई है। प्रेमानंद महाराज को ऐसी भाषा नहीं बोलनी चाहिए। तपस्वी छावनी के पीठाधीश्वर जगतगुरु परमहंस आचार्य ने कहा, 'हिंदुस्तान में कई राज्यों में हिंदुओं की संख्या कम हुई है और कई जगह अल्पसंख्यक हो चुके हैं, जहां हिंदू कम हो रहे हैं, वहां सरेआम गाय की हत्या हो रही है। निर्भया जैसे कांड हो रहे हैं। हिंदुओं को अल्पसंख्यक होने से बचने के लिए प्रेमानंद महाराज ने ये बात कही है। हिंदू अपने आप जनसंख्या नियंत्रण कर रहे हैं। मुस्लिम समाज के लोग हिंदुओं से 10 गुना ज्यादा बच्चे पैदा कर रहे हैं। जहां मुस्लिम आबादी बढ़ रही है, वहां हिंदू को प्रताड़ित किया जा रहा है।

सीमा हैदर की सगी बहन का आरोप... अय्याशी और पैसा चाहिए

नई दिल्ली । खुद को सीमा हैदर की बहन बताते हुए एक बुर्कानशी महिला ने पाकिस्तानी भाभी को खूब खरी-खोटी सुनाई है। सीमा हैदर के पाकिस्तानी पति गुलाम हैदर के चैनल पर महिला ने खुद को सीमा हैदर की सगी बहन बताकर भारत सरकार से अपील की कि बच्चों को वापस पाकिस्तान भेज दिया जाए। 10 मिनट के वीडियो में महिला फूट-फूटकर रोई और सीमा को अय्याश और डायन कहकर कोसती रही। सीमा हैदर की कथित बहन ने कहा, मैं भारत सरकार से कहूंगी कि आप उसको (सीमा) को रखो। लेकिन बच्चों को वापस भेज दो। खुदा के लिए हमारी मदद करो। वह डायन बच्चों को मार देगी अपनी अय्याशी के लिए। उस कुछ नहीं चाहिए, उसको अय्याशी चाहिए, पैसा चाहिए, मेकअप चाहिए उसको वीडियो बनानी है, सारी दुनिया को दिखानी है। उसे बच्चों से कोई ताल्लुक नहीं। किस तरह की कपड़े पहनाती है, लोग उन मासूम बच्चों को भी नहीं छोड़ते। उनका वीडियो बनाकर डालते हैं। सीमा की बहन ने रोते हुए कहा, हम पर रहम करो। हमारे बच्चे को पाकिस्तान डिपोर्ट करो। हमें नहीं चाहिए। उसे रखो अपने पास, उसे नचवाओ, उससे पैसे कमबाओ, उसका जो करवाना है करवाओ, लेकिन चार बच्चों की जिंदगी तबाह मत करो। तुम्हें शर्म नहीं आती, तुम किस तरह की मां हो। किस तरह बच्चों के कपड़े पहनाती हो, तुम्हारे बच्चों के लोगों ने प्राइवेट पार्ट के वीडियो बनाकर पैसे कमाए हैं। खुदा के लिए उन बच्चों को छोड़ दो। उनका क्या कसूर है, यही ना कि तुम उनकी मां हो।

गुप्त दान देने वालों पर शिकंजा नहीं कस सकता है आयकर विभाग- हाईकोर्ट

मुंबई । मुंबई हाईकोर्ट ने शिर्डी के सांई बाबा ट्रस्ट को मिलने वाले गुप्त दान पर दायर आयकर विभाग की याचिका पर एक महत्वपूर्ण टिप्पणी की है। बॉम्बे हाई कोर्ट ने सुनवाई के दौरान कहा है, आयकर विभाग मंदिरों को गुप्त दान देने पर भक्तों की भावना को नियंत्रित नहीं कर सकता है। मुंबई हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति गिरीश कुलकर्णी और न्यायमूर्ति सोमशेखर की खंडपीठ ने कहा सांई बाबा भगवान दत्तात्रेय के अवतार माने जाते हैं। भक्त उनकी पूजा करते हैं। जो भी दान भक्त करते हैं। वह उनकी आस्था का प्रतीक है। साईं बाबा ट्रस्ट एक धार्मिक संस्थान है। इसे आयकर से छूट प्राप्त है। आयकर ट्रिब्यूनल का मानना है, सांई बाबा ट्रस्ट धर्मार्थ है, धार्मिक ट्रस्ट नहीं है। आयकर विभाग का कहना था। ट्रस्ट की आय 400 करोड रुपए से ज्यादा की है। धार्मिक कार्यों पर ट्रस्ट ने मात्र 2.30 करोड रुपए ही खर्च किए हैं। आयकर विभाग का कहना था, धार्मिक कार्यों के लिए यह राशि खर्च नहीं की जा रही है। मुंबई हाईकोर्ट की खंड पीठ ने इस मामले की सुनवाई करने के बाद फैसला सुरक्षित कर लिया है।

कंगना रनौत ने लोकसभा में कांग्रेस को खूब सुनाया, बोलीं- पिछले 10 साल में जितना विकास हुआ है, 60 साल में नहीं हुआ

नई दिल्ली। बीजेपी सांसद कंगना रनौत ने 26 जुलाई को लोकसभा में केंद्रीय बजट 2024 पर चर्चा के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तारीफ की। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी के नेतृत्व में पिछले 10 वर्षों में हिमाचल प्रदेश इतना फला-फूला, जो पिछले 60 वर्षों में नहीं हुआ था। उन्होंने भ्रष्ट नीतियों को लागू करने के लिए वर्तमान कांग्रेस सरकार की भी आलोचना की। कंगना ने लोकसभा में केंद्रीय बजट पर चर्चा में भाग लेते हुए कहा कि दस साल पहले देश में अर्थव्यवस्था चरमराती और लडखड़ाती हालत में थी, लेकिन पिछले दस साल में यह विश्व में 11वें स्थान से पांचवें नंबर पर आई है और तीसरे स्थान की ओर बढ़ रही है। हिमाचल प्रदेश के मंडी से निर्वाचित भाजपा सांसद ने कहा कि उनके राज्य में पिछले साल आई बाढ़ में व्यापक जनधन की हानि हुई और राज्य सरकार की ''लापरवाही की वजह से अब भी हिमाचल त्रासदी की हानि से बाहर नहीं आ पा रहा।'' उन्होंने बजट में हिमाचल प्रदेश में बाढ़ राहत के लिए विशेष पैकेज की घोषणा पर वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण और सरकार का आभार जताते हुए कहा कि ''पिछले दस साल में भाजपा ने हिमाचल प्रदेश में जितना विकास का काम किया है, उतना 60 साल में भी नहीं हुआ।'' कंगना ने कहा कि राज्य को अटल सुरंग जैसी वैश्विक अवसंरचना वाली परियोजनाएं मिली हैं, 11 हजार करोड़ रुपये की जलविद्युत परियोजनाएं स्वीकृत की गईहैं। उन्होंने मंडी में एक अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे की स्थापना की मांग सरकार से की। उन्होंने कहा, ''इस बजट में 2047 तक विकसित भारत बनाने का संकल्प है और तब भारत दुनिया की पहली अर्थव्यवस्था होगा।'' उन्होंने कहा कि यह बजट सभी वर्गों को सशक्त बनाने वाला है। कंगना ने हाल में संपन्न लोकसभा चुनाव के बाद तीसरी बार सरकार बनाने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को बधाई दी।

अग्निपथ योजना पर खुलेआम झूठ बोल रहे पीएम मोदी : खड़गे

-पूर्व सेना प्रमुख जनरल नरवणे के बयान का जिक्र

नई दिल्ली । कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर कारगिल विजय दिवस पर ओछी राजनीति करने का आरोप लगाया। कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे की आलोचना पीएम मोदी द्वारा द्रास में एक संबोधन के दौरान अग्निपथ योजना की आलोचना के लिए विपक्ष पर निशाना साधकर सेना को कमजोर करने का प्रयास करने का आरोप लगाने के कुछ घंटों बाद आई है। यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण और निंदनीय है कि प्रधानमंत्री मोदी जी कारगिल विजय दिवस पर शहीदों को श्रद्धांजलि देने जैसे अवसरों पर भी तुच्छ राजनीति कर रहे हैं।

खरगे ने कहा कि पीएम मोदी का दावा कि उनकी सरकार ने सेना के आदेश पर अग्निपथ योजना लागू सरासर झूठ और हमारे बहादुर सशस्त्र बलों का अक्षम्य अपमान है। खरगे ने कहा कि मोदी जी, आप ही हैं जो झूठ फैला रहे हैं! पूर्व सेना प्रमुख (सेवानिवृत्त) जनरल एमएम नरवणे ने ऑन रिकॉर्ड कहा है कि अग्निपथ योजना में 75 प्रमतिशत भर्तियों को स्थायित्व के लिए लिया जाना था और 25 प्रतिशत लोगों को 4 साल बाद जाने दिया जाना था। लेकिन मोदी सरकार ने इसका उलटा कर योजना को तीनों सशस्त्र बलों के लिए जबरन लागू कर दिया।

उन्होंने कहा कि पूर्व सेना प्रमुख (सेवानिवृत्त) जनरल नरवणे ने अपनी पुस्तक में, इस मोदी सरकार ने प्रकाशित होने से रोक दिया है, कहा है कि अग्निपथ योजना सेना और नौसेना और वायु सेना के लिए चौंकाने वाली थी।

मुंबई में भारी बारिश, पुलिस ने दी लोगों को घर पर रहने की सलाह

मौसम विज्ञान विभाग ने शनिवार तक के लिए रेड अलर्ट जारी किया

मुंबई (एजेंसी)। देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में भारी बारिश के पूर्वानुमान के बाद पुलिस ने मुंबई निवासियों को शनिवार सुबह 8:30 बजे तक घर के अंदर ही रहने की सलाह दी है। यह सलाह भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) द्वारा जारी रेड अलर्ट के बाद है। पिछले 24 घंटों में शुक्रवार सुबह 8:30 बजे तक मुंबई शहर में 44 मिमी, पूर्वी उपनगरों में 90 मिमी और पश्चिमी उपनगरों में 89 मिमी बारिश दर्ज की गई। मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने स्थिति का आकलन कर रायगढ़ कलेक्टर को बाढ़ प्रभावित निवासियों की सहायता करने का निर्देश दिया। भूस्खलन के कारण रायगढ़-पुणे मार्ग पर तम्हिनी घाट पर यातायात रोक दिया गया।

पुणे में सड़कों पर और लोगों के घरों में पानी घुस गया है। खडकवासला बांध और जलग्रहण क्षेत्र में काफी बारिश हो रही है। जिला कलेक्टर, नगर आयुक्त और पुलिस आयुक्त अलर्ट पर हैं, सीएम शिंदे ने बताया कि राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (एनडीआरएफ) और राज्य समकक्ष की टीमों को तैनात किया गया है, और सेना की एयरलिफ्टिंग टीमें स्टैंडबाय पर हैं।

सार्वजनिक सुरक्षा संदेश

मुंबई पुलिस ने पोस्ट किया, आईएमडी ने कल सुबह 8:30 बजे तक मुंबई के लिए रेड अलर्ट घोषित किया है। सभी मुंबईवासियों से अनुरोध है कि जब तक जरूरी न हो, घर के अंदर ही रहें। कृपया सुरक्षित रहें। आपात स्थिति के लिए 100, 112 डायल करें।

रनवे परिचालन को पहले सुबह 8:32 बजे से सुबह 8:43 बजे तक 11 मिनट के लिए रोका गया, और फिर सुबह 10:36 बजे से 10:55 बजे तक 19 मिनट के लिए रोका गया क्योंकि दृश्यता 300 मीटर तक गिर गई और रनवे विजुअल रेंज (आरवीआर) गिर गई।

यात्री मार्गदर्शन

यात्रियों को सलाह दी जाती है कि वे एयरलाइन वेबसाइटों और सोशल मीडिया चैनलों के माध्यम से उड़ान की स्थिति के बारे में अपडेट रहें और मुंबई में चल रही भारी बारिश और यातायात की भीड़ के बीच हवाई अड्डे के लिए अतिरिक्त यात्रा समय की योजना बनाएं।

पुतिन-मोदी मुलाकात से भन्नाया चीन... अब चौधरी बनने में जुटा

नई दिल्ली। भारत और रूस की दोस्ती की पूरी दुनिया में मिसाल दी जाती है। चाहे संयुक्त राष्ट्र का मंच हो या कोई बड़ा मसलाज्दोनों ने शुरू से एक-दूसरे का साथ दिया है। लेकिन भारत और रूस की यारी से चीन परेशान हो रहा है। चीन दोस्ती में दरार लाने की हरसंभव कोशिश करता रहता है। मगर यह दोस्ती अटूट है। खुद अमेरिका मानता है कि रूस-यूक्रेन जंग में भारत ही शांति दूत का काम कर सकता है। इस हकीकत से अनजान होकर चीन रूस-यूक्रेन जंग में चौधरी बनना चाहता है। दरअसल, जब से जंग भड़की है, चीन रूस पर डोरे डालने की पूरी कोशिश कर रहा है। ड्रैगन ने पुतिन को अलग-अलग तरीकों से बीते कुछ समय से लुभाने का प्रयास किया है। मगर पीएम मोदी के मॉस्को दौरे ने चीन की उम्मीदों पर पानी फेर दिया। चीन अब पीएम मोदी की पुतिन संग मुलाकात से भन्ना गया है। आनन-फानन में चीन रूस-यूक्रेन जंग और हमास-इजरायल जंग खत्म करवाने की झूठी कवायद में जुट गया है। इसके लिए चीन ने हमास और फतह के बीच सुलह करा दी है। ये दोनों कट्टर दुश्मन रहे हैं। चीन ने यूक्रेन के विदेश मंत्री को बीजिंग में बुला लिया। वह यूक्रेन को भरोसा दिला रहा है कि वह शांति दूत बनकर जंग खत्म करा देगा। यूक्रेनी विदेश मंत्री का बीजिंग आया इसलिए भी खास है, क्योंकि रूस और यूक्रेन जंग के शुरू होने के बाद पहली बार चीन ने किसी यूक्रेनी नेता की बीजिंग में मेजबानी की है। दरअसल चीन दुनिया को दिखाना चाहता है कि वर्ल्ड ऑर्डर में वह अब चीजें तय कर सकता है। चीन यूक्रेनी विदेश मंत्री संग मुलाकात के जरिए खुद को एक तटस्थ और शांति दूत के तौर पर पेश करना चाहता है ।जबकि हकीकत यह है कि चीन जंग को और भड़काता रहा है।

खालिस्तान समर्थक अमृतपाल सिंह का समर्थन करना चन्नी को पड़ा भारी, कांग्रेस घिरी

-बीजेपी बोली-कांग्रेस अलगाववादियों और आतंकवादियों की वकालत क्यों करती है?

नई दिल्ली (एजेंसी)। खालिस्तान समर्थक अमृतपाल सिंह के समर्थन में कांग्रेस के लोकसभा सदस्य चरणजीत सिंह चन्नी की टिप्पणी पार्टी पर भारी पड़ती दिख रही है। विवाद बढ़ने पर कांग्रेस ने चन्नी के बयान से कन्नी काट ली है। कांग्रेस ने साफ कहा कि चन्नी के विचार पार्टी की स्थिति को प्रतिबिंबित नहीं करते हैं। वरिष्ठ कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने एक्स पर लिखा कि अमृतपाल सिंह पर सांसद चरणजीत सिंह चन्नी के विचार उनके अपने और निजी हैं, और किसी भी तरह से कांग्रेस की स्थिति को प्रतिबिंबित नहीं करते हैं।

चन्नी के बयान के बाद बीजेपी, कांग्रेस पर हमलावर है। बीजेपी प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने चन्नी की आलोचना करते हुए कहा कि राहुल गांधी की दादी और दिवंगत पीएम इंदिरा गांधी की हत्या के पीछे खालिस्तान का विचार था। उन्होंने कहा कि भारत के टुकड़े-टुकड़े चाहने वाले अलगावादी के लिए बल्लेबाजी? राहुलजी को जवाब देना चाहिए कि खालिस्तान के जिस विचार के कारण पीएम इंदिराजी की हत्या हुई, उसकी सराहना की जा रही है। कांग्रेस हमेशा अलगावादियों और आतंकवादियों की वकालत क्यों करती है?

केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा कि कांग्रेस सांसद चन्नी की टिप्पणी दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्होंने कहा कि जिस खालिस्तानी ने इंदिरा गांधी की हत्या की, उसे आज चन्नी का खुला समर्थन मिल गया है, इसका मतलब है कि कांग्रेस खालिस्तानियों के साथ है। यह भारत की अखंडता पर हमला है...कार्रवाई होनी चाहिए। केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने कहा कि उन्होंने बजट पर कुछ नहीं बोला। उन्होंने आपातकाल पर बात की। मुझे लगता है चन्नी को नहीं पता। उन्हें पता होना चाहिए कि 25 जून 1975 को तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने हमारे संविधान के साथ क्या किया था। चन्नी को इतिहास पढ़ना चाहिए और आप पंजाब के पूर्व सीएम हैं। आपको 1984 के दंगों के पीड़ितों की विधवाओं से मिलना चाहिए।

मुझे मत सिखाओ, बल्कि मेरे से सीख लो, बांग्लादेशियों को शरण देने वाले मुद्दे पर विदेश मंत्रालय को ममता की नसीहत

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने हिंसा प्रभावित बांग्लादेश के शरणार्थियों को आश्रय देने की उनकी टिप्पणी पर आपत्ति जताने के लिए विदेश मंत्रालय (एमईए) पर पलटवार किया। बनर्जी ने कहा कि मैं संघीय ढांचे को अच्छी तरह से जानती हूं। मैं सात बार सांसद रही, मैं दो बार केंद्रीय मंत्री रही। मैं विदेश मंत्रालय की नीति को किसी और से बेहतर जानती हूं। उन्हें मुझे सबक नहीं सिखाना चाहिए। उन्हें इससे सीखना चाहिए। नौकरी में आरक्षण के विरोध को लेकर बांग्लादेश में हुई हिंसक झड़पों के बाद ममता बनर्जी ने संयुक्त राष्ट्र प्रस्ताव के तहत बांग्लादेशी शरणार्थियों को आश्रय प्रदान करने की अपनी प्रतिबद्धता के बारे में बात की थी। उनकी टिप्पणी कोलकाता में एक सार्वजनिक कार्यक्रम के दौरान आई, जहां उन्होंने हिंसा से प्रभावित लोगों की मदद करने की इच्छा व्यक्त की।

उन्होंने तृणमूल कांग्रेस की 'शहीद दिवस' रैली में कहा कि अगर असहाय लोग बंगाल के दरवाजे पर दस्तक देंगे तो हम निश्चित रूप से उन्हें आश्रय देंगे। बांग्लादेश के विदेश मंत्रालय ने बनर्जी की टिप्पणियों पर नाराजगी व्यक्त करते हुए राजनयिक चैनलों के माध्यम से कहा कि उनकी टिप्पणियां भ्रम पैदा कर सकती हैं और जनता को गुमराह कर सकती हैं। विदेश मंत्रालय ने पुष्टि की कि उसे ममता बनर्जी की टिप्पणी पर ढाका से एक लिखित आपत्ति मिली है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जयसवाल ने कहा कि विदेशी संबंधों से जुड़े मामले केंद्र सरकार का विशेषाधिकार है।

जयसवाल ने कहा कि हमारे संविधान की सातवीं अनुसूची - सूची एक - संघ सूची - आइटम 10 के तहत, विदेशी मामलों का संचालन और सभी मामले जो संघ को किसी विदेशी देश के साथ संबंध में लाते हैं, केंद्र सरकार का एकमात्र विशेषाधिकार है।

कड़ी सुरक्षा के बीच राहुल गांधी विशेष कोर्ट में हुए हाजिर, दर्ज कराया अपना बयान

सुलतानपुर । केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह पर आपत्तिजनक टिप्पणी के मामले में कांग्रेस सांसद व लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी शुक्रवार को एमपी-एमएलए कोर्ट में हाजिर हुए। एमपी-एमएलए मजिस्ट्रेट शुभम वर्मा की कोर्ट में राहुल गांधी ने अपने वकील काशी प्रसाद शुक्ल व परिवादी के वकील संतोष पांडेय की मौजूदगी में अपना बयान दर्ज कराया। कोर्ट ने परिवादी के साक्ष्य के लिए 12 अगस्त की तारीख नियत की है। परिवादी के वकील संतोष पांडेय ने बताया बंगलुरु में एक जनसभा के दौरान राहुल गांधी ने तत्कालीन बीजेपी राष्ट्रीय अध्यक्ष व मौजूदा केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह पर आपत्तिजनक टिप्पणी की थी। जिसको लेकर कोतवाली देहात थाने के हनुमानगंज निवासी कोआपरेटिव के पूर्व चेयरमैन व बीजेपी नेता विजय मिश्रा ने 4 अगस्त 2018 को राहुल गांधी के खिलाफ मानहानि का मुकदमा दायर किया था, जिसमें राहुल गांधी की जमानत पहले ही हो चुकी है। कोर्ट में अपना बयान दर्ज कराने के बाद कोर्ट से बाहर आते ही राहुल गांधी जिन्दाबाद के जमकर नारे लगे।

बजट में नहीं मिली राहत, महाराष्ट्र विस चुनाव में प्याज बनेगा मुद्दा

मुंबई, (एजेंसी)। एनडीए सरकार को हाल के लोकसभा चुनावों में महाराष्ट्र के प्याज बेल्ट में झटका लगा है। पार्टी को छह सीटों में से केवल एक पर जीत हासिल हुई है। मुख्य रूप से फसल निर्यात पर प्रतिबंध के चलते व्यापारियों के रूप में आगामी विधानसभा चुनावों में भी इसका असर दिखाई दे सकता है। किसानों में बजट द्वारा इस पर प्रतिबंध न हटाए जाने पर निराशा है। प्याज के मुफ्त निर्यात पर लंबे समय तक प्रतिबंध एनडीए की संभावनाओं को नुकसान पहुंचा रहा है, नासिक में एक बीजेपी नेता ने निराशा जताते हुए कहा कि हमारे नेता इसके राजनीतिक प्रभाव के बारे में केंद्रीय नेतृत्व को समझाने में सक्षम नहीं थे।

डिंडोरी, नासिक, बीड, औरंगाबाद, अहमदनगर और धुले लोकसभा सीटें राज्य की प्याज बेल्ट वाली हैं, जो देश के प्याज उत्पादन का करीब 34फीसदी हिस्सा है। राज्य की 40फीसदी से ज्यादा प्याज की खेती नासिक में ही होती है। औरंगाबाद को छोड़कर, जहां एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना के संदीपन भुमारे ने जीत हासिल की, बाकी सभी सीटें एनडीए हार गईं है। अहमदनगर और बीड में, एनसीपी (सपा) के नीलेश लंके और बजरंग सोनावणे जैसे अपेक्षाकृत नए लोगों ने सुजय विखे-पाटिल और पंकजा मुंडे जैसे बीजेपी के दिग्गजों को हार का मजा चखाया है।

नासिक जिले के बलगन तालुका से शिवसेना नेता (शिंदे गुट) ने कहा कि विपक्ष लगातार प्याज की कीमतों का मुद्दा उठा रहा है। उन्होंने कहा कि हमने अपने नेताओं से निर्यात का मुद्दा केंद्र के समक्ष उठाने को कहा था। विधानसभा चुनाव नजदीक हैं और बजट में इस मुद्दे का समाधान नहीं किया गया है, इसका उल्टा असर पड़ सकता है। निर्यात प्रतिबंध के कारण पिछले साल ज्यादातर समय प्याज की कीमतें कम रहीं। डिंडोरी लोकसभा सीट के एक किसान ने कहा कि सरकार बजट में प्रतिबंध हटा देगी, लेकिन लगता है कि केंद्र ने इससे सबक नहीं सीखा है। विधानसभा चुनाव में यह मुद्दा बना रहेगा। हम लोगों में से ज्यादातर सरकार के इस कदम से आहत हैं।

केजरीवाल की सेहत को लेकर इंडिया गठबंधन का 30 को दिल्ली में प्रदर्शन

नई दिल्ली (एजेंसी)। आम आदमी पार्टी (आप) ने कहा कि इंडिया ब्लॉक 30 जुलाई को दिल्ली के जंतर-मंतर पर एक रैली आयोजित कर रहा है, जिसमें तिहाड़ जेल में बंद दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल की गिरती सेहत का मुद्दा उठाया जाएगा। आप नेता बीजेपी पर जेल में केजरीवाल की हत्या की साजिश रचने का आरोप लगा रहे हैं, जिसमें उनकी मेडिकल रिपोर्ट का हवाला दिया गया है, जिसमें दिखाया है कि तीन जून से सात जुलाई के बीच उनका शुगर लेवल 26 बार नीचे आया।

आप नेताओं ने कहा कि केजरीवाल की गिरती सेहत का मुद्दा उठाने के लिए इंडिया ब्लॉक 30 जुलाई को जंतर-मंतर पर एक बड़ी रैली करेगा। दिल्ली में सत्तारूढ़ पार्टी ने बीजेपी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार और उपराज्यपाल वीके सक्सेना पर सीएम केजरीवाल की जान से खेलने का आरोप लगाया है। दिल्ली की मंत्री आतिशी से रैली के बारे में कहा कि बीजेपी दिल्ली के लोगों के खिलाफ साजिश कर रही है। वह दिल्ली के लोगों के काम रोक रही है। वह दिल्ली के लोगों के पैसा रोक रही है। बीजेपी ने दिल्ली के लोगों के लिए काम करने वाले अरविंद केजरीवाल, मनीष सिसोदिया और सत्येंद्र जैन को गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया है।

आतिशी ने यह भी दावा किया कि जब बीजेपी को पता चला कि केजरीवाल को सुप्रीम कोर्ट से जमानत मिल सकती है तो उन्होंने उन्हें सीबीआई से गिरफ्तार करवाया। आतिशी ने दावा किया कि उन्हें पता है कि केजरीवाल को पिछले 30 सालों से डायबिटीज है। हिरासत में उनका वजन 8.5 किलो कम हो गया है। ग्लूकोमीटर पूरे दिन उनके शुगर लेवल पर नजर रखता है। इस डिवाइस का डेटा एलजी और केंद्र के साथ साझा किया जाता है। उन्हें पता है कि केजरीवाल का शुगर लेवल कुल 34 बार गिरा है। बीजेपी चाहती है कि उनका स्वास्थ्य खराब हो जाए।

सभी ब्लॉक पार्टियां केजरीवाल की हिरासत और उनके स्वास्थ्य पर मौजूदा खतरे के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करेंगी। पिछले हफ्ते, वीके सक्सेना ने दिल्ली के मुख्य सचिव को केजरीवाल

की स्वास्थ्य स्थिति को रेखांकित करते हुए लिखा था, जिसमें कहा गया था कि तिहाड़ जेल अधीक्षक द्वारा दी गई रिपोर्ट से पता चला है कि सीएम जानबूझकर अनुशंसित कैलोरी से कम कैलोरी ले रहे हैं। एलजी ने तत्काल कार्रवाई और केजरीवाल के रक्त शर्करा के स्तर की निगरानी के लिए सख्त प्रोटोकॉल लागू करने की मांग की।

डब्ल्यूएचओ का आंकड़ा: हर साल डूबने से करीब 236,000 लोगों की मौत

जिनेवा। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की दक्षिण पूर्व एशिया की क्षेत्रीय निदेशक साइमा वाजेद ने बताया कि दुनिया भर में हर साल डूबने से करीब 236,000 लोगों की मौत होती है। यह आंकड़ा प्रतिदिन 350 या प्रति घंटे 26 है। हर साल 25 जुलाई का दिन वर्ल्ड ड्राउनिंग प्रिवेंशन डे के रूप में मनाया जाता है। क्षेत्रीय निदेशक ने कहा, 2019 में दक्षिण पूर्व एशिया क्षेत्र में डूबने से 70,034 लोगों की जान चली गई, इससे यह दुनिया भर में डूबने से होने वाली मौतों में दूसरा सबसे बड़ा क्षेत्र बन गया। उन्होंने कहा, डूबना एक अचानक और खामोश मौत है। अधिकांश घटनाएं निगरानी की कमी, खतरनाक जल निकायों के संपर्क में आने, अपर्याप्त जागरूकता और गरीबी के कारण घरों के पास होती हैं। वाजेद ने कहा कि इसके लिए कई निवारक उपाय मौजूद हैं जो इस मुद्दे को संबोधित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। वाजेद ने कहा, डूबने से होने वाली मौतों की रोकथाम में हम सभी की भूमिका आवश्यक है, चाहे जागरूकता बढ़ानी हो, प्रभावी समाधानों के बारे में जानकारी को बढ़ावा देना हो, स्थानीय या राष्ट्रीय सरकारों के साथ रोकथाम योजनाओं और नीतियों पर सहयोग करना हो, संबंधित संगठनों के साथ स्वयं सेवा करनी हो या पानी के आसपास व्यक्तिगत और पारिवारिक सुरक्षा सुनिश्चित करनी हो, हममें से हर कोई इसमें बदलाव ला सकता है।

नीट पेपर लीक मामला: अधजले पेपरों ने सीबीआई को आरोपियों तक पहुंचाया

नई दिल्ली (एजेंसी)। । नीट-यूजी 2024 परीक्षा के आधे जले हुए पेपर ने सीबीआई को एक अहम सुराग मिला और उसने पेपर लीक मामले को सुलझाने में मदद की। नीट पेपर लीक मामले में अपने आधिकारिक बयान में सीबीआई ने अपराध के बारे में खुलासा किया। सीबीआई के मुताबिक नीट यूजी 2024 पेपर पांच मई, 2024 को झारखंड के हजारीबाग में ओएसिस स्कूल से अवैध रूप से प्राप्त किया गया था।

सीबीआई ने कहा कि पंकज कुमार जिसे आदित्य और साहिल के नाम से भी जाना जाता है, पेपर लीक के पीछे के मास्टरमाइंड में से है, साथ ही स्कूल के प्रिंसिपल, वाइस प्रिंसिपल और एक सहयोगी परीक्षा के पेपर तक अनाधिकृत पहुंच में शामिल थे।

आधे जले हुए पेपरों के बरामद टुकड़ों ने सीबीआई को नीट परीक्षा केंद्र तक पहुंचने में मदद की, जहां से इसे लीक किया गया था। पांच मई की सुबह नीट पेपर से भरे ट्रंक स्कूल लाए गए और उन्हें नियंत्रण कक्ष में रख दिया गया। सीबीआई ने कहा कि ट्रंक पहुंचने के कुछ ही मिनट बाद स्कूल के प्रिंसिपल और वाइस प्रिंसिपल ने पेपर लीक के मास्टरमाइंड को कमरे में जाने दिया।

गिरोह ने पेपर से भरे ट्रंक को खोलने के लिए अत्याधुनिक उपकरणों का इस्तेमाल किया और बिना इजाजत उसमें से सामग्री निकाल ली। पेपर तक पहुंचने के बाद, इसे हजारीबाग में एमबीबीएस छात्रों द्वारा हल कराया गया। हल किए गए पेपर को फिर चुनिंदा छात्रों को पहुंचा दिया गया, जिन्होंने उत्तरों के लिए रकम भी दी। सीबीआई ने ऑपरेशन में शामिल अधिकांश सॉल्वरों की पहचान कर उन्हें गिरफ्तार कर लिया है। जांच में यह भी पता चला है कि आरोपियों को ऐसे व्यक्तियों के एक नेटवर्क का समर्थन प्राप्त था, जिन्होंने उम्मीदवारों के आवास और उनके परिवहन का प्रबंध किया था।

वर्तमान में उन सभी छात्रों का पता लगाने का प्रयास किया जा रहा है, जिन्हें लीक हुए पेपर मिले थे और उनके खिलाफ उचित कार्रवाई की जा रही है। इस साल 23 जून से चल रही सीबीआई जांच में अब तक 36 गिरफ्तारियां हो चुकी हैं, जिनमें बिहार पुलिस द्वारा पकड़े गए 15 लोग शामिल हैं।

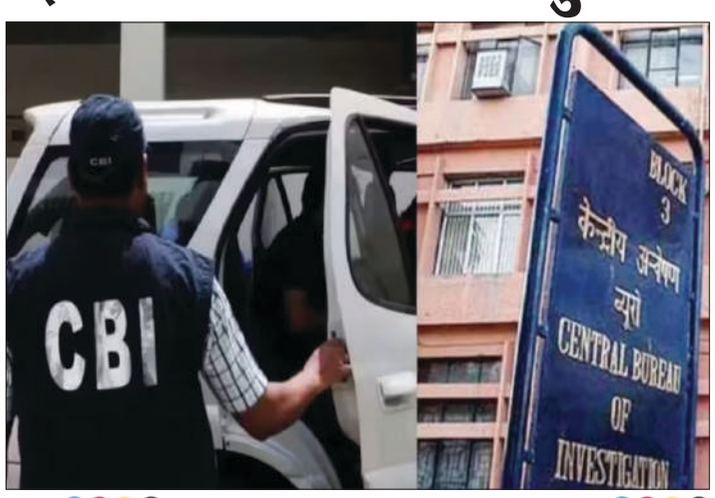

पेरिस ओलंपिक

हॉकी की नई नर्सरी बना मिट्ठापुर

आज मैच में जालंधर के खिलाड़ियों पर रहेगी नजर

जालंधर (एजेंसी)। गांव को किसी समय में हाकी की नर्सरी कहा जाता था। यहां से कई अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी निकले थे। हालांकि पिछले कुछ वर्षों में गांव मिट्ठापुर ने भारतीय हाकी टीम को कई ओलिंपियन और अंतरराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी दिए हैं। इस कारण संसारपुर की जगह मि?ट्ठापुर लेता हुआ दिख रहा है और अब इसे हाकी की नई नर्सरी के रूप में जाना जा रहा है।

पिछले ओलिंपिक में पदक जीतने वाली भारतीय हाकी टीम में कप्तान सहित तीन खिलाड़ी मिट्ठापुर गांव से ही संबंधित थे। इनमें तत्कालीन

कप्तान मनप्रीत सिंह, मनदीप सिंह और वरुण कुमार शामिल थे। इनमें से मनप्रीत और मनदीप इस बार भी भारतीय टीम का हिस्सा हैं।

मिट्ठापुर के कुछ खिलाड़ियों ने पिछले समय में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई है। पहले गांव में स्थित दर्शन सिंह केपी हाकी स्टेडियम में कई वर्षों से टर्फ नहीं लगी थी। खिलाड़ी घास वाले मैदान में अभ्यास करते थे। तुब लोगों ने इसी गांव से निकले ओलिंपियन व तत्कालीन खेल मंत्री परगट सिंह के समक्ष टर्फ बिछाने की मांग उठाई थी। उस समय परगट सिंह ने भी युवाओं का जज्बा देखते हुए स्टेडियम में टर्फ बिछाने के लिए 6.85 करोड़ रुपये की ग्रांट जारी की थी। इस राशि से स्टेडियम की चारदीवारी और लाइटें भी लगाई जानी थीं। अब मैदान में टर्फ बिछ चुकी है और स्टेडियम का उद्घाटन होना है। बताया जा रहा है कि मुख्यमंत्री भगवंत मान जल्द ही इसका उद्घाटन कर सकते हैं। पेरिस ओलिंपिक में मनप्रीत और मनदीप के अलावा जालंधर के गांव खुसरोपुर से हार्दिक सिंह व रामा मंडी के सुखजीत सिंह भी शामिल हैं।

केएससीए-टी-20 में राहुल द्रविड़ का बेटा मचाएगा धमाल

मैसूर (एजेंसी)। भारत के पूर्व मुख्य कोच और कप्तान राहुल द्रविड़ के बेटे समित द्रविड़ को महाराजा ट्रॉफी केएससीए टी20 के आगामी सीजन के लिए मैसूर वॉरियर्स ने अपने साथ जोड़ लिया है। वॉरियर्स ने मध्यक्रम के बल्लेबाज और सीमर को 50,000 रुपए में मैसूर ने अपने साथ जोड़ा है। मैसूर प्रबंधन ने एक्स पर इसकी घोषणा करते हुए लिखा कि उनका हमारी टीम में

होना अच्छा है क्योंकि उन्होंने केएससीए के लिए विभिन्न आयु वर्ग के टूर्नामेंटों में काफी संभावनाएं दिखाई हैं।

समित उस कर्नाटक अंडर-19 टीम का हिस्सा थे जिसने इस सीज़न की कूच बिहार ट्रॉफी जीती थी, और वह इस साल की शुरुआत में मेहमान लंकाशायर टीम के खिलाफ केएससीए इलेवन के लिए भी खेल चुके हैं। पिछले सीज़न के उपविजेता वॉरियर्स का नेतृत्व करुण नायर करेंगे और इसकी गेंदबाजी भारत के तेज गेंदबाज प्रसिद्ध कृष्णा की मौजूदगी से मजबूत होगी, जिन्हें 1 लाख रुपए में खरीदा गया था। नायर को फ्रैंचाइजी ने बरकरार रखा था।

विमेंस एशिया कप के फाइनल में पहुंचा भारत

दांबुला (एजेंसी)। भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने एकतरफा बांग्लादेश को रौंदते हुए एशिया कप 2024 के खिताबी मुकाबले का टिकट कटा लिया। दांबुला के रंगिरी दांबुला अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम में खेले गए सेमीफाइनल में उसने बांग्लादेश पर 10 विकेट से बड़ी जीत दर्ज की। मैच में बांग्लादेश ने टॉस जीतकर पहले बैटिंग करने का फैसला किया और टीम 8 विकेट के नुकसान पर 80 रन ही बना पाई। जवाब में भारतीय टीम ने कमाल का प्रदर्शन किया। ओपनर शेफाली वर्मा ने 28 गेंदों में 2 चौके 37 रनों की पारी खेली, जबकि उपकप्तान स्मृति मंधाना ने 39 गेंदों में 9 चौके और 1 छक्के के दम पर 55 रन ठोके। हरमनप्रीत कौर की कप्तानी वाली भारतीय टीम को अभी तक टूर्नामेंट में कोई हरा नहीं पाया है।

भारतीय टीम का जोरदार आगाज

छोटे लक्ष्य का पीछा करने उतरी टीम इंडिया ने जोरदार आगाज किया। ओपनर शेफाली वर्मा और स्मृति मंधाना ने जमकर ठुकाई करते हुए 5 ओवरों में स्कोरकार्ड पर 45 रन टांग दिए। इस दौरान विपक्षी टीम एक भी विकेट नहीं ले सकी। शेफाली 13 गेंदों में 17 और मंधाना 17 गेंदों में 27 रन बनाकर नाबाद रहीं।

शेफाली वर्मा-स्मृति मंधाना के तूफान में उड़ा बांग्लादेश

बांग्लादेश की पारी 80 रनों पर हुई समाप्त

भारत के खिलाफ मुकाबले में बांग्लादेश की टीम पारी के आखिरी पांच ओवर में सिर्फ 31 रन ही बना पाई। इस तरह टीम ने निर्धारित 20 ओवर के खेल में 8 विकेट के नुकसान पर 80 रन का स्कोर खड़ा किया। बांग्लादेश की तरफ से सबसे ज्यादा निगार सुल्ताना ने 31 रनों का योगदान दिया। इसके अलावा सोरना अख्तर ने 19 रनों का योगदान दिया। बॉलिंग में भारत की तरफ से सबसे ज्यादा रेणुका सिंह और राधा यादव ने तीन-तीन विकेट लिए।

भारतीय गेंदबाजों के आगे बांग्लादेश की हालत खराब

भारत के खिलाफ मुकाबले में बांग्लादेश की हालत 10 ओवर के खेल तक और खराब हो गई। 10 ओवर की समाप्ति तक टीम ने सिर्फ 32 रन बनाए, जिसमें उन्होंने अपने चार विकेट गंवाए। इस समय तक टीम के लिए निगार सुल्ताना 10 रन और रबिया खान एक रन बनाकर उनका साथ दे रही थी।

5 ओवर के बाद बांग्लादेश: 21-3, सभी विकेट रेणुका सिंह के नाम

टॉस जीतकर पहले बैटिंग करने उतरी बांग्लादेश टीम की शुरुआत बेहद खराब रही। उसने शुरुआती 5 ओवरों में 3 विकेट खोकर सिर्फ 21 रन बनाए। उसके सभी 3 विकेट भारत की स्टार गेंदबाज रेणुका सिंह के नाम रहे। रेणुका सिंह की पहली शिकार दिलारा अख्तर बनीं, जिन्हें उमा छेत्री ने कैच किया। वह 4 गेंदों में 6 रन बना सकीं, जबकि तीसरे ओवर में रेणुका ने इश्मा तंजीम को 8 रन पर तनुजा के हाथों कैच आउट कराया। रेणुका सिंह की तीसरी शिकार मुर्शिदा खातुन बनीं, जिनका जबरदस्त कैच शेफाली वर्मा ने डाइव लगाकर लपका।

निगार सुल्ताना ने संभाल रखा है मोर्चा

15 ओवर की समाप्ति तक बांग्लादेश की महिला टीम ने 6 विकेट के नुकसान पर 49 रन बना लिए। टीम लगातार एक छोर से अपना विकेट गंवा रही है, लेकिन निगार सुल्ताना ने अकेले भारतीय गेंदबाजों के खिलाफ मोर्चा संभाल रखा है। भारत की गेंदबाज लगातार बांग्लादेशी टीम पर अपना दबाव बनाए हुए है।

पेरिस ओलंपिक 2024

आज लगातार तीसरा पदक जीतने उतरेंगी सिंधु, सात्विक-चिराग की निगाहें गोल्ड पर

पेरिस (एजेंसी)। सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की स्टार भारतीय जोड़ी ओलंपिक में शनिवार से शुरू होने वाली बैडमिंटन प्रतियोगिता के पुरुष युगल में स्वर्ण पदक की प्रबल दावेदार के रूप में शुरुआत करेगी जबकि पीवी सिंधु लगातार तीसरा पदक जीत कर भारतीय खेलों में नया इतिहास रचने की कोशिश करेगी। सिंधु ने पिछले दो ओलंपिक खेलों में रजत और कांस्य पदक जीता था तथा पेरिस में हैट्रिक पूरी करने के लिए उन्हें बड़ी प्रतियोगिताओं में खेलने के अपने अनुभव का अच्छी तरह से इस्तेमाल करना होगा।

जहां तक सात्विक और चिराग का सवाल है तो पेरिस उनके लिए भाग्यशाली साबित हुआ है। उन्होंने इस साल फ्रेंच ओपन में पुरुष युगल का खिताब जीता था। अश्विनी पोनप्पा के लिए यह अंतिम ओलंपिक हो सकता है। वह महिला युगल में तनीषा क्रैस्टो के साथ मिलकर भारतीय चुनौती पेश करेगी। पुरुष एकल में एचएस प्रणय और लक्ष्य से भी पहली बार ओलंपिक खेलों में अपनी चुनौती पेश करेंगे। इन दोनों ने भी पदक को अपना लक्ष्य बनाया है। इन दोनों में से हालांकि एक ही पदक जीत सकता है क्योंकि ग्रुप

चरण से आगे बढ़ने पर प्री क्वार्टर फाइनल में यह दोनों खिलाड़ी आमने-सामने होंगे।

भारत के एकल खिलाड़ियों का ओलंपिक से पहले प्रदर्शन उतार चढ़ाव वाला रहा लेकिन पुरुष युगल में सात्विक और चिराग ने शानदार प्रदर्शन किया। इस साल वह चार प्रतियोगिताओं के फाइनल में पहुंचे हैं और उन्होंने दो खिताब जीते हैं। सात्विक और चिराग को तीसरी वरीयता दी गई है। उन्हें इंडोनेशिया के मौजूदा ऑल इंग्लैंड चैंपियन फजर अल्फियन और मुहम्मद रियान अर्दिआंतो, जर्मनी के मार्क लैम्सफस और मार्विन सेडेल तथा फ्रांस के लुकास कोरवी और रोनन लाबार के साथ ग्रुप सी में रखा गया है।

ओलंपिक से पहले सिंधु की फॉर्म अच्छी नहीं रही है लेकिन उन्होंने प्रकाश पादुकोण की निगरानी में पिछले कुछ महीनो से कड़ा अभ्यास किया है और वह ओलंपिक पदक की हैट्रिक पूरी करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। सिंधु की पदक की राह में एन से यंग, चेन यू फी, ताई त्जु यिंग और कैरोलिना मारिन जैसी खिलाड़ी रोड़ा बन सकती हैं लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि भारतीय खिलाड़ी बड़ी प्रतियोगिताओं में अच्छा प्रदर्शन करती रही है। ग्रुप चरण में उनका सामना एस्टोनिया की दुनिया की 75वें नंबर की खिलाड़ी क्रिस्टिन कुबा और मालदीव की 111वें नंबर की फातिमा रज्जाक से होगा।

नॉकआउट चरण में उनका सामना चीन की दो खिलाड़ियों से

ही बिंगजियाओ और ओलंपिक चैंपियन चेन यू फेई से हो सकता है। पुरुष एकल में लक्ष्य को कोई वरीयता नहीं दी गई है। उन्हें अपने ग्रुप में इंडोनेशिया के तीसरी वरीयता प्राप्त जोनाथन क्रिस्टी का सामना करना होगा जिनका भारतीय खिलाड़ी के खिलाफ 4-1 का रिकॉर्ड है। लक्ष्य को नॉकआउट चरण में पहुंचने के लिए केविन कॉर्डन और बेल्जियम के जूलियन कैरागी को भी हराना होगा। प्रणय को ग्रुप के में वियतनाम के ले डुक फाट और जर्मनी के फैबियन रोथ जैसे कम रैंकिंग वाले खिलाड़ियों के साथ रखा गया है। उन्हें आगे बढ़ने में किसी तरह की दिक्कत नहीं होनी चाहिए। अश्विनी और तनीषा को ग्रुप सी में जापान की चौथी वरीयता प्राप्त जोड़ी चिहारू शिदा और नामी मात्सुयामा तथा दक्षिण कोरियाई किम सो यियोंग और कोंग ही योंग के साथ रखा गया है जिनसे उन्हें कड़ी चुनौती मिल सकती है। इस ग्रुप में ऑस्ट्रेलिया की सेतियाना मापासा और एंजेला यू भी हैं।

श्रीलंका के खिलाफ एकदिवसीय सीरीज में एक अहम रिकार्ड बना सकते हैं विराट कोहली

मुम्बई। श्रीलंका के खिलाफ अगले माह होने वाली एकदिवसीय क्रिकेट सीरीज में भारतीय टीम के अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली एक बड़ी उपलब्धि हासिल कर सकते हैं। विराट इस सीरीज के दौरान ऐसा रिकॉर्ड बना सकते है जो किसी अन्य क्रिकेटर के लिए तोड़ना असंभव की तरह रहेगा। विराट इस सीरीज में 27,000 रन का आंकड़ा पार कर सकते हैं।

विराट के नाम अभी 53.55 की औसत से 26,884 रन हैं। ऐसे में अगर वह श्रीलंका के खिलाफ एकदिवसीय सीरीज में 116 रन बनाते हैं तो उनके तीनों प्रारुपों को मिलाकर कुल 27 हजार रन हो जाएंगे। यह वो आंकड़ा है, जो अब तक केवल तीन खिलाड़ी सचिन तेंदुलकर 34357, कुमार संगकारा 28016 और रिकी पोंटिंग 27483 ही हासिल कर पाये हैं।

आज के दौर के क्रिकेटरों की बात करें तो विराट के अलावा एक भी ऐसा बल्लेबाज नहीं है जिसने 20,000 रन बनाए हों। वर्तमान समय के क्रिकेटरों में विराट कोहली के बाद जो रूट 19,355 रनों के साथ दूसरे और रोहित 19,077 रनों के साथ ही तीसरे नंबर पर हैं। रूट 33 साल के हैं जबकि रोहित की उम्र 37 साल है। अब अगर ये दोनों खिलाड़ी 40 साल की उम्र तक खेलें तो जो रूट के लिए तो यह संभव है कि वे 27 हजार रन बना लें। रोहित के लिए भी ये काफी कठिन है। रोहित ने अब तक कुल 480 मैच खेले हैं। इसमें उन्होंने 43.25 की औसत से 19,077 रन बनाए हैं। उन्हें 27 हजार रन का आंकड़ा हासिल करने के लिए 7923 रन और बनाने होंगे। रोहित को 27 हजार रन तक पहुंचने में करीब चार साल लगेंगे। उनके 40 साल की उम्र तक खेलने की संभावनाएं नहीं हैं। ऐसे में वह इस रिकार्ड तक नहीं पहुंच सकते।

आज सूर्यकुमार और गंभीर के नए युग में दबदबा बरकरार रखने के लिए उतरेगा भारत

पालेकल (श्रीलंका) (एजेंसी)। गौतम गंभीर और सूर्यकुमार यादव की नवनियुक्त कोच और कप्तान की जोड़ी के साथ भारतीय टीम श्रीलंका के खिलाफ शनिवार से यहां शुरू होने वाली तीन टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों की श्रृंखला में अपनी विशेष छाप छोड़ने की कोशिश करेगी। दो बार के विश्व कप विजेता गंभीर मुख्य कोच के रूप में जबकि टी20 के सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाजों में से एक सूर्यकुमार खेल के इस छोटे प्रारूप में कप्तान के रूप में अपनी नई पारी शुरू करेंगे।

गंभीर आईपीएल में कप्तान और मेंटर (मार्गदर्शक) के रूप में काफी सफल रहे हैं। वह राहुल द्रविड़ की जगह लेंगे जिनके कोच रहते हुए भारत ने अच्छी सफलताएं हासिल की थी। द्रविड़ के मुख्य कोच रहते हुए भारत ने आईसीसी प्रतियोगिताओं में तीनों प्रारूप के

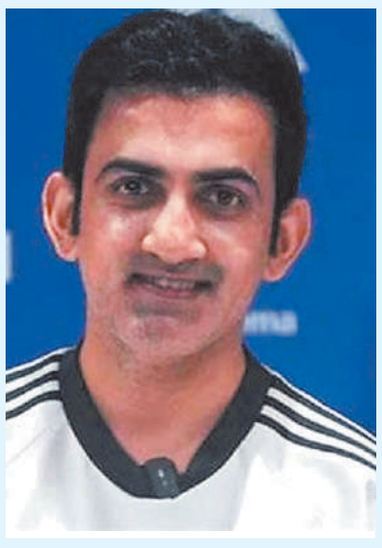

फाइनल में जगह बनाई तथा गंभीर को अब इन सफलताओं को नए मुकाम पर पहुंचाना होगा। सूर्यकुमार को कप्तान बनाना थोड़ा हैरानी भरा फैसला रहा क्योंकि रोहित शर्मा के टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने के बाद हार्दिक पंड्या को इस पद का प्रमुख दावेदार माना जा रहा था। चयन समिति ने सूर्यकुमार के कप्तान के रूप में कम अनुभव को नजरअंदाज करके उन्हें टीम की कमान सौंपी है। अगला टी20 विश्व कप 2026 में भारत और श्रीलंका की संयुक्त मेजबानी में खेला जाएगा तथा चयनकर्ताओं के पास उसके लिए टीम तैयार करने के लिए अभी काफी समय है। भारतीय टीम में यह बदलाव पिछले महीने विश्व कप जीतने तथा रोहित, विराट कोहली और रविंद्र जडेजा के टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने के बाद आया है।

मैंने अलग-अलग कप्तानों से काफी कुछ सीखा है-सूर्यकुमार

भारतीय टी20 टीम के नवनियुक्त कप्तान सूर्यकुमार यादव ने कहा कि उन्होंने मैदान पर नेतृत्व करने का पूरा लुत्फ उठाया है तथा पिछले कई वर्षों में अलग-अलग कप्तानों की अगुवाई में खेलते हुए उन्होंने काफी कुछ सीखा है। भारतीय टीम के विश्व चैंपियन बनने के बाद रोहित शर्मा ने सबसे छोटे प्रारूप से संन्यास ले लिया था। इसके बाद उनकी जगह सूर्यकुमार को कप्तान ने किया गया। उन्हें हार्दिक पांड्या पर प्राथमिकता दी गई जिन्हें पहले टी20 टीम की कप्तानी का दावेदार माना जा रहा था। सूर्यकुमार कप्तान के रूप में अपनी शुरुआत श्रीलंका के खिलाफ शनिवार से यहां शुरू होने वाली तीन मैच की टी20 श्रृंखला से करेंगे। मध्यक्रम के इस बल्लेबाज ने बीसीसीआई टीवी से कहां, 'भले ही मैं कप्तान नहीं था लेकिन मैंने हमेशा मैदान पर नेतृत्वकर्ता की भूमिका का लुत्फ उठाया है। मैंने हमेशा अलग-अलग कप्तानों से काफी कुछ सीखा है। यह अच्छा एहसास और बड़ी जिम्मेदारी है। नए कप्तान सूर्यकुमार और नए मुख्य कोच गौतम गंभीर की मौजूदगी में भारतीय टी20 टीम नए दौर की शुरुआत करेगी।

सूर्यकुमार कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) की तरफ से 2014 में गंभीर की अगुवाई में इंडियन प्रीमियर लीग में खेल चुके हैं और इन दोनों के आपस में काफी अच्छे संबंध हैं।

साल 2022-23 में 10 में से सात लोग इंट्राडे ट्रेडिंग में नुकसान में रहे

- इंट्राडे ट्रेडिंग शेयर खरीदने-बेचने वालों की संख्या में भी बहुत ज्यादा बढ़ोतरी देखी गई

नई दिल्ली ।

सेबी के एक अध्ययन में बताया गया कि साल 2022-23 में 10 में से 7 लोगों ने इक्विटी कैश सेगमेंट में इंट्राडे ट्रेडिंग से नुकसान उठाया। वहीं इसी दौरान इंट्राडे ट्रेडिंग शेयर खरीदने-बेचने वाले लोगों की संख्या में भी बहुत ज्यादा बढ़ोतरी देखी गई है। साल 2018-19 के मुकाबले ये संख्या तीन गुनी से ज़्यादा हो गई है। रिपोर्ट के मुताबिक जिन लोगों को शेयर बाजार में नुकसान हो रहा है वे ज़्यादा कारोबार कर रहे हैं। इसके अलावा 30 साल से कम उम्र के युवाओं की संख्या भी शेयर बाज़ार में तेज़ी से बढ़ रही है। शेयर बाज़ार का नियमन करने वाली संस्था सेबी ने यह रिपोर्ट हाल ही में जारी की। इसमें साल 2018-19, 2021-22 और 2022-23 के आंकड़ों का अध्ययन किया गया है। इसमें कोरोना काल भी शामिल है। इस रिपोर्ट के लिए देश के टॉप 10 ब्रोकरेज हाउस के ग्राहकों के आंकड़ों का उपयोग किया गया है। इन 10 ब्रोकरेज हाउस के पास देश के कुल शेयर बाज़ार ग्राहकों का लगभग 86 फीसदी हिस्सा है।

इस रिपोर्ट को कई जानकारों ने देखा और सुझाव दिए हैं। रिपोर्ट में बताया गया है कि हर तीन में से एक व्यक्ति शेयर बाज़ार में इंट्राडे ट्रेडिंग करता है। इसके अलावा, इस तरह के ट्रेड में 30 साल से कम उम्र के युवाओं की संख्या तेज़ी से बढ़ रही है। साल 2018-19 में ये संख्या 18 फीसदी थी, जो अब बढ़कर 48 फीसदी हो गई है। अगर कोई व्यक्ति बहुत ज़्यादा कारोबार करता है तो उसके नुकसान होने की संभावना और भी बढ़ जाती है। ऐसे लोगों में से 80 फीसदी लोग घाटे में रहे हैं। साल 2022-23 में नुकसान उठाने वाले लोगों ने अपने नुकसान का 57 फीसदी हिस्सा कारोबार के खर्चों में लगाया, जबकि मुनाफा कमाने वालों ने अपने मुनाफे का सिर्फ 19 फीसदी हिस्सा खर्च किया। इसके अलावा कम उम्र के लोगों में नुकसान उठाने वालों की संख्या ज़्यादा है।

रियलमी की 13 प्रो सीरीज 5जी जल्द होगी पेश

-कई खूबियों से भरपूर है यह स्मार्टफोन

नई दिल्ली ।

अपने 13 प्रो सीरीज 5जी के अपकमिंग लॉन्च के साथ, रियलमी एक्सीलेंस की गारंटी दे रहा है। ब्रांड का प्राइमरी फोकस सभी सेगमेंट में अपने प्रोडक्ट की क्वालिटी में सुधार करना है। 13 प्रो सीरीज 5जी के साथ, रियलमी का लक्ष्य न केवल प्रभावशाली जानकारी देना है, बल्कि क्वालिटी की नींव पर निर्मित प्रीमियम स्मार्टफोन एक्सपीरियंस प्रदान करना है, जो खास तौर से मिड-हाई सेगमेंट में कस्टमर्स की जरूरतों और डिमांड को पूरा करता है। बेहतर क्वालिटी वाले स्मार्टफोन और बेहतर एक्सपीरियंस प्रदान कर रियलमी का लक्ष्य मिड-हाई स्मार्टफोन मार्केट में अपनी स्थिति को मजबूत करना है। रियलमी एक ऐसे भविष्य की कल्पना करता है जहां बैटरी की परेशानी न हो, एक ऐसा भविष्य जो ज्यादा कैपेसिटी, स्मार्ट पावर मैनेजमेंट और ऐसी टेक्नोलॉजी से संचालित हो जो आपके लाइफ के साथ चलती रहे। यह केवल परफॉर्मेंस के बारे में नहीं है, यह मजबूती के बारे में है। रियलमी ऐसे डिवाइस बनाने का प्रयास करता है, जो टिकाऊ और पावरफुल हो, जो डेली लाइफ की परेशानियों को आसानी से हल कर सके। कल्पना कीजिए कि आप अचानक बारिश में फंस गए, आपका फ्यूचर रियलमी स्मार्टफोन, अपनी आईपी65 प्लस रेटिंग के साथ, बारिश को ऐसे झेल जाएगा जैसे कुछ भी नहीं हुआ हो। फ्यूचर रियलमी स्मार्टफोन पानी में गिरने के बाद भी पूरी तरह से काम करते रहेंगे। 13 प्रो सीरीज 5जी इस प्रतिबद्धता का प्रतीक है, जो यूजर्स के फोन गिरने और खरोंच की स्थिति में बचाव करते हुए प्रतिष्ठित एसजीएस फाइव-स्टार फॉल सर्टिफिकेशन का दावा करता है। रियलमी अपने सेल्स सर्विस को अगले लेवल पर ले जा रहा है। 13 प्रो सीरीज 5जी के साथ, रियलमी ने 30-दिन की रिप्लेसमेंट गारंटी पेश की है। रियलमी 13 प्रो सीरीज 5जी 30 जुलाई को लॉन्च होगा, जो ब्रांड की जर्नी में एक नया चैप्टर जोड़ेगा और मिड-हाई स्मार्टफोन मार्केट में क्वालिटी के लिए एक नया स्टैंडर्ड स्थापित करेगा। बता दें कि शुरू के दिनों में जब स्मार्टफोन आए थे तब उनकी टेक्नोलॉजी वैसी नहीं थी जो अब है। पहले ब्लर फोटो और सुस्त परफॉर्मेंस से लेकर कमजोर स्क्रीन और शॉर्ट बैटरी लाइफ आम बात होती थी, लेकिन अब ऐसा नहीं है।

सोना 500 रुपए बढ़कर 67,850, चांदी 81,400 रुपए

नई दिल्ली ।

सोने-चांदी के वायदा भाव में गुरुवार को बड़ी गिरावट के बाद शुक्रवार को सुधार देखने को मिल रहा है। शुक्रवार को दोनों के वायदा भाव तेजी के साथ खुले। सोने के वायदा भाव 67,850 रुपये के करीब, जबकि चांदी के वायदा भाव 81,400 रुपये के करीब कारोबार कर रहे थे। अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी सोने व चांदी के वायदा भाव में तेजी देखी जा रही है। सोने के वायदा भाव की शुरुआत आज तेजी के साथ हुई। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर सोने का बेंचमार्क अगस्त कॉन्ट्रेक्ट 528 रुपये की तेजी के साथ 67,990 रुपये के भाव पर खुला। इस समय यह 387 रुपये की तेजी के साथ 67,849 रुपये के भाव पर कारोबार कर रहा था। चांदी के वायदा भाव की शुरुआत आज तेज रही। एमसीएक्स पर चांदी का बेंचमार्क सितंबर कॉन्ट्रेक्ट 331 रुपये की तेजी के साथ 81,662 रुपये पर खुला। इस समय यह 69 रुपये की तेजी के साथ 81,400 रुपये के भाव पर कारोबार कर रहा था। वै श्विक बाजार में सोने-चांदी के वायदा भाव की शुरुआत तेजी के साथ हुई। कॉमेक्स पर सोना 2,363.80 डॉलर प्रति औंस के भाव पर खुला। पिछला बंद भाव 2,353.50 डॉलर प्रति औंस था। फिलहाल यह 18.80 डॉलर की तेजी के साथ 2,372.30 डॉलर प्रति औंस के भाव पर कारोबार कर रहा था। कॉमेक्स पर चांदी के वायदा भाव 27.99 डॉलर के भाव पर खुले, पिछला बंद भाव 27.97 था। फिलहाल यह 0.04 डॉलर की तेजी के साथ 28.01 डॉलर प्रति औंस के भाव पर कारोबार कर रहा था।

बजट के बाद कई राज्यों में पेट्रोल और डीजल की कीमत घटी

नई दिल्ली ।

केंद्र सरकार के तीसरे कार्यकाल के बजट पेश होने के बाद कई चीजों के दाम में बदलाव देखने को मिला है। वहीं बजट के बाद कई राज्यों में पेट्रोल-डीजल की कीमतों में बदलाव देखने को मिल रहा है। शुक्रवार को भी कई राज्यों में पेट्रोल-डीजल के दाम कम हुए हैं। हालांकि कीमतों में बदलाव आंशिक है। जानकारी के अनुसार उत्तर प्रदेश और बिहार में पेट्रोल-डीजल के दाम में कमी आई है तो दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और कोलकाता में आज पेट्रोल और डीजल के भाव में कोई बदलाव नहीं हुआ है। जबकि महाराष्ट्र में कीमतों में बढ़ोतरी देखने को मिली है। दिल्ली में पेट्रोल की कीमत 94.72 रुपये और डीजल की कीमत 87.62 रुपए प्रति लीटर, मुंबई में पेट्रोल की कीमत 103.44 रुपये और डीजल की कीमत 89.97 रुपए प्रति लीटर, कोलकाता में पेट्रोल की कीमत 104.95 रुपये और डीजल की कीमत 91.76 रुपए प्रति लीटर, चेन्नई में पेट्रोल की कीमत 100.75 रुपये और डीजल की कीमत 92.34 रुपए प्रति लीटर है। बिहार में पेट्रोल 3 पैसे घटकर 107.09 रुपए प्रति लीटर और डीजल 3 पैसे घटकर 93.81 रुपए प्रति लीटर मिल रहा है। यूपी में पेट्रोल 10 पैसे घटकर 94.39 रुपए प्रति लीटर और डीजल 11 पैसे घटकर 87.44 रुपए प्रति लीटर मिल रहा है। वहीं महाराष्ट्र में पेट्रोल-डीजल महंगा हो गया है। यहां पेट्रोल 1 रुपए 22 पैसे बढ़कर 105.09 रुपये प्रति लीटर और डीजल 1 रुपए 17 पैसे घटकर 91.59 रुपए प्रति लीटर मिल रहा है।

1855 करोड़ रुपये जुटाने आईपीओ ला रही ये दवा कंपनी

मुंबई ।

अनुबंध मैन्यूफैक्चरिंग के द्वारा दवा बनाने वाली देश की सबसे बड़ी कंपनी है एकम्स ड्रग्स एंड फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड। दिल्ली की कंपनी ने इनीशियल पब्लिक ऑफर (आईपीओ) के द्वारा प्राथमिक बाजार से 1855 करोड़ रुपये जुटाने की कवायद शुरू की है। इसके लिए बोली लगाने की प्रक्रिया आगामी 30 जुलाई को शुरू होगी। इसमें निवेशक आगामी एक अगस्त तक बोली लगा सकते है। कंपनी ने इसके लिए दो रुपये के शेयर का मूल्य दायरा 646 रुपये से 679 रुपये के बीच तय किया है। एकम्स ड्रग्स एंड फार्मास्यूटिकल्स के प्रोमोटर संजीव और संदीप जैन हैं। इस आईपीओ के द्वारा कंपनी 1866 करोड़ रुपये जुटाने वाली है। इसमें 680 करोड़ रुपये का फ्रेश इश्यू होगा जबकि इसके वर्तमान शेयरहोल्डर्स और प्रोमोटर्स ऑफर फोर सेल के जरिये 1.73 करोड़ शेयर बेच रहे है। यदि प्राइस बैंड के अपर प्राइस के हिसाब से गणना की जाए, तब ओएफएस के जरिये 1175 करोड़ रुपये जुटाये जाएंगे। ओएफएस में संजीव 15.12 लाख शेयर और संदीप जैन भी इतने ही शेयर बेच रहे है। वर्तमान में कंपनी का कुल मार्केट वैल्यू करीब 10,000 करोड़ रुपये है। कंपनी की दो सब्सिडियरी कंपनी है, जिनके नाम हैं मैक्सक्योर नेचुरावेदिक्स और प्योर एंड क्योर हेल्थकेयर। इस आईपीओ से जुटाई गई राशि का उपयोग इन कंपनियों के ऋण को चुकाने में होगा। बाजार नियामक सेबी के पास जमा रिवाइज्ड डॉक्यूमेंट्स के मुताबिक कंपनी ने इश्यू का 75 फीसदी हिस्सा के लिए आरक्षित किया है। इश्यू का 15 फीसदी हिस्सा और 10 फीसदी हिस्सा खुदरा निवेशकों के लिए आरक्षित है। इसमें 15 करोड़ रुपये के शेयर कर्मचारियों के लिए रिजर्व रखा गया है। उन्हें हर शेयर पर 64 रुपये का डिस्काउंट भी मिलेगा। इस आईपीओ में 22 शेयरों का लॉट तय किया गया है। मतलब कि निवेशकों को कम से कम 22 शेयरों के लिए बोली लगानी होगी। इससे ऊपर 22 शेयरों के गुणक में बोली लगाई जा सकती है। इसमें आवदेन करने वालों को अलॉटमेंट का बेसिस दो अगस्त को तय कर दिया जाएगा। इसके बाद असफल आवेदकों को रिफंड भी जारी कर दिया जाएगा। आगामी पांच अगस्त को शेयर अलॉटीज के डीमैट अकाउंट में क्रेडिट कर दिए जाएंगे। आगामी छह अगस्त को एकम्स ड्रग्स के शेयर बीएसई और एनएसई में लिस्ट करा दिए जाएंगे।

टेक महिंद्रा के शेयर छह प्रतिशत गिरे

नई दिल्ली । सूचना प्रौद्योगिकी सेवाप्रदाता टेक महिंद्रा के शेयर में शुक्रवार को लगभग छह प्रतिशत की गिरावट आई। कंपनी की अप्रैल-जून तिमाही की आय में 1.2 प्रतिशत की गिरावट के बाद उसके शेयर में गिरावट आई है। बीएसई पर शेयर 5.52 प्रतिशत गिरकर 1,445.50 रुपये पर आ गया। एनएसई पर यह 5.60 प्रतिशत की गिरावट के साथ 1,444.25 रुपये पर रहा। सेंसेक्स और निफ्टी में सूचीबद्ध कंपनियों में सबसे अधिक गिरावट कंपनी के शेयर में ही आई। टेक महिंद्रा ने शेयर बाजार को अप्रैल-जून तिमाही के इस वित्तीय नतीजे की सूचना दी थी। उसके अनुसार चालू वित्त वर्ष 2024-25 की पहली तिमाही में उसका मुनाफा 23 प्रतिशत बढ़कर 851 करोड़ रुपये पर पहुंच गया है। हालांकि, आलोच्य अवधि में कंपनी का राजस्व सालाना आधार पर 1.2 प्रतिशत घटकर 13,005 करोड़ रुपये रहा।

मारुति सुजुकी ने इगनिस का नया मॉडल लांच किया

नई दिल्ली । मारूति सुजुकी ने ऑल्टो से लेकर बलेनो तक कई हैचबैक कार को बाजार में उतारा है। इन हैचबैक कार के लाइनअप में इगे निस मॉडल भी शामिल है, जिसे कई लोग मारुति की यूरोपियन कार कहते हैं। इगे निस मॉडल को मारुति ने भारतीय बाजार में साल 2017 में लॉन्च किया था। पिछले कुछ सालों में इसकी सेल में गिरावट देखी गई। इसी गिरावट को रोकने के लिए अब मारुति ने इगे निस के नए रेडिएंस संस्करण को बाजार में लॉन्च किया है जो कि अपने रेगुलर मॉडल से लगभग 35 हजार रुपये सस्ता है। कार में मस्कुलर बोनट, प्रोजेक्टर हेडलैंप, रूफ रेल्स और सिल्वर स्किड प्लेट्स है, वहीं यह 15 इंच के स्पोर्टी डुअल टोन अलॉय व्हील्स के साथ आती है। वहीं कार में आपको एप्पल कारप्ले और एंड्रॉइड ऑटो के साथ 7 इंच का टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम, ऑटोमेटिक क्लाइमेट कंट्रोल, ड्राइवर सीट के हाइट एडजेस्टर के साथ और भी कई फीचर्स मिलते हैं। वहीं कार की सेफ्टी के लिए इसमें डुअल फ्रंट एयरबैग, रियर पार्किंग कैमरा, इलेक्ट्रॉनिक स्टेबिलिटी कंट्रोल, इलेक्ट्रॉनिक ब्रेकफोर्स डिस्ट्रीब्यूशन के साथ एंटी लॉक ब्रेकिंग सिस्टम और रियर पार्किंग सेंसर मिलता है। कंपनी का कहना है कि ये कार 20.89 किमी प्रति लीटर तक का माइलेज देने में सक्षम है।

डीएलएफ मुनाफा बढ़कर 645.61 करोड़ हुआ

मुंबई । चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में डीएलएफ का मुनाफा 23 प्रतिशत बढ़कर 645.61 करोड़ रुपये हो गया। एक साल पहले इसी तिमाही में उसका मुनाफा 527 करोड़ रुपये था। रियल एस्टेट क्षेत्र की प्रमुख कंपनी डीएलएफ की बिक्री बुकिंग चालू वित्त वर्ष 2024-25 की पहली तिमाही में तीन गुना होकर 6,404 करोड़ रुपये हो गई। लक्जरी आवास संपत्तियों की मजबूत मांग से यह वृद्धि दर्ज की गई। कंपनी ने पिछले वित्त वर्ष 2023-24 की पहली तिमाही में 2,040 करोड़ रुपये की संपत्ति बेची थी। डीएलएफ ने समूचे वित्त वर्ष 2024-25 के लिए 17,000 करोड़ रुपये की बिक्री बुकिंग हासिल करने का लक्ष्य रखा है। पिछले वित्त वर्ष 2023-24 में उसने करीब 15,000 करोड़ रुपये की बिक्री बुकिंग हासिल की थी। कंपनी की नवीनतम निवेशक प्रस्तुति के अनुसार, अप्रैल-जून तिमाही में कंपनी की बिक्री बुकिंग में वृद्धि की मुख्य वजह गुरुग्राम के सेक्टर 76/77 में स्थित लक्जरी परियोजना डीएलएफ प्रिवाना वेस्ट रही जिसमें 5,600 करोड़ रुपये की बिक्री हुई। डीएलएफ ने बताया कि चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में उसका मुनाफा 23 प्रतिशत बढ़कर 645.61 करोड़ रुपये हो गया। एक साल पहले इसी तिमाही में उसका मुनाफा 527 करोड़ रुपये था। अप्रैल-जून अवधि में कुल आय बढ़कर 1,729.82 करोड़ रुपये हो गई। पिछले वर्ष इसी अवधि में यह 1,521.71 करोड़ रुपये थी। डीएलएफ भारत का अग्रणी रियल एस्टेट डेवलपर है और इसका सात दशकों से अधिक का सफल रिकॉर्ड है।

शेयर बाजार तेजी के साथ बंद

सेंसेक्स 1,293 , निफ्टी 428 अंक ऊपर आया

मुम्बई (ईएमएस)। घरेलू शेयर बाजार शुक्रवार को तेजी के साथ बंद हुआ। सप्ताह के अंतिम कारोबारी दिन बाजार में ये उछाल दुनिया भर से मिले अच्छे संकेतों के साथ ही दिग्गज कंपनी रिलायंस इंडस्ट्रीज के शेयरों में आये उछाल से आया है। दिन भर के कारोबार के बाद 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 1,292.92 अंक करीब 1.62 फीसदी ऊपर आकर 81,332.72 पर बंद हुआ। वहीं 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 428.75 अंक तकरीबन 1.76 फीसदी बढ़कर 24,834.85 के शीर्ष स्तर पर बंद हुआ।

आज के कारोबार में सेंसेक्स के 29 शेयर लाभ पर बंद हुए। भारती एयरटेल, अदाणी पोर्ट्स, टाटा स्टील, जेएसडब्लयू स्टील और इंफोसिस सेंसेक्स के शेयर सबसे अधिक लाभ में रहे। भारती एयरटेल 4.51 फीसदी से ज्यादा की बढ़त के साथ सबसे अधिक लाभ में रही। इसके अलावा सन फार्मा, एचसीएल टेक, एमएंडएम, आईटीसी, टाटा मोटर्स, टाइटन, कोटक बैंक, अल्ट्राटेक सीमेंट, बजाज फाइनैंस, एसबीआई, इंडसइंड, एशियन पेंट्स, टीसीएस, पावर ग्रिड, एलएंडटी, मारुति, रिलायंस, एनटीपीसी, आईसीआईसीआई बैंक, बजाज फिनसर्व, टेक महिंद्रा, एक्सिस बैंक, एचयूएल और एचडीएसफसी बैंक के शेयर भी लाभ में रहे।

वहीं, दूसरी तरफ सेंसेक्स के 30 शेयरों में से केवल एक शेयर ही नुकसान पर बंद हुआ। ये शेयर नेस्ले इंडिया का था। इसमें 0.07 फीसदी की हल्की गिरावट रही।

वहीं दुनिया भर के बाजारों की बात करें तो एशियाई बाजारों में, सियोल, शंघाई और हांगकांग ऊपर आये जबकि टोक्यो में गिरावट रही। यूरोपीय बाजार भी ऊपर आया है। गत दिवस अमेरिकी बाजार में गिरावट रही।

विदेशी संस्थागत निवेशकों ने गत दिवस 2,605.49 करोड़ रुपये के शेयर बेचे।

वहीं गत दिवस बाजार गिरावट पर बंद हुआ था।

इससे पहले आज सुबह बाजार सकारात्मक रुख के साथ खुला और सेंसेक्स 119 अंक चढ़कर 80,158 पर जबकि निफ्टी-50 भी 17 अंक की बढ़त लेकर 24,423 अंक पर पहुंच गया। बीएसई सेंसेक्स की कंपनियों में टेक महिंद्रा 2 फीसदी से ज्यादा गिर गया। साथ ही इंडसइंड बैंक, मारुति और एलएंडटी के शेयर भी गिरावट में रहे जबकि भारती एयरटेल 2 फीसदी बढ़ गया।

शोभा लिमिटेड में पांच फीसदी हिस्सेदारी बेचेगी अनामुडी

नई दिल्ली । गोदरेज परिवार की कंपनी अनामुडी रियल एस्टेट्स बेंगलुरू स्थित शोभा लिमिटेड में अपनी पांच प्रतिशत हिस्सेदारी बेचने पर विचार कर रही है। इसकी मौजूदा बाजार कीमत करीब 1,000 करोड़ रुपये बताई जा रही है। शेयरधारिता के अनुसार अनामुडी रियल एस्टेट्स की शोभा लिमिटेड में 9.99 प्रतिशत हिस्सेदारी है। शोभा लिमिटेड का कुल बाजार पूंजीकरण करीब 20,000 करोड़ रुपये है। सूत्रों के अनुसार गोदरेज परिवार ने शोभा लिमिटेड में अनामुडी रियल एस्टेट्स की कुल हिस्सेदारी का आधा हिस्सा बेचने के लिए बैंकरों की नियुक्ति की है। शेयरों की बिक्री शुक्रवार को शेयर एक्सचेंज पर ब्लॉक समझौते के जरिए किए जाने की संभावना है।

सनस्टार का शेयर 15 प्रतिशत उछाल के साथ सूचीबद्ध

नई दिल्ली । पेड़-पौद्यों से विशेष उत्पाद बनाने वाली कंपनी सनस्टार लिमिटेड का शेयर निर्गम मूल्य 95 रुपये से करीब 15 प्रतिशत उछाल के साथ शुक्रवार को शेयर बाजार में सूचीबद्ध हुआ। बीएसई पर शेयर ने निर्गम मूल्य से 12 प्रतिशत की बढ़त के साथ 106.40 रुपये पर कारोबार शुरू किया। इसके बाद यह 33.15 प्रतिशत की बढ़त के साथ 126.50 रुपये पर पहुंच गया। एनएसई पर इसने 14.73 प्रतिशत की बढ़त के साथ 109 रुपये पर कारोबार शुरू किया। कंपनी को निर्गम के आखिरी दिन मंगलवार को 82.99 गुना अभिदान मिला था। इसके 510 करोड़ रुपये के आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) के लिए मूल्य दायरा 90 से 95 रुपये प्रति शेयर तय था।

अदाणी एनर्जी सॉल्यूशंस लिमिटेड का परिचालन राजस्व 47 प्रतिशत बढ़ा

अहमदाबाद ।

अदाणी एनर्जी सॉल्यूशंस लिमिटेड (एईएसएल) ने अप्रैल-जून तिमाही के वित्तीय नतीजे जारी किए। साल-दर-साल आधार पर कंपनी का परिचालन राजस्व 47 प्रतिशत बढ़कर 5,379 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। वहीं, कर भुगतान के बाद का लाभ 315 करोड़ रुपये रहा जो 73 प्रतिशत की जबरदस्त वृद्धि दर्शाता है।

अदाणी समूह की कंपनी ने बताया कि उसका ऑपरेशनल ईबीटीडीए 1,628 करोड़ रहा जो पिछले वित्त वर्ष की पहली तिमाही की तुलना में 29.7 प्रतिशत अधिक है। कंपनी 2050 तक नेट जीरो का लक्ष्य हासिल करने के लिए दहानू पावर प्लांट को अलग कर रही है। अदाणी एनर्जी सॉल्यूशंस के प्रबंध निदेशक अनिल सरदाना ने कहा, एईएमएल और एमयूएल के अपने वितरण क्षेत्रों में बिजली की मांग में तेज बढ़ोतरी के साथ एईएसएल की नई लाइनों की कमीशनिंग पर लगातार फोकस कर रहा है। मुंबई में नवीकरणीय ऊर्जा की पहुंच 37 प्रतिशत हो चुकी है।

कंपनी ने बताया कि राजस्व में तेज वृद्धि के कारकों में परिचालन में शामिल नई ट्रांसमिशन परिसंपत्तियों का योगदान, निर्माणाधीन परियोजनाओं में अतिरिक्त लाइनों को जोड़ना और मुंबई तथा मुंद्रा के वितरण कारोबार में बिजली की मांग बढ़ने से बेची गई यूनिटों में बढ़ोतरी और स्मार्ट मीटरिंग कारोबार से प्राप्त आय शामिल है।

कंपनी ने बताया कि मुंबई के वितरण कारोबार में बिजली की मांग आठ प्रतिशत बढ़ी। वहीं, डिस्ट्रीब्यूशन लॉस 5.18 प्रतिशत के निचले स्तर पर रहा और विश्वसनीय तथा सस्ती बिजली आपूर्ति के कारण नये उपभोक्ताओं के जुड़ने से उपभोक्ताओं की कुल संख्या 32 लाख पर पहुंच गई। ट्रांसमिशन सेगमेंट में हाल की तिमाहियों में कंपनी की पाइपलाइन में कई परियोजनाएं शामिल हुई हैं और ट्रांसमिशन परियोजनाओं के लिए उसका ऑर्डर बुक 17 हजार करोड़ रुपये पर पहुंच गया है। कंपनी ने बताया कि पूरे देश में बढ़ती ऊर्जा मांग के अनुरूप अदाणी इलेक्ट्रिसिटी मुंबई में बिजली की मांग (बेची गई इकाई) वित्त वर्ष 2024-25 की पहली तिमाही में साल-दर-साल आधार पर आठ प्रतिशत बढ़कर 296.2 करोड़ इकाई पर पहुंच गई।

टाटा पावर ने बैंक ऑफ इंडिया के साथ की साझेदारी

नई दिल्ली । टाटा पावर सोलर सिस्टम्स लिमिटेड (टीपीएसएसएल) ने छतों पर सौर पैनल लगाने और इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) चार्जिंग स्टेशनों की स्थापना के लिए बैंक ऑफ इंडिया (बीओआई) के साथ साझेदारी की है। टीपीएसएसएल की ओर से शुक्रवार को जारी बयान के अनुसार यह साझेदारी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, क्योंकि टाटा पावर सोलर सौर और ईवी चार्जिंग स्टेशन वित्तपोषण दोनों के लिए बीओआई के साथ सहयोग करने वाली पहली सौर कंपनी बन गई है। कंपनी ने इसके साथ ही हरित ऊर्जा समाधान प्रदाता के रूप में अपने नेतृत्व को मजबूत किया है। यह सहयोग छतों पर सौर पैनल स्थापित करने को बढ़ावा देने के लिए सरकार की पहल का समर्थन करता है।

मैनकाइंड फार्मा 13,630 करोड़ में भारत सीरम्स खरीदेगी

नई दिल्ली। मैनकाइंड फार्मा ने कहा कि वह लगभग 13,630 करोड़ रुपये में भारत सीरम्स एंड वैक्सीन्स का पूर्ण अधिग्रहण करेगी। मैनकाइंड फार्मा ने एक बयान में कहा कि कंपनी ने लगभग 13,630 करोड़ रुपये के उद्यम मूल्य पर भारत सीरम्स एंड वैक्सीन्स (बीएसवी) में 100 प्रतिशत हिस्सेदारी हासिल करने के लिए समझौता किया है। वह एडवेंट इंटरनेशनल से यह हिस्सेदारी हासिल करेगी। कंपनी ने कहा कि यह रणनीतिक कदम मैनकाइंड फार्मा को भारतीय महिला स्वास्थ्य और प्रजनन दवा बाजार में एक दिग्गज के रूप में स्थापित करने में सहायक होगा।

कारगिल दिवस पर बीआईटी में मिनी मैराथन कर आयोजन

रांची। कारगिल दिवस कर 25 बछर पूरा होवेक उपरे 3 झारखंड सीटीसी एनसीसी, मेसरा 26 जुलाई, 2024 के बीआईटी परिसर में मिनी मैराथन कर आयोजन करलक। 'आ डे इन दि नेम ऑफ ब्रेवहर्ट्स' नाव कर मिनी मैराथन 5 किलोमीटर कर रहे। कार्जकरम कर सुरुआत मुध गोतिया कमांडिंग ऑफिसर लेफ्टिनेंट कर्नल सी.एस. कपकोटी कर भासन से होलक। इकर में ऊ ऑपरेसन विजय कर दौरान द्रास घाटी में तैनात हमिन कर सैनिकमन कर बीरता, साहस आउर बलिदान के सम्मानित करते उनकर बारे में बात करलयं।

मैराथन कर सुरुआत बिहाने 6 बजे छात्र मामला कर डीन डॉ भास्कर कर्ण कर द्वारा हरा झंडी देखायेक से होलक। से बेरा हुवां मुध गोतिया कमांडिंग ऑफिसर लेफ्टिनेंट कर्नल चंचल सिंह कपकोटी, इलेक्ट्रॉनिक्स आउर संचार इंजीनियरिंग कर बिभागाध्यछ डॉ. संजय कुमार आउर एसोसिएट एनसीसी अधिकारी कैप्टन (डॉ.) किशोर कुमार सेनापति, भी उपस्थित रहयं। कार्जकरम में कैडेट, प्रोफेसर आउर आम नागरिक सउब सक्रिय रूप से भाग लेलयं। मैराथन कर बाद हर प्रतिभागी के एक गो भागीदारी मेडल देल गेलक।

मैराथन कर बाद पौधरोपन अभियान सुरू होलक। इकर में छात्रमन आउर करमचारीमन पौधा लगालयं। मातृभूमि के सम्मानित करते देसभक्ति कर गीत गालयं। कार्जकरम कर समापन एएनओ डॉ. के.के. सेनापति कर धन्यवाद गेयापन कर संगे होलक।

कारगिल विजय दिवस कर ईयाद में लगाल गेलक पउधा

रांची। संतोष कॉलेज ऑफ टीचर्स ट्रेनिंग एंड एजुकेशन के बी.एड. आउर डीएलएड इकाई आउर आरोग्य भारती कर संजुक्त परयास से कारगिल विजय दिवस उपरे पउधरोपन कार्जकरम कर आयोजन करल गेलक। ई अवसर में कॉलेज में प्रसिछु सिछकमन आंबा, पीपर, बरगद, रुद्राछ, अर्जुन, गुलमोहर संगे फलदार आउर छाया देवेक वाला गाछ लगालयं। ई कार्जकरम भारतीय सैनिकमन कर सूर बीरता के समर्पित रहे। पउधरोपन कार्जकरम में आरोग्य भारती कर प्रदेस सचिव डॉ देवेंद्र नाथ तिवारी आउर ग्रामीन अध्यछ हुवां आवल सिछक आउर सुरछा आउर उकर संवर्धन कर अनिल महतो उपस्थित रहयं। बिद्यार्थीमन लगाल पउधा कर सपथ लेलयं।

डीएवी नीरजा सहाय इस्कूल में कारगिल बिजय दिवस मनलक

रांची। कांके कर डीएवी नीरजा सहाय इस्कूल में कारगिल बिजय दिवस कर रजत जयंती 26 जुलाई के मनाल गेलक। कार्जकरम में मुध गोतिया आईटीबीपी कर डिप्टी कमांडेंट शैलेश कुमार आउर ऊकर सहयोगी उपस्थित रहयं। कार्जकरम कर सुरूआत समूह गान आउर सहीदमन के फूल अर्पित कइर के होलक। देसभक्ति से भरल एगो नाच भी परस्तुत करल गेलक। ई कार्जकरम से गोटे इस्कूल देसभक्ति कर भाव में होय गेलक।

कछा सात कर छातरामन आपन कविता में आउर कछा आठ कर समीछा से आपन भासन से कारगिल जुद्ध कर सहीदमन के ईयाद करलयं। डिप्टी कमांडेंट शैलेश कुमार छउवामन कर समरपन आउर मेहनइत से काम करेक सीख देलयं।

ऊ कहलयं कि जे पानी से नहात हयं से आपन कपड़ा बदलत हयं आउर से पसीना से नहाएक वाला इतिहास बदली। से ले मेंहनत करेक से पाछे नी रहेक चाही। इस्कूल कर प्रिंसिपल किरण यादव कहलयं कि ई बुद्ध कर भी देस हेके आउर जुद्ध कर भी। समय आवेक बेरा आपन देस कर जवान दुस्मन कर जवाब देवेक में पीछे नी रहयंना। नीरजा सहाय में 27 आउर 28 के दुई दिनक खेल कूद प्रतिजोगिता कर आयोजन करल जात हे। जेकर में 10 गो इस्कूल कर गोटेक 929 खिलाड़ीमन भाइग लेबयं। जेकर में 526 गो छोड़ा आउर 376 छोड़ीमन सामिल हयं। डीएवी कपिल देव, गांधीनगर, सेक्टर- 4 बोकारो, आनंद स्वामी, भंडारीडीह, तेनुघाट, चतरा, टंडवा, बचरा, नीरजा सहाय कर खेलाड़ी वॉलीबॉल, खो-खो, योगा, चेस, जूडो, कराटे, उसू इतेयादि खेल में भाग लेबयं।

सीबीसी रांची कर डोरंडा कॉलेज में दुई दिनक चित्र परदरसनी

- परदरसनी से युवामन में देसप्रेम कर भावना बिकसित होवी : डॉ अजीत कुमार सिन्हा
- गोटे परिवार कर संगे देखू परदरसनी : अखिल कुमार मिश्रा

रांची। कारगिल विजय दिवस कर रजत जयंती में केंद्रीय संचार ब्यूरो, प्रादेसिक कार्जालय रांची डोरंडा कॉलेज कर सभागार में सुकरवार के दुई दिनक चित्र परदरसनी कर सुभारंभ करल गेलक। कार्जकरम कर सुरुआत मुध गोतिया आउर आमंत्रित गोतियामन दीया जलाय के करलयं। इकर बाद सउब के साल, मोमेंटो, पौधा आउर प्रधानमंत्री कर मन की बात कर 100वां एपिसोड से संबंधित पुस्तक देल गेलक। इकर से पहिले सउब गोतियामन परदरसनी कर अवलोकन करलयं।

दुरलभ तस्बीरमन से सीख लेऊ : मुध गोतिया रांची विश्वविद्यालय कर कुलपति डॉ अजीत कुमार सिन्हा कहलयं कि ई किसिम कर परदरसनी कर आयोजन कर मकसद युवामन में देस प्रेम कर भावना बिकसित करेक हय। युवा कइल कर भविस हयं, जिनकर कंधा में देस कर जिम्मेदारी होवी। ऊ कहलयं कि बछर 2047 में भारत आजादी कर 100वां बछर में होवी। बिकसित रास्ट्र बइन चुइक होवी। युवामन के देस कर इतिहास, संस्कृति आउर परंपरा के जानेक कर जरूरत हय। ऊ सउब अदमीमन से परदरसनी में लागल दुरलभ तस्वीरमन से सीख लेवेक कर बात भी कहलयं।

गोटे परिवार कर संगे देखू परदरसनी : केंद्रीय संचार ब्यूरो एवं पत्र सूचना कार्यालय, रांची कर अपर महानिदेसक अखिल कुमार मिश्रा कहलयं कि कारगिल विजय दिवस कर रजत जयंती समारोह गोटे देस में मनाल जात हे। हियां लगाल गेल परदरसनी जानकारी से भरल हय। इकर में कारगिल जुद्ध कर महतपूर्न छन के तस्वीरमन कर माध्यम से देखाल जाय हे। ऊ आवल अदमीमन से गोटे परिवार कर संगे परदरसनी देखेक आवेक कर अपील करलयं।

आपन देस से पेयार करु : गोतिया कर रूप में आमंत्रित मुध वन संरक्षक सिद्धार्थ त्रिपाठी कहलयं कि कारगिल युद्ध कर सुरुआत में हे ऊ परसिछन पावेक ले देहरादून जाए रहयं। ऊ दुर्गम पहाड़ीमन में भारतीय सेना कर अदम्य सौर्य आउर साहस के ढेइरे नजीक से भी देइख हयं। ऊ कहलयं कि देस ले सउब से उंच बलिदान देवेक वाला कर सार्थकता तब सिद्ध होवी, जब हमिन आपन देस से पेयार करब।

देस कर तरक्की में जोगदान देउ : यूआईडीएआई कर छेतरीय निदेसक नीरज कुमार कहलयं कि देस कर सेवा कंहू भी रइह के करल जाय सकेला। आपन काम ईमानदारी से कइर के देस कर तरक्की में जोगदान देउ। ऊ आधार कर माध्यम से डिजिटल ससक्तिकरन के लेइ के करल जायेक वाला प्रयास कर भी जानकारी देलयं।

सम्मान बेक्त करेक कर अवसर : डोरंडा महाविद्यालय कर प्राचार्य प्रो. राजकुमार शर्मा कहलयं कि आइज कर दिन कारगिल कर सहीदमन के सरधानजलि देवेक आउर उनकर परिवारजनमन कर प्रति सम्मान बेक्त करेक कर पुनीत अवसर हय। स्वहित आउर लोकहित से सर्वोपरित रास्ट्रहित होवेला।

कर्तब्यमन के याइद करेक कर भी : संत जेवियर इस्कूल, डोरंडा कर प्रधानाचार्य फादर फूलदेव सोरेन कहलयं कि आइज कर दिन हमिन कर कर्तब्यमन के याइद करेक कर भी हय। हमिन एक दूसर कर सम्मान करब संगे हर केऊ कर मदइत करेक भी हमिन कर नैतिक दायित्व होवेक चाही। केंद्रीय संचार ब्यूरो, रांची कर कार्जालय परमुख शाहिद रहमान बिसय प्रवेस करुवालयं। कार्जकरम कर गतिबिधि कर संबंध में जानकारी देलयं। मंच संचालन छेतरीय परचार अधिकारी ओंकार नाथ पांडेय आउर धन्यवाद प्रो. मिथिलेश कुमार करलयं।

जवानमन साझा करलयं याइद : कार्जकरम में मेजर एम जयंथ संगे पहुंचलयं। सूबेदार शंकर कुमार कारगिल कर जंग कर बारे में आपन याइदमन के साझा करते कहलयं कि दुसमन कर आक्रमन कर बाद स्थानीय नागरिकमन जवानमन कर ढेइरे मदइत करलयं। दुरगम इलाका होवेक कर बावजूद अदमीमन ऊ मन खाना-पानी लेइ के आवत रहयं। सूबेदार शंकर कुमार सउब युवामन से देसप्रेम आउर सेवा भावना राखेक कर बात कहलयं।

आधार आउर इंडिया पोस्ट कर स्टॉल : परदरसनी अस्थल कर नजीक में आधार छेतरीय कार्जालय कर द्वारा आधार अपडेसन स्टॉल भी लगाल जाय रहे। हियां अदमी आधार में पता, नंबर आदि अपडेट कराय सकयंना। दूसर दन इंडिया पोस्ट कर द्वारा दुर्लभ डाक टिकटमन से संबंधित मिनी परदरसनी लगाल जाए हे।

बिद्यार्थीमन के पुरस्कृत करल जाई : गीत आउर नाटक प्रभाग कर कलाकारमन कर द्वारा स्वागत गीत कर प्रस्तुति देवेक कर संगे-संगे पारंपरिक तौर में उनकर अभिनंदन भी करल गेलक। आयोजन कर समन्वय में केंद्रीय संचार ब्यूरो रांची कर शफीक आलम, खुर्शीद आलम, ह्रषिकेश पात्रा, ओमप्रकाश राय, हरि उरांव, श्रीमती जीएन मिंज, श्रीकांत मोदी, आकाश कुमार, सुश्री रेखा कुमारी महतपूर्न भूमिका निभालयं। ई चित्र परदरसनी 27 जुलाई तक चली। ई मौका में डोरंडा कॉलेज कर सउब सिछक, सिछेकेत्तर कर्मचारी भी मौजूद रहयं। परदरसनी कर समापन में बिभिन्न प्रतिजोगितामन में सामिल होवल ब्बिद्यार्थीमन के पुरस्कृत करल जाई।

मछरी पालन कर 30 गो छातरमन के मिललक तीन दिनक परसिछन

- मछरी विज्ञान कॉलेज में तीन दिन कर होलक परसिछन कार्जकरम

गुमला। बिरसा कृषि विश्वविद्यालय अधीन संचालित मात्स्यिकी विज्ञान कॉलेज में 'जलकृषि और आहार प्रबंधन' बिसय उपरे 23 से 25 जुलाई तक परसिछन आयोजित करल गेलक। ई परसिछन राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड-प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना कर सहजोग से आयोजित होलक। जेकर में परमवीर अलबर्ट एक्का मेमोरियल कॉलेज, चैनपुर से 30 गो बिद्यार्थीमन भाग लेलयं। परसिछन कर दउरान बिद्यार्थीमन के मछरी पालेक आउर ई छेतर में रोजगार कर अवसर से सम्बंधित महतपूर्न जानकारी देवल गेलक। बिद्यार्थीमन के मछरी पालेक ले बिभिन्न किसिम, समन्वित मछरी पालन, जलकृसि में आहार कर महत, अस्थानीय अस्तर में उपलब्ध सामग्रीमन कर इस्तेमाल कइर फार्म में आहार बनायेक तरीका, मछरीमन कर खाना देवेक बिधि, पिंजरा में मछरी पालन में आहार प्रबंधन संगे बिभिन्न किसिम कर आहार पद्धति कर बारे में बिसतार से बताल गेलक। ऊ मनके मछरी पालन में आवेक वाला बिसम परिस्थिति आउर ऊकर बचाव कर उपाय, एक्वरियम निरमान आउर उकर रख-रखाव कर संगे सरकार से मिलेक वाला बिभिन सुबिधा आउर जोजनामन कर जानकारी देलयं। परसिछन कर समापन में कॉलेज कर सह-अधिष्ठाता डाक्टर एके सिंह परसिछनार्थीमन के मछरी पालन कर बेवसाय में आवेक ले प्रोत्साहित करलयं। परसिछनार्थीमन के परमान पतर भी देवल गेलक। परसिछन कर सफलता में कॉलेज कर सहायक प्राध्यापक डॉ. श्वेता कुमारी, डॉ. गुलशन कुमार, डॉ. मनमोहन कुमार, डॉ. रोहितास यादव, डॉ. ओम प्रवेश कुमार रवि, डॉ. तसोक लेया, डॉ. के.एस. विसडम सहित श्रीमती रेशमी सिंह, संजय नाथ पाठक कर बिसेस जोगदान रहे।

बाल श्रम आउर यौन सोसन अपराध : राजेश कुमार सिंह

- डालसा सभागार में पारा लिगल वोलंटियर ले कार्जसाला कर आयोजन

सोनू सपवार, रांची

बाल श्रम, यौन सोसन उपरे डालसा सभागार में जिला अस्तरीय जागरुकता कार्जसाला कर आयोजन 26 जुलाई के करल गेलक। इकर में पारा लिगल वोलंटियर सामिल होलयं। झालसा कर निरदेस आउर न्यायायुक्त-सह-अध्यछ कर मार्गदरसन में जिला विधिक सेवा प्राधिकार, रांची बाल विवाह मुक्त भारत अभियान कर तहत ई कार्जकरम करलक। इकर में सिन्दुआर टोला ग्रामोदय विकास विद्यालय आउर कैलाश सत्यार्थी चिल्ड्रेन फाउंडेशन कर एनजीओ कर सहजोग मिललक। ई अवसर में अतिरिक्त प्रधान न्यायाधीश (कुटुम्ब न्यायालय-2) राजेश कुमार सिंह, डालसा सचिव कमलेश बेहरा, एल.ए.डी.सी.एस. प्रमुख प्रवीण कुमार श्रीवास्तव, एल.ए.डी.सी.एस. डिप्टीस राजेश कुमार सिन्हा, सी.डब्ल्यू.सी. मेम्बर विनय कुमार, प्रियरंजन, एल.पी.ओ. डी.सी.पी.यू. दुर्गा शंकर साहू, बचपन बचाओ आंदोलन कर ब्रजेश कुमार मिश्रा, एस.जी.वी.वी. कर सचिव राजेन कुमार, जिला समन्वयक अरविंद कुमार, डालसा कर काम करेक वाला सउब पीएलवी उपस्थित रहयं। मुध गोतिया अतिरिक्त प्रधान न्यायाधीस राजेश कुमार सिंह कहलयं कि ई कार्जसाला छउवामन से संबंधित कानून कर बारे में आपने सउब के जागरूक करेक ले हय, ताकि आपने कस्बा, गांव, सुदुरवर्ती छेतर में जाय के अदमीमन के जागरूक कइर सकब। छउवामन कर अधिकारमन कर बारे में बताय पारब।

छउवामन से संबंधित पोक्सो एक्ट-2012 कर बारे में एलएडीसी अधिवक्ता राजेश कुमार सिन्हा बिस्तार से बतालयं। ऊ कानूनी प्रवधानमन कर बारे में आउर पोक्सो एक्ट में कड़ा से कड़ा सजा कर प्रावधान करल जाय हे। बहुते जल्दी कार्रवाई कर बेवस्था हय, इकर जानकारी देलयं। पीड़ित छउवामन से संबंधित केऊ भी पहचान अखबार में प्रकासन नई करेक हय। एलएडीसी अधिवक्ता कहलयं कि पोक्सो एक्ट कर तहत 18 बछर से कम उमर कर छउवामन कर संगे अगर केऊ किसिम कर दुस्कर्म , छेड़छाड़ इया उनके ई किसिम कर काम में धकेलल जाएला, तो एक्ट में कड़ा प्रावधान हय। इकर तहत उमर कैद, आजीवन कारावास कर सजा अभियुक्त के देल जाय सकेला। सीडब्ल्यूसी कर सदस्य विनय कुमार बाल बिहा कर बिरूद्ध बिस्तार से जानकारी देलयं। कहलयं कि नवा कानून में सजा कर कड़ा प्रावधान हय। दुर्गा शंकर साहू छउवामन से संबंधित वात्सल्य मिसन कर बिस्तार से जानकारी देलयं। स्पॉरन्सकरशिप एवं फॉस्टर केयर कर बारे में बतालयं। बचपन बचाओ आंदोलन कर राइज समन्वयक ब्रजेश कुमार मिश्रा बाल तस्करी से संबंधित तस्कर ले सजा आउर जुर्माना कर बारे में उपस्थित पीएलवी के बतालयं। राजेन कुमार कहलयं कि ई कार्जसाला कर आयोजन कर मुध उद्देस संस्था आउर सरकारी तंत्र आउर पारा लिगल वोलंटियर कर संगे समन्वय स्थापित कइर के छउवामन के संरछित आउर सुरछित करेक कर काम करल जायेक हय। इकर में आपने सउब अदमीमन कर सहजोग कर जरुरत हय।

एस.जी.वी.वी कर अरविंद कुमार कहलयं कि बाल श्रम भी कानूनन अपराध हेके, जेकर तहत 14 बछर से नीचे छउवामन से केऊ भी किसिम कर परतिस्तान में काम नी लेवल जाए सकेला। 14 बछर से उपरे छउवामन से खतरनाक परतिस्तान में काम नई कराल जाए सकेला। इकर ले नवा कनून में भी सजा कर प्रावधान करल जाय हे। डालसा सचिव कमलेश बेहरा सउब पीएलवी के कस्बा, गांवमन आउर सुदुरवर्ती परखंड छेतरमन में जाय के गंवईयामन के जागरूक करेक ले कहलयं, ताकि गांव कर अदमी जागरूक होय के बुराई से लइड़ सकयं। परतिस्तान के सुरछित करल जाय सके। परतिस्तान से संबंधित घटना होवी तो उकर में अभियुक्त के सजा देवाल जाए सके।

मुद्रक व प्रकाशक **नीलम सिंह** द्वारा झारखंड वनिता उद्योग एसएचजी के लिए श्याम नगर, गांधी नगर सीसीएल कॉलोनी डीएवी गांधी नगर स्कूल के पीछे, थाना गोंदा, जिला-रांची, राज्य झारखंड-834008 से प्रकाशित एवं शिवा साईं पब्लिकेश प्राइवेट लिमिटेड रातू, काठीटांड़ टेंडर बगीचा के नजदीक, एचपी पेट्रोल पंप, पोस्ट व थाना रातू, रांची, झारखंड-835222 में स्थित प्रिंटिंग प्रेस में मुद्रित। आरएनआई पंजीयन संख्या. **JHABIL/2023/86791**, **संपादक** : नीलम सिंह, **प्रबंध संपादक** : कृशन गोपालका, **सलाहकार संपादक** : रतन लाल अग्रवाल। **फोन नंबर** : 8210640230, 9934166306, **ईमेल आइडी** : jharkhandwanitaudyog@gmail.com